@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

March 2018

Vol.35, Issue 9 Price Rs 35 | Annual Subscription Rs 420

Rotary

केरल को हरा बनाना

नीली चमक

गहरे नीले रंग के आसमान के समान, यह इंडियन रोलर या नीलकंठ, जिसे अपने चमकीले नीले रंग के कारण इस नाम से जाना जाता है, कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में एक पेड़ के सूखे ठूंठे पर बैठा हुआ था। हालाँकि कान्हा का यह जंगल बाघों के लिए प्रसिद्द है, फिर भी पक्षी प्रेमियों के लिए, इस व्यापक जंगल में पक्षियों की कई प्रजातियाँ मौजूद है। तो जब भी आप बड़ी बिल्ली की तलाश में यहाँ जाएं, अपने साथ अपनी दूरबीन अवश्य ले जाएं। मैंने इस नीलकंठ को विश्राम की अवस्था में पाया; शायद वह नीचे खुले घास के मैदान में अपने भोजन - कीड़े, छोटे रेंगने वाले जंतु, झींगुर, आदि - के दिख जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। कान्हा में आसानी से पाए जाने वाले पक्षियों में से यह एक है। इसका आकर छोटा होता है, जिनमें युवा पक्षी की लम्बाई 25-35 सें मी की होती है और वज़न मात्र 70 से 100 ग्राम होता है।

जहाँ इसका सिर और पूँछ नीली होती है, वहीं इसका सीना रंगीन ना होकर भूरे रंग का होता है। इस पक्षी का सिर बड़ा होता है और गर्दन छोटी होती है, लेकिन इसकी वास्तविक सुन्दरता इसके बैठे रहने के वक्त नहीं बल्कि इसके उड़ान भरने के समय प्रदर्शित होती है। और तब इसके चमकीले नीले पंख ध्यान आकर्षित करते है और किसी भी पक्षी प्रेमी को आनंद से भर देते है।

पाठ और चित्र परवेज़ भगत द्वारा

विषयसूची

12 हरे-भरे केरला को और अधिक हरा बनाना

मंडल 3211 की परियोजना REAP के बारे में पढ़ें, जिसके चलते रोटेरियन स्वस्थ और पारंपरिक किस्म के चावल को उगा रहे हैं।

22 तीन महिलाएं एक असीम साहसिक अभियान पर

मीनाक्षी अरविंद, मूकाम्बिका रथिनम और प्रिया राजपाल साक्षरता को प्रचारित करने की उनकी 24 देशों में की गयी कार यात्रा बयान करती हैं।

32 ब्लैकबोर्ड से डिजिटल बोर्ड तक

केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने पुणे में रोटरी की ई-शिक्षा मिशन का उद्घाटन किया।

28 दो पूर्व रो ई अध्यक्ष ने आगामी गवर्नरों को मन्त्रमुग्ध किया

सेन डिएगो में अंतर्राष्ट्रीय विधानसभा में पूर्व रो ई अध्यक्षों जॉन जर्मेन और के आर रवींद्रन ने डीजीई गण को उतेजित किया।

39 जहाँ रोटरी एक पसंदीदे साझेदार से अधिक है

टाटा टेक्नोलॉजीज के कॉरपोरेट प्रमुख अनुभव कपूर, महाराष्ट्र में ई-लर्निंग प्रदान करने के लिए रोटरी के साथ अपनी साझेदारी का वर्णन करते हैं।

42 एक मदद हाथ

मंडल 3141, सेंट ज्यूड के साथ कैंसर के रोगियों को बेहतर देखभाल प्रदान करने के लिए भागीदारी करते हैं।

73 21वीं सदी के युवा क्या चाहते है...

स्विट्ज़रलैंड में विश्व आर्थिक मंच पर रो ई के महासचिव जॉन ह्यूको का संबोधन।

76 बच्चों के लिए कार्निवल का समय

रोटा टैलेंट प्रतिभा कार्यक्रम के माध्यम से रोटरी क्लब मद्रास टी नगर, मंडल 3232, स्कूली बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखलाने का मौका प्रधान करता हैं।

60 जंगल के अनुभव के लिए कॉर्पोरेट जॉब की अदला-बदली

हर्षिता और आदित्य शकल्या, उनके बेटे केज़न के साथ, एक अपरंपरागत जंगल जीवन का आनंद लें रहे हैं।

कवर पर : मंडल 3211 की परियोजना केरल में प्राकृतिक खेती के माध्यम से चावल उगती हैं।

चित्र: रशीदा भगत

शानदार फरवरी अंक! (बक्सा)

मुझमें *रोटरी न्यूज़* की कागज़ी प्रति प्राप्त करने तक का धैर्य नहीं है और इसलिए मैंने ऑनलाइन मैगज़ीन देख ली। हर बार की तरह ही विस्तृत लेखों, सम्पादकीय और रोई अध्यक्ष और रोई निदेशक के संदेशों के साथ फरवरी अंक भी शानदार था। पत्रिका के नियमित अध्ययन से रोटरी के लिए हमारे दृष्टिकोण में व्यापकता आई है और सामान्य प्रकृति के लेख भी रोचक है। हर अंक में अद्भुत विषय वस्तु के लिए सम्पादकीय दल को बधाइयाँ।

आर श्रीनिवासन, रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन - मंडल 3000

रोटरी बैंगलोर इंदिरानगर की तरफ से शुभकामनाएं और एक अन्य शानदार अंक के लिए बधाइयाँ। *भारतीय क्रिकेट के फैशन गुरु और आईडिया वाले बाबा* कवर स्टोरी के लिए एक वीडियो लिंक इस रोचक लेख को अधिक उत्कृष्ट बना देता।

गोपीनाथ एन, रोटरी क्लब बैंगलोर इंदिरानगर - मंडल 3190

संख्या एवं गुणवत्ता से भरपूर विषयों को प्रकाशित करने के लिए *रोटरी न्यूज़* को बधाईयाँ। सभी लेख और रिपोर्ट आकर्षक और प्रेरणात्मक है।

मैं पीडीजी किशोर केडिया, मंडल 3030 और रोटरी क्लब अमरावती मिडटाउन को उनकी मोबाइल मैमोग्राफी परियोजना के लिए बधाई देता हूँ।

एन सरत चंद्र मेनन, कोल्लम

इस अंक का प्रत्येक पन्ना इतना रंग-बिरंगा है कि यह सभी मामलों में एक उत्कृष्ट कृति बन गई है। विक्रम सथाये के साथ भारतीय क्रिकेट के दो दिग्गजों, फैशन गुरु युवराज सिंह और 'आईडिया वाले बाबा' ज़हीर खान की जोशीली एवं दिल खोलकर हुई बातचीत प्रेरणात्मक थी। *संपादक का सन्देश,* जिसपर आपने एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के अंदर छुपे उस ज़ख्म और दर्द, साहस और ख़ामोश पीड़ा पर रोशनी डाली, आंखें खोल देने वाला है। आपने हमें माह की सभी घटनाओं से रूबरू करवाया, मगर आई ए के रंगों ने दिल जीत लिया। इतने शानदार अंक को प्रकाशित करने के लिए संपादक और उसकी टीम को बधाइयाँ।

कर्नल गोपीनाथन
रोटरी क्लब वाडाकंचेरी- मंडल 3201

लेख *सतत नेतृत्व सुनिश्चित करें* में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव है, और रोई निदेशक जॉन मैथ्यूज़ कहते है कि ''दूसरों की सेवा के दौरान, वास्तव में आप उन्नत एवं बेहतर होते है।'' वह कहते है कि हमें आईपीडीजी, डीजी, डीजीई और डीजीएन के मध्य निरंतरता को सुनिश्चित करना चाहिए, और क्लब-स्तर पर भी इसी निरंतरता की आवश्यकता है क्योंकि नेतृत्व में बदलाव के कारण बहुत सी परियोजनाएं गड़बड़ा जाती है। समाज को लम्बे समय तक प्रभावित करने वाली महत्वपूर्ण परियोजनाओं के लिए वरिष्ठ नेताओं वाली स्थायी क्लब समितियों का गठन किया जाना चाहिए। हमारे क्लब में हम किसी वरिष्ठ सदस्य के जानकारीपूर्ण सन्देश के साथ सभी बैठकों की शुरुआत करते है।

वी के बंसल
रोटरी क्लब दिल्ली अपटाउन - मंडल 3012

हम्पी की कीर्ति

हम्पी के ऊपर लेख में, लेखक ने बताया है कि 15वीं सदी में वैटिकन के बाद यह दुनिया का दूसरा सबसे संपन्न नगर था। खैर, वो कौन पश्चिमी इतिहासकार थे जिन्होंने उस काल में हम्पी और वैटिकन दोनों जगहों का दौरा करके यह निष्कर्ष निकाला? अगर कोई उस समय के दुनिया के सबसे संपन्न क्षेत्रों पर रिसर्च करें, तो यह भी पता चल सकता है कि उस समय विजयनगर वैटिकन से भी अधिक संपन्न था।

डॉ के प्रसन्ना (गैर रोटेरियन)

पॉल नेटज़ेल पर शानदार लेख

लेख *पैसा कभी मेरी प्राथमिकता नहीं* (फ़रवरी अंक) उत्कृष्ट था। एक महान लोकोपकारी के जीवन की कहानी को जानना हमेशा अच्छा होता है। पॉल नेटज़ेल और उनकी प्यारी पत्नी अद्भुत लोग है।

शरली डाउनी, रोटरी ई-क्लब ऑफ़ सदर्न अफ्रीका - मंडल 9400

रोटरी न्यूज की संग्राही

मुझे पिछले 20 वर्षों से *रोटरी न्यूज़* को इकठ्ठा करने का चस्का है। मैं हमेशा आपकी सम्पादकीय पढ़ता हूँ और उन्हें बेहद पसंद करता हूँ।

प्रमिला राव
रोटरी क्लब पुत्तूर ईस्ट - मंडल 3181

उचित गद्दा मायने रखता है

गद्दों की गुणवत्ता पर लेख ने इस अनछुए विषय पर नए परिदृश्य प्रस्तुत किये और हमारी भलाई एवं अगली सुबह ताजगी के साथ जागने के लिए उचित गद्दों और पलंग का चुनाव करने की महत्ता पर प्रकाश डाला। मैं ऐसे ही अन्य मूल्यवान, वैज्ञानिक और शिक्षाप्रद लेखों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

अशोक जिंदल
रोटरी क्लब नाभा ग्रेटर - मंडल 3090

गद्दों पर लेख बहुत ही रोचक था। भारत में स्प्रिंग के मुलायम गद्दे सोने के लिए अच्छे है लेकिन प्राकृतिक लेटेक्स के गद्दे ज्यादा पसंद किये जाते है क्योंकि लोग केवल सोने के लिए ही नहीं, अपितु काम करने, पढ़ने, टीवी देखने यहाँ तक की खाना खाने के लिए भी उनका इस्तेमाल करते है! साथ ही, प्राकृतिक लेटेक्स शरीर को सर्वोत्तम सहारा प्रदान करता है। बड़े होटलों में स्प्रिंग वाले मुलायम गद्दे

पसंद किये जाते है लेकिन भारतीय उष्णकटिबंधीय जलवायु में फोम के गद्दे उचित नहीं है।

जनवरी अंक में इसकी सम्पादकीय, जो कहती है समस्याओं का हल आपके अंदर ही है और चार-मार्ग परीक्षण केवल दीवार पर टांगने के लिए नहीं है, से शुरू करते हुए सभी लेख अद्भुत है। जहाँ रोई निदेशक सी भास्कर कहते है ''दूसरों को आपके बारे में अच्छा बोलने दें,'' और एक शिकायत रहित रोटरी चाहते है, वहीं प्रमुख लेख टीम वर्क पर ज़ोर देता है। रोटरी समारोहों से तड़क-भड़क और दिखावा, भव्य भोजन और महंगे उपहारों को निकाल दूर करने पर ऊषा साबू की टिप्पणी विचारणीय है। और अंत में, पीआरआईपी राजा साबू के सुविचारित नेतृत्व पर दस सन्देश... इन सभी चीज़ों ने इस अंक को संग्रहित करने योग्य बना दिया है।

पियूष दोषी
रोटरी क्लब बेलूर - मंडल 3291

एक सच्चा नगीना

रोटरी में तड़क-भड़क एवं दिखावे को कम करने के उषा साबू के विचार का मैं स्वागत करता हूँ, क्योंकि इससे गलत सन्देश जाता है और इसकी छवि खराब होती है। वह कहती है कि केवल उन्हें सम्मानित करें जो असाधारण सेवा देते है, और जमा देने वाले हिमालय में तैनात जवानों को दिवाली की मिठाइयों भेजें। अगर मैं इस महिला को नगीना कहूं और 'उन्हें सलाम' करूँ तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी।

जी वी सयागावी, रोटरी क्ल्ब दावनगेरे
विद्यानगर - मंडल 3160

टीआरएफ ट्रस्टियों को नियुक्त करने के पॉल नेटज़ेल के तरीके के बजाय, भारतीय रोटेरियन पीआरआईपी कल्याण बैनर्जी के विचारों से सहमत होंगे। KL इंस्टिट्यूट का सफल संचालन पीडीजी आर. थीनाचंद्रण की एक नई उपलब्धि थी। माला भास्कर ''साझेदारों के जोश एवं प्रतिबद्धता से प्रसन्न थी।'' हमारे ज़ोन में 1.25 मिलियन सदस्यों को हासिल करने के आरआईडी के स्वप्न और वर्ष 2025 तक टीआरएफ के लिए 50 मिलियन डॉलर इकठ्ठा करने के लक्ष्य का भारतीय रोटेरियनों द्वारा समपर्ण के साथ पीछा किया जायेगा। उषा साबू द्वारा सियाचिन में हमारे जवानों को दिवाली की मिठाइयाँ भेजना सराहनीय है। उन्हें रमज़ान और क्रिसमस पर भी ऐसा करना चाहिए। रोटरी नेतृत्व पर राजा साबू के 10 सन्देश मूल्यवान टिप्स प्रदान करते है।

रोटरी क्लब कानपुर से अमृतसर तक की एन्स और एनेट्स की यात्रा को पढ़कर आनंदित हूँ।

एस मुनियांडी
रोटरी क्लब डिंडीगुल फोर्ट - मंडल 3000

दिसंबर अंक आकर्षक एवं अर्थपूर्ण था। छोटे क्लबों में जाकर उनकी परियोजनाओं/कार्यक्रमों जैसे कि छोटा अगरतला का क्लब 800 प्रतिनिधियों के साथ एक अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार की मेजबानी कर रहा है पर रोशनी डालने के संपादक के निर्णय का स्वागत है। यह स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरण के क्षेत्रों में कार्य करने हेतु छोटे क्लबों को प्रेरित करेगा।

जहाँ फाउंडेशन ट्रस्टी प्रमुख पॉल नेटज़ेल PPP मॉडल में सुस्पष्ट साझेदारियों की योजना बनाते है, वहीं पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी एक्सचेंज कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के माता-पिता को कहते है कि उनको मिलने वाले अनोखे अनुभव की तुलना में स्कूल का एक साल खोना ठीक है।

पीसी सांघी, रोटरी क्लब जयपुर
बापू नगर - मंडल 3054

निराशाजनक

जनवरी अंक में, कई पन्ने कुआलालंपुर में रोई अधिकारीयों, पीडीजी, इत्यादि की विभिन्न पोशाकों एवं मिज़ाज की तस्वीरों के लिए समर्पित थे। हर महीने सेवा परियोजनाओं को छापने के बजाय 7-8 पन्ने रोटरी में ''तड़क-भड़क'' को छापने के लिए इस्तेमाल किये जाते है। पिछले दो वर्षों में मेरे क्लब की अच्छी, अभिनव परियोजनाओं की सूचना देने के बावजूद भी, इस विशिष्ट पत्रिका में एक भी कार्यक्रम नहीं छापा गया। यदि तड़क-भड़क को कम किया जाएं, तो अधिक क्लबों की सेवा गतिविधियों को समायोजित किया जा सकेगा। मैं समझता हूँ कि अंतिम निर्णय आपका है, लेकिन कई बार यह बेहद निराशाजनक होता है।

डॉक्टर बिंदु शिरसाठ
रोटरी क्लब अहमदनगर
प्रियदर्शनी - मंडल 3132

दिसंबर अंक उत्कृष्ट है और शिक्षाप्रद लेखों से भरा हुआ है। *टैगोर के नकशे कदम* में की कवर तस्वीर सुन्दर है। आपके *गवर्नरों से मिलें* कॉलम उपयोगी है; सदस्यता के प्रति डीजी रवि चौधरी का रवैया आँखें खोल देने वाला है। एक बार फिर, हर महीने समय पर इस रंगबिरंगी पत्रिका को भेजने एवं संपादन के लिए संपादक को बधाइयां।

एन धनपाला पणिक्कर
रोटरी क्लब कुंदारा सेंट्रल - मंडल 3211

रोटारेक्ट न्यूज़

रोटारेक्ट न्यूज़ लाने के लिए मैं आपको और आपकी टीम को बधाई देता हूँ। अक्सर, हम इन भावी रोटेरियनों द्वारा की जा रही अनोखी परियोजनाओं पर ध्यान नहीं देते है। अच्छी तरह से प्रशिक्षित करने पर वे भविष्य में रोटरी में अद्भुत चीज़ें हासिल कर सकते है।

सुभाशीष चटर्जी
3240 मंडल वेबमास्टर

KL इंस्टिट्यूट का एक व्यापक एवं बढ़िया कवरेज। मुझे लगा कि मैं KL कार्यक्रम में मौजूद हूँ।

वी जी देओधर
रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

भाषणों के बजाय गैर-रोटेरियनों के साथ बातचीत का सन्देश जैसा कि लेख दार्शनिक सिंचाव के साथ सीधी बात (जनवरी अंक) में दो *गुरुओं द्वारा दिया गया* अच्छा था। स्वामी सुखबोधानंद का सन्देश उपयुक्त एवं अत्यंत ही प्रेरणात्मक था।

नेतृत्व पर साबू के 10 संदेशों ने मुझे रोटरी के बारे में नया परिज्ञान एवं जानकारी दी।

दिनेशचंद मेहता
रोटरी क्लब पाली - मंडल 3054

अपने विचार संपादक को भेजें: rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com **पर ई-मेल करें।**

Governors Council

RI Dist 2981	DG	P S Ramesh Babu
RI Dist 2982	DG	Dharmesh R Patel
RI Dist 3000	DG	P Gopalakrishnan
RI Dist 3011	DG	Ravi Choudhary
RI Dist 3012	DG	Sattish Singhal
RI Dist 3020	DG	G V Rama Rao
RI Dist 3030	DG	Dr K Sunder Rajan
RI Dist 3040	DG	Dr Zamin Hussain
RI Dist 3053	DG	Rajkumar Bhutoria
RI Dist 3054	DG	Maullin Manubhai Patel
RI Dist 3060	DG	Ruchir Anirudh Jani
RI Dist 3070	DG	Parvinder Jit Singh
RI Dist 3080	DG	T K Ruby
RI Dist 3090	DG	Bagh Singh Pannu
RI Dist 3110	DG	Vinay Kumar Asthana
RI Dist 3120	DG	Ranjeet Singh
RI Dist 3131	DG	Abhay Gadgil
RI Dist 3132	DG	Vyankatesh Vithal Channa
RI Dist 3141	DG	Prafull J Sharma
RI Dist 3142	DG	B M Sivarraj
RI Dist 3150	DG	J Abraham
RI Dist 3160	DG	Madhu Prasad Kuruvadi
RI Dist 3170	DG	Anand G Kulkarni
RI Dist 3181	DG	M M Chengappa
RI Dist 3182	DG	G N Prakash
RI Dist 3190	DG	Asha Prasanna Kumar
RI Dist 3201	DG	Vinod Krishnan Kutty
RI Dist 3202	DG	Sivashankaran P M
RI Dist 3211	DG	Suresh Mathew
RI Dist 3212	DG	Chinnadurai Abdullah
RI Dist 3231	DG	Jawarilal Jain K
RI Dist 3232	DG	R Srinivasan
RI Dist 3240	DG	Sunil Saraf
RI Dist 3250	DG	Vivek Kumar
RI Dist 3261	DG	Harjit Singh Hura
RI Dist 3262	DG	Ajay Agarwal
RI Dist 3291	DG	Brojo Gopal Kundu

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3141
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3232
PRID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RID	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2017–18)

DG B M Sivarraj — RI Dist 3142
Chair – Governors Council

DG R Srinivasan — RI Dist 3232
Secretary – Governors Council

DG Abhay Gadgil — RI Dist 3131
Secretary – Executive Committee

DG Vivek Kumar — RI Dist 3250
Treasurer – Executive Committee

DG P Gopalakrishnan — RI Dist 3000
Member – Advisory Committee

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust (RNT) or Rotary International (RI). No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

ज़बरदस्त घोटालों ने फिर
ईमानदारी पर ध्यान केंद्रित किया

हाल ही में हुए बड़े घोटालों की बाढ़ से, हमारी बैंकिंग प्रणाली के विरुद्ध, वो भी कई हज़ार करोड़ रुपये की - पंजाब नेशनल बैंक के खिलाफ, हीरे जवाहारात के व्यापारी नीरव मोदी के कुल मिला कर रु 11,400 करोड़ के कथित गबन और रोटोमैक पेन के विक्रम कोठारी के 8,500 करोड़ रुपये के एक अन्य घोटाले से - देश अवाक रह गया हैं।

और आम आदमी, मेरे ख्याल से, जिस श्रेणी में ज़्यादातर रोटेरियन्स आते हैं, पूरी तरह से आश्चर्यचकित नहीं पर स्तब्ध ज़रूर हैं। अभी तक, भारत में हम, विस्मय और तिरस्कार के साथ रु 9,000 करोड़ का हवाला देते थे, जिस रकम से तथाकथित किंग ऑफ़ गुड टाइम्स, विजय मालया ने बैंकों से धोखाधड़ी की और देश छोड़ कर भाग गया। लेकिन फिर आया 2018, हाँ, निश्चय ही हमने प्रगति की है, हमारे धोखेबाजों के, दस हज़ार करोड़ के निशान को पार करने के साथ ही!

जाहिर है, सोशल मीडिया ने भी इसका तमाशा बना रखा है ... क्या करें, जब आप इतने हैरान हो जाते हैं कि ना तो रो सकते है, ना ही हंस सकते हैं, तो लगता है कि यही ठीक होगा। ''नीमो को ढूंढने'' से लेकर ''Gujjus looting Sardars (PNB)'' तक के ट्वीट प्रचलन में हैं। लेकिन जिस तरह से, हमारे धूर्त व्यापारी और उद्योगपती, नए नए तरीके इज़ाद कर,सिस्टम को धोखा देते हैं, हमारे नियामकों को ठगते है और छूट भी जाते हैं, ये समझ से परे है। राजनैतिक रसूखदार, सत्ता में चाहे किसी की भी सरकार हो, बड़े व्यापारी और उद्योगपतियों की मिलीभगत से, बैंकर, वो जो मुझे और आपको मामूली से ऋण के लिये चक्कर लगवाते हैं, उनके स्वागत में लाल कालीन बिछा देते हैं। जब जब भी ऐसे घोटाले का भंडाफोड़ होता है, तो एक दूसरे पर दोषारोपण और राजनैतिक कीचड उछालने के बाद, उसका बोझा, हम असहाय करदाता की झोली में डाल देते हैं, जो हर घोटाले के बाद और भारी होता जाता है .

जालसाजी में उजागर होने के बाद, देश और भोली भाली जनता के सामने झूठ और फरेब से रची जो साजिश सामने आती है, वो किसी भी हॉलीवुड या बॉलीवुड के लेखक को शर्मिन्दा करने के लिए काफी है। लेकिन इन में कई तरह की बेईमानी, भ्रष्टाचार और अपनी तिकड़म लगा कर बड़ी आसानी से सरकारी बैंकों को लूट कर उनके एनपीए को ऐसी ऊंचाइयों पर पहुंचा देते हैं जिसे देख कर ही चक्कर आ जायें, भले ही सरकार हमारे टैक्स से इकट्ठे किये गए रुपये से इन बैंकों की भरपाई कर देती है पर यह उस महत्वपूर्ण संदेश से जुड़ा हुआ है जो रोटरी की विचारधारा में अंतर्निहित है और वो है शुचिता, सच्चाई, सत्यनिष्ठा। एक बार फिर, कुआलालंपुर संस्थान में रो इ अध्यक्ष इयान राय्स्ली के दृढ़ता से कहे गए शब्द याद आ गए: *फ़ोर वे टेस्ट* (चार कसौटी जांच), सिर्फ दीवार पर टांगने के लिए नहीं है।''

बिलकुल सही। क्योंकि रोटरी के सदस्य होने के नाते आप केवल अपने व्यवसाय या पेशे में ही नहीं बल्कि निजी ज़िंदगी में भी, ईमानदार और सम्मानीय व्यक्ति हैं। इस तरह के ज़बरदस्त घोटालों का इस्तेमाल हम में से प्रत्येक को, रुक कर विचार करने, हमारी दिनचर्या में जीवन मूल्यों, और कार्यस्थल पर अपने आचरण के आकलन के लिए किया जाना चाहिए। भारत में रोटरी के वरिष्ठतम नेता, पूर्व रो इ के अध्यक्ष राजेंद्र साबू विभिन्न मंचों से बार बार कहते रहे हैं, जब आप अपनी रोटरी पिन पहनते हैं, तो अपने रोज़मर्रा के व्यवहार, बातचीत के बारे में बेहद सतर्क रहें। विशेष रूप से ध्यान रखें कि आप सार्वजनिक रूप से कैसे पेश आते हैं। *वनक्कम चेन्नई* इंस्टीट्यूट में, उन्होंने एक रोटरीयन के बेहद तकलीफ़देह किस्से का ज़िक्र किया था, जिसने पांच सितारा होटल में अपने कमरे की बालकनी से सजावटी फूलदान में पान की पीक थूक दी थी! उन्होंने कहा था, ''मैं एक रोटरीयन से यह उम्मीद नहीं कर सकता।''

खैर, हालांकि यह आचरण अशिष्ट और घृणास्पद है, पर इससे भी बुरा है, निष्ठा की कमी और भरोसे को तोड़ना। अध्यक्ष राय्सली और निर्वाचित अध्यक्ष बेरी रेसीन ने अंतरराष्ट्रीय असेम्बली में हमें याद दिलाया की रोटरी की सार्वजनिक छवि ''आप से और हम से'' बनती हैं। तो चलिए हाल ही में, घोटालों के खुलासे से हमें आत्मनिरीक्षण करने में मदद मिलनी चाहिए और हम यह सुनिश्चित करें कि हम वो बनें जिसकी रोटरी हमसे अपेक्षा रखती है - उत्कृष्ट मान्यताओं के साथ बेहतर इंसान।

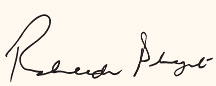

रशीदा भगत

अध्यक्ष
की ज़बानी

रोटारेक्ट
रोटरी का भविष्य

प्रिय साथी रोटेरियन,

यह महीना वर्ष 1968 में स्थापित किए गए रोटारक्ट क्लब के 50 वर्ष होने का माह है। इस विशेष रोटारेक्ट अंक में, आप दुनियाभर के कुछ प्रभावशाली रोटारेक्ट से मिलेंगे और कुछ अविश्वसनीय विधियों के बारे में सीखेंगे जिनका उपयोग कर वे *एक परिवर्तन ला रहे हैं।*

रोटारेक्ट के शुरू होने के बाद से आधी-सदी में, दुनिया में बहुत परिवर्तन हुआ है, और युवा लोगों ने उन परिवर्तनों जैसे प्रौद्योगिकी और सूचना अर्थव्यवस्था के उदय, शिक्षा के प्रसार, और इंटरनेट के जबर्दस्त प्रभाव के सबसे व्यापक प्रभाव को महसूस किया है। जब रोटारेक्ट की स्थापना की गई थी, तो यह किशोर या लगभग 20-वर्ष की आयु के लोगों के लिए उद्यमी या सीईओ बनना लगभग असंभव रहा होगा आज, युवा लोगों के पास लक्ष्यों को प्राप्त करने की अभूतपूर्व क्षमता होती है - और रोटरी को उनके विचारों और उत्साह की इतनी अधिक जरूरत है, जैसा पहले कभी नहीं थी।

अनेक वर्षों तक, रोटरी ने रोटरी सदस्यता के लिए अपने युवाओं और युवा वयस्क कार्यक्रमों को केवल पहले के रूप में देखकर, और अपने ही अधिकार में मूल्यवान और उत्पादक कार्यक्रमों के रूप में नहीं देख कर अपना ही नुकसान किया है। लेकिन रोटारेक्टर वास्तव में रोटरी के सेवा कार्यों में भागीदार हैं।

आज, करीब एक लाख रोटारेक्टर लगभग 10,000 क्लबों में काम करते हैं, लगभग सभी देश में जहां रोटरी क्लब मौजूद हैं। उन्हें उपलब्ध संसाधनों की तुलना में उनकी सेवा का प्रभाव विशेष रूप से प्रभावशाली है। रोटारेक्ट को रोटरी क्लब की तुलना में बहुत कम धन प्राप्त होता है, इसके बावजूद उन्होंने अद्भुत कार्य किया हैं उनकी ऊर्जा और सोच हमारे रोटरी परिवार और हमारे समुदायों के लिए अद्भुत परिणामों का सृजन करती हैं, और हम उसे बहुत अधिक महत्त्व देते हैं।

इतना होने के बावजूद, केवल 27 प्रतिशत रोटरी क्लब ही एक रोटारेक्ट क्लब को प्रायोजित करते हैं, जो कि समय के साथ काफी स्थिर रहा है। और बहुत ही कम रोटारेक्टर्स अंततः रोटरी की सदस्यता प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते हैं। जैसा कि हम रोटारक्ट के साथ इस वर्षगांठ का जश्न मनाने की तैयारी कर रहे हैं, मैं सभी रोटरी क्लबों को एक रोटारेक्ट क्लब को प्रायोजित करने पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं या उन क्लबों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित करता हूं जिन्हें वे प्रायोजित करते हैं। नियमित रूप से संयुक्त बैठकों का आयोजन करें, संयुक्त सेवा प्रोजेक्ट संचालित करें, और रोटारेक्टर्स तक पहुंचें - न केवल पूछने के लिए कि आप सहायता कर सकते हैं, बल्कि यह जानने के लिए कि आप एक साथ कैसे काम कर सकते हैं। अपने रोटारेक्ट क्लब और उनके सदस्यों को जानिए - और सुनिश्चित करें कि प्रत्येक रोटारेक्ट जानते है कि रोटरी क्लब उनके स्वागत के लिए इंतजार कर रहा है।

आधी सदी तक, रोटारेक्ट ने युवाओं को अपने समुदायों के साथ समान संबंध ढूंढने का एक तरीका दिया है, और सेवा में समान महत्त्व भी दिया है, जो रोटेरियनों को रोटरी में प्राप्त होता हैं। रोटारेक्ट हमारे रोटरी को हमारे भविष्य से जोड़ रहे हैं, जबकि हमें वर्तमान समय के अनुकूल रोटरी का निर्माण करने में मदद करते हैं।

इयन एच एस राय्सली
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक

का संदेश

शुद्ध जल एवं स्वच्छता

प्रिय रोटेरियन,

मानव विकास एवं उनके कल्याण के लिए स्वच्छ और साफ पीने योग्य पानी तक स्वतंत्र पहुँच अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह स्वास्थ्य, सफाई एवं स्वच्छता को बढ़ावा देने, और गरीबी को कम करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। दूषित जल दस्त, हैजा, पेचिश, टाइफ़ाइड और पोलियो जैसी बीमारियाँ फैलाता है। दूषित पेय जल (www.who.int/entity/water_sanitation_health/water-quality/guidelines/en/index.html) के कारण दस्त होने से हर वर्ष आधे मिलियन से भी अधिक लोगों की मौत होने का अनुमान है। हम पहले ही पोलियो के खिलाफ जंग छेड़ चुके है और मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि यह बीमारी कुछ देशों को छोड़कर दुनिया भर से खत्म हो चुकी है। लेकिन अगर हमने दूषित जल को नियंत्रित नहीं किया तो पोलियो फिर से लौट सकता है। WHO, सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं पानी की गुणवत्ता के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्राधिकार, जल से प्रसारित होने वाले रोगों को रोकने हेतु किये जा रहे वैश्विक प्रयास का नेतृत्व कर रहा है। वह ऐसा सरकारों के मध्य स्वास्थ्य आधारित नियमों को बढ़ावा देकर और जल आपूर्तिकर्ताओं, समुदायों एवं परिवारों के लिए प्रभावकारी जोखिम प्रबंधन अभ्यासों को लागू करके कर रहा है।

मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है कि WHO-UNICEF (2010) की रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में सरकार द्वारा अधिक से अधिक शौचालयों के निर्माण करने हेतु अत्यंत प्रयास करने और स्वच्छता उपायों को प्रोत्साहित करने के बावजूद भी भारत में खुले में शौच करने की दर सबसे अधिक है। खुले में शौच का अर्थ है स्वच्छता का ना होना। यह पर्यावरण को दूषित करता है, पानी की गुणवत्ता को ख़राब करता है और बीमारियाँ फैलाता है। परिवार के कल्याण के लिए साफ पेय जल और अच्छी स्वच्छता तक पहुँच होना अति आवश्यक है। इससे शिशु-केन्द्रित बिमारियाँ नियंत्रित होती है और बच्चे के स्वास्थ्य में वृद्धि होती है। एक स्वस्थ बच्चे में सीखने एवं स्मरण करने की शक्ति बेहतर होती है। सर्वेक्षणों से प्रदर्शित होता है कि लड़कियाँ उचित स्वच्छता सुविधाओं से वंचित स्कूल में जाना पसंद नहीं करती।

परिवार की साक्षरता में स्वच्छता का सकारात्मक योगदान होता है। UNICEF के अध्ययन के अनुसार, महिला साक्षरता में प्रत्येक 10 प्रतिशत की वृद्धि एक देश की अर्थव्यवस्था को 0.3 प्रतिशत से बढ़ा सकती है। इसलिए, स्वच्छता समाज के सामाजिक और आर्थिक विकास में योगदान देती है। अच्छी स्वच्छता आदतों को अमल में लाये बिना, केवल साफ पेय जल और सफाई संक्रमण को नहीं रोक सकते। हाथ धोने की सरल सी आदत बीमारियों को रोकने में बहुत सफल होती है। स्वच्छता की अनुपस्थिति में संचित जल भी संक्रमण का स्रोत हो सकता है।

रोटरी का WinS कार्यक्रम शुद्ध जल और स्वछता के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देता है। हमारे देश के प्रत्येक सरकारी स्कूल को अच्छी सफाई, प्रभावी स्वच्छता एवं सुरक्षित पानी की सुविधाओं को सुनिश्चित करना चाहिए।

जब पानी बेहतर एवं अधिक सुगम्य स्रोत से आता है, तो लोग उसे प्राप्त करने में कम समय एवं मेहनत खर्च करते है, जिसका मतलब यह है कि वे अन्य कार्यों में उपयोगी हो सकते है। पानी को एकत्रित करने के लिए की जाने वाली लंबी, जोखिम भरी यात्राओं की आवश्यकताओं को कम करके यह व्यक्तिगत सुरक्षा को भी बेहतर बना सकता है। बेहतर पानी के स्रोतों का मतलब है स्वास्थ्य पर कम खर्च, क्योंकि लोगों के बीमार होने की संभावना एवं चिकित्सीय लागत दोनों कम होंगी, और वे आर्थिक रूप से उत्पादक बने रह सकते है।

विशेषरूप से जल-संबंधित बीमारियों के खतरे में रहने वाले बच्चों के लिए, पानी के उन्नत स्रोतों तक सरल पहुँच बेहतर स्वास्थ्य का कारण बन सकती है, जिससे की स्कूल उपस्थिति बेहतर होने के साथ-साथ सकारात्मक दीर्घकालिक लाभ भी हो सकते है।

चलिए हम हमारे WinS कार्यक्रम को समर्थन देने के लिए हाथ बढ़ाये और शुद्ध पेयजल एवं स्वच्छता प्रदान करके अपने देश के बच्चों के लिए एक स्वस्थ भविष्य सुनिश्चित करें। यह प्रदर्शित करेगा कि *रोटरी: परिवर्तन ला रही है।*

सी भास्कर

निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी

अध्यक्ष का संदेश

रोटरी सपोर्ट सेंटर में आपका का स्वागत हैं।

रोटेरियनों से मिलने के लिए मेरी संपूर्ण विश्व की यात्रा के दौरान मुझसे दो प्रश्न जो अक्सर पूछा जाता हैं उसमें रोटरी के वेबसाइट और हमारे फाउंडेशन के अनुदान से संबंधित प्रश्न शामिल हैं। इसकी बहुत अधिक संभावना है कि आपके मन में भी दाताओं के योगदान, अंकों के स्थानांतरण, क्लबों और मंडल की रिपोर्ट, क्लब के इनवॉइस, और क्लब के अधिकारीयों के बदलाव आदि से संबंधित और इसी तरह के अन्य प्रश्न उठ रहे होंगे। यदि आपको पता नहीं हैं कि इन प्रश्नों का उत्तर कहां से प्राप्त किया जाएं, तो शुरू करने के लिए रोटरी का सपोर्ट सेंटर एक आदर्श स्थान है।

रोटरी सपोर्ट सेंटर, अंग्रेजी, फ्रेंच और स्पैनिश में सवालों के उत्तर देने में रोटेरियन, दाताओं, कर्मचारियों और अन्य लोगों के लिए आसानी से सुलभ प्रथम संपर्क बिंदु है। प्रत्येक कार्य दिवस को कार्य का समय सुबह 8 बजे से लेकर शाम 5 बजे तक केंद्रीय समय, सोमवार से शुक्रवार तक हैं। आप टोल-फ्री 1-866-976-8279 (1-866-9-Rotary) के माध्यम से सहायता केंद्र से संपर्क कर सकते हैं। *rotarysupportcenter@rotary.org* को ईमेल भेज कर पूछने पर एक कार्यदिवस के भीतर जवाब दिया जाएगा।

सहायता केंद्र प्रति माह औसतन 3,500 कॉल प्राप्त करता है। इसमें लगभग 1,500 कॉल करने वाले एक विशिष्ट व्यक्ति या रोटरी विभाग को निर्देश देने के लिए कॉल करना चाहते हैं, जिससे हमारे जटिल संगठन के भीतर आसानी से पहुंच प्राप्त हो सके। औसतन, प्रत्येक महीने 7,000 ईमेल का उत्तर दिया जाता हैं।

मात्र आठ वर्षों से कार्यरत्त, रोटरी सपोर्ट सेंटर को कॉन्टेक्ट सेंटर बेंचमार्किंग जगत के नेता बेंचमार्क पोर्टल द्वारा उत्कृष्ट केंद्र के रूप में प्रमाणित किया गया है। सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस ग्राहक सेवा और समर्थन उद्योग में सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक है। इस उत्कृष्ट प्रमाण पत्र के लिए एक केंद्र को कुशल और प्रभावी दोनों होना चाहिए और सेवा उद्योग में अन्य केंद्रों की तुलना में कम लागत के साथ बेहतर गुणवत्ता वाले सेवा प्रदान करने में सक्षम होना चाहिए।

रोटरी सपोर्ट सेंटर टीम में रोटरी मुख्यालय की यात्रा करने वालों के लिए टूर और बडे.समूह मीटिंग के लिए एक विजटिर सर्विसेज और टूर प्रोग्राम समन्वयक भी शामिल हैं। रोटरी में आगंतुकों की एक संख्या प्रति वर्ष शामिल होती है। क्या आप शिकागो क्षेत्र की यात्रा की योजना बना रहे हैं? आप *visitors@rotary.org* पर एक ईमेल भेजकर एक यात्रा के लिए अनुरोध कर सकते हैं। शायद हमारा रास्ता एक रोटरी सेंटर में मिलेगी!

मुझे विश्वास है कि आप संतुष्ट ग्राहकों से केंद्र को प्राप्त 96 प्रतिशत गुणवत्ता स्कोर से सहमत होंगे।

पॉल ए नेटज़ेल
फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

अभी भी कोई प्रश्न है? मैं उसे सुनना चाहता हूँ। मुझे *paul.netzel@rotary.org* पर ईमेल करें।

Häcker

kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR	MANGALURU
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000	7899119955

E-mail: info@hacker-kitchens.com
Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

PEOPLE OF ACTION

हरे-भरे केरला को और अधिक हरा बनाना

रशीदा भगत

दाएं से : गोवर्धन कृषि अभ्यास के एक तकनीकी विशेषज्ञ, डीजी सुरेश मैथ्यू, रोटरी क्लब तिरुवल्ला के अध्यक्ष मैथ्यू के जैकब, REAP चेयर बीजुमोन कुरियन, ए जी संतोष जॉर्ज और अनिल एस उल्लातिल।

रोई मंडल 3211 की पथ-प्रवर्तक REAP परियोजना के बारे में पढ़े, जहाँ रोटेरियन ना केवल पारंपरिक किस्म के गुणकारी चावल की पैदावार में शामिल है, बल्कि जहाँ क्लब की बैठकें, जो अक्सर हरे-भरे धान के खेतों में होती है, प्रकृति के सौन्दर्य और उपहार का उत्सव बनती है।

हम में से उन लोगों के लिए जो स्वच्छ और हरे-भरे केरला के बड़े प्रशंसक है और इस स्वच्छ और हरे-भरे राज्य में छुट्टियाँ बिताने के पहले मौके को हथियाना चाहते है, उनको यह जानकार ताज्जुब होगा कि रोई मंडल 3211 के डीजी सुरेश मैथ्यू ने पहले से ही हरे-भरे केरला को और हरा-भरा बनाने की पहल की है।

संक्षिप्त में जिसका नाम है REAP (रोटरी एम्पावरमेंट ऑफ़ एग्रीकल्चरल प्रोडक्शन), इस परियोजना के अनेक उद्देश्य है, जिसमें से प्राथमिक उद्देश्य है बिना रासायनिक खाद और कीटनाशक का उपयोग किये प्राकृतिक और जैविक खेती द्वारा पारंपरिक किस्म के केरला चावल को उत्पन्न करना। मैथ्यू द्वारा डीजी के पदभार सँभालने से पूर्व सुनियोजित, और 1 जुलाई से प्रारंभ, REAP का राज्य की बंजर भूमि, जो सालों से रासायनिक कीटनाशकों के प्रयोग के कारण बर्बाद हो गई, में जैव पोषक तत्वों के माध्यम से प्राण फूंकने और गुणकारी फ़सल - मुख्यतः धान - को उगाने का महत्वाकांक्षी उद्देश्य है।

मंडल 3211 के क्लबों के उत्साहपूर्ण रूप से इस परियोजना में शामिल होने के कारण, पिछले सात महीनों में 250 एकड़ से भी अधिक बंजर धान के खेतों में फिर से जान डाल दी गई है, और जैविक रूप से पैदा हुए चावल की कटाई की जा चुकी है, और 250 मैट्रिक टन से भी अधिक चावल पहले ही काटा जा चुका है। इस पट्टे की भूमि का 60 प्रतिशत हिस्सा धान की खेती के; और बाकि हिस्सा केले,

1966 में, केरला में लगभग **आठ** लाख हेक्टेयर भूमि धान की खेती के अंतर्गत थी, लेकिन यह अब सिकुड़कर मात्र **दो** लाख हेक्टेयर रह गई है।

पीडीजी के पी रामचंद्रन

डीजी सुरेश मैथ्यू, REAP चेयर बीजुमोन कुरियन और ए जी संतोष जॉर्ज।

कसावा और सब्जियों की खेती के अंतर्गत है।

''जो चावल हम उगाते है वह स्वास्थ्यवर्धक और स्वादिष्ट है, और यह रोटेरियनों के मध्य अत्यंत लोकप्रिय हो गया है,'' मैथ्यू मुस्कुराते है।

उत्पत्ति

कृषि संबंधी आंकड़े बताते है कि विदेश में रोजगार के बेहतर अवसर होने के कारण, पिछले कुछ वर्षों में, हजारों केरलवासी विदेश चले गए, खासतौर पर खाड़ी देशों में, और जो कृषि भूमि अनेक परिवारों द्वारा धान की खेती के लिए उपयोग की जाती थी वह त्याग दी गई। साथ ही, रासायनिक उर्वरकों के लगातार इस्तेमाल ने मिट्टी के पोषक तत्वों को नष्ट कर दिया और फिर धान की पैदावार में ज्यादा आकर्षण नहीं बचा। इसके साथ ही खाड़ी देशों में चले जाने के कारण हुई मजदूरों की कमी से कृषि को एक बड़ा झटका लगा।

''परिणामस्वरूप केरला के लोग आंध्र प्रदेश एवं अन्य राज्यों से आयातित चावल, जो अधिकतर रसायन और कीटनाशकों से पीड़ित होता है, पर निर्भर हो गए। डीजी मैथ्यू ने कर्क रोग विज्ञानी एवं अन्य स्वास्थ्य विशेषज्ञों से जाना कि यह केरला में कैंसर की घटनाओं में वृद्धि करने वाले अनेक कारणों में से एक है,'' जैविक रूप से उत्पन्न अनाज के निर्यातक और REAP के अध्यक्ष, बिजुमन कुरियन कहते है।

इस परियोजना के एक अन्य शिल्पकार और इसके मुख्य सलाहकार, पीडीजी के. पी. रामचंद्रन, जो इस योजना को कार्यान्वित करने में मैथ्यू और कुरियन की सहायता करते है, दूसरा चौंका देने वाले आंकड़ा प्रस्तुत करते है। वह कहते है कि 1966 में, केरला में लगभग आठ लाख हेक्टेयर भूमि धान की खेती के अंतर्गत थी, ''लेकिन यह अब सिकुड़कर मात्र दो लाख हेक्टेयर रह गई है। लगभग छह लाख हेक्टेयर रबड़ के वृक्षारोपण एवं अन्य गतिविधियों में चली गई और उस भूमि का एक बड़ा हिस्सा बेकार पड़ा है।'' उनके अनुमान के अनुसार, परिणाम यह है कि केरला के लोगों द्वारा खाया जाने वाला 85

लाटरी से रोटरी तक

डीजी सुरेश मैथ्यू ने बताया कि REAP परियोजना का प्राथमिक उद्देश्य बंजर एवं रसायनों से पीड़ित भूमि को सूक्ष्म पोषक तत्वों एवं जैविक खाद द्वारा समृद्ध, उपजाऊ भूमि में परिवर्तित करना है, परन्तु उसका उद्देश्य रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करना भी है।

किसी व्यक्ति के लिए, जैसे की अधिकांश जगहो पर होता है, केरला में भी, अधिकतर लोग रोटरी से धनवान एवं पाँच सितारा होटलों में पार्टी करने वाले सदस्यों के एक संभ्रांत संगठन के कारण जुड़ते है। ''हमारे द्वारा किये जाने वाले बहुत सी गंभीर कल्याणकारी परियोजनाओं पर लोगों द्वारा ध्यान नहीं दिया जाता है। वास्तव में केरला में बहुत से लोग सोचते एवं मानते है कि रोटरी लॉटरी है!''

पिछले दिन एक क्लब दौरे के दौरान स्वयं गवर्नर को इसका अनुभव हुआ। ''यहाँ, सरकार 'करुण्य लॉटरी' की मलिक है, और वह हकदार लोगों को सर्जरी का पैसा देती है। कल, एक क्लब दौरे के दौरान एक विजेता एक अनुशंसा पत्र के लिए क्लब आई क्योंकि एक सरकारी अधिकारी ने उससे राज्य लॉटरी विभाग से ऐसा पत्र लाने के लिए कहा था और उसने सोचा कि उसका मतलब रोटरी क्लब होता है,'' डीजी मैथ्यू हँसते है।

स्पष्ट रूप से कहे तो रोटरी एक सेवा संगठन है जो समुदाय के लिए महान पहलों को करता है, प्रत्येक बुवाई एवं कटाई की घटना को संबंधित क्लब द्वारा एक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। ''इन कार्यक्रमों में ना केवल रोटेरियन और उनके परिवार, बल्कि स्थानीय ग्रामीण, किसान और खेतिहर मजदूर और पंचायत के प्रतिनिधि भी सम्मिलित होते है। और हम आग्रह करते है कि ऐसे कार्यक्रमों के लिए धान के खेतों में जाने के दौरान, रोटेरियनों को ट्राउज़र पहनने के बजाय एक शर्ट और वेष्टी पहनना चाहिए, ताकि हम स्थानीय समुदाय के साथ घुल-मिल सकें,'' वह आगे कहते है।

प्रतिशत चावल बाहर से आता है, मुख्यतः आंध्र से और ''उसमें बहुत सारा रसायन मौजूद होता है। कुरियन जैव खेती में विशेषज्ञ है और इसलिए डीजी मैथ्यू ने उन्हें इस परियोजन की अध्यक्षता के लिए चुना,'' वह कहते है।

तो जब REAP की योजना तैयार की जा रही थी, तब प्राकृतिक एवं जैविक पद्धतियों के इस्तेमाल द्वारा स्वस्थ भोजन उगाने के लिए इस बात का निश्चय किया गया कि अधिक लोगों को इस परियोजना में शामिल करके इसे जितना संभव हो सकेगा उतना समावेशी बनायेंगे। इस बात का निश्चय किया गया कि मंडल में रोटेरियन किचन गार्डन के लिए सब्जियों के पौधों वाले एक लाख 'ग्रो बैग' वितरित करेंगे। मैथ्यू कहते है, ''उद्देश्य लोगों के अंदर खेती के लिए रूचि पैदा करने का था। हर व्यक्ति के पास खेत नहीं होते है, लेकिन हम सभी अपने घरों में सब्जियां उगा सकते है।''

कुरियन ने भारत सरकार के कॉयर बोर्ड से संपर्क किया और उनसे कोकोपीट से भरे ग्रो बैग्स देने की उपयोगिता पर चर्चा की, ताकि महिलाओं के लिए हल्के बैग्स को संभालना और भी आसान हो जाए। वह कहते है, ''उन्होंने हमें खाद एवं अन्य पोषक तत्वों से परिपूर्ण कोकोपीट दिया और अनेक क्लबों ने रोटरी के लोगो एवं नाम वाले ऐसे 1,000 या उससे अधिक बैग उनके समुदायों में बांटे।''

अनेक प्रायोगिक परियोजनाएं की गई और इस पहल ने बड़े रूप में मीडिया का ध्यान आकर्षित किया; ग्रो बैग्स एवं बंजर भूमि पर प्राकृतिक कृषि द्वारा चावल की खेती, दोनों के माध्यम से ''हमने जैविक खेती की पद्धति एवं इसके फायदे को समझाते हुए वीडियो एवं मलयालम भाषा की गाइड बनाई,'' कुरियन कहते है।

समुदाय की भागीदारी

मैथ्यू कहते है, लक्ष्य जितने संभव हो सके उतने साझेदारों को शामिल करने का है। अनेक रोटरी क्लबों ने उनके क्षेत्रों में बंजर भूमि को पट्टे पर लेना शुरू कर दिया है – प्रति एकड़

औसत लागत रु 12,000 आती है। मिट्टी को जैव जीवों एवं जैविक खाद से उपजाऊ बनाया गया और स्थानीय विशेषज्ञों द्वारा पारंपरिक बीज अर्जित किये गए। जिस वक्त डीजी के रूप में मैथ्यू के वर्ष की शुरुआत हुई, उस वक्त REAP की टीम परियोजना का आधिकारिक तौर पर लोकार्पण करने के लिए तैयार थी, एक ऐसे प्रतिष्ठित एवं प्रत्यक्ष स्थान पर जैसा तिरुवनंतपुरम राज्य का सचिवालय है। ''हमने 1,000 रोटरी ग्रो बैग्स का वितरण किया; कृषि मंत्री वी. एस. सुनील कुमार और कुछ अन्य नेताओं, एवं अनेक विधायकों और नौकरशाहों ने हिस्सा लिया और इसे अत्यधिक ख्याति मिली,'' डीजी कहते है।

एक रोचक कथन यह है कि कुछ माह पूर्व, जब एक खेत पर चावल की कटाई की गई, तब उत्सव के लिए आमंत्रित एक ''मंत्री ने टीवी चैनलों के सामने एक प्रभावशाली टिप्पणी की। उन्होंने कहा जब कार्यक्रम का लोकार्पण हुआ, उन्होंने सोचा नहीं था कि रोटेरियन यह कार्य कर पाएंगे और हम हैरान एवं प्रसन्न दोनों है कि हम इस परियोजना को इतना आगे ले गए। 'मुझे अब एहसास हुआ कि रोटेरियन अच्छे लोग है जो समुदाय की मानसिकता को बदलने का प्रयत्न कर रहे है,' उन्होंने कहा था,'' कुरियन मुस्कुराते है। एक अन्य सभा में रोटेरियनों ने एक अन्य नेता को REAP चावल भेंट किये। उन्होंने उसे खाया और उन्हें वह इतना पसंद आया कि उन्होंने और अधिक की मांग की है!

डीजी मैथ्यू आगे कहते है कि किसी भी रोटरी कार्यक्रम में REAP चावल का स्टाल सबसे प्रसिद्ध और स्टॉक खत्म करने वालों में प्रथम होता है।

हरे-भरे खेतों में घूमना

जब मैंने कोची से 52 किमी दूर स्थित वैकोम में पहले खेत का दौरा किया, जहाँ रोटरी क्लब वैकोम ने 3.5 एकड़ भूमि पट्टे पर ली है, उस दिन आसमान में बादल छाए हुए थे और मौसम अच्छा था; मंद-मंद हवा चल रही थी और हरे-भरे धान के खेतों ने पक्षियों के झुण्ड को आकर्षित किया, विशेषरूप से बगुलों को। रोटरी क्लब वैकोम के अध्यक्ष शुजा मैथ्यू और ज़ोन सहायक गवर्नर शाइन कुमार ने बताया कि यहाँ पर क्लब ने एक स्थानीय किसान से भूमि पट्टे पर ली है। भूमि पर दशकों से कुछ नहीं किया गया और अब यह प्रति एकड़ दो टन चावल उत्पन्न कर रही है। कुमार ने बताया कि वैकोम मूल रूप से एक कृषि क्षेत्र है और यहाँ कोई भारी भरकम उद्योग नहीं है, एक मात्र उल्लेखनीय उद्योग हिन्दुस्तान न्यूज़प्रिंट है। अध्यक्ष ने आगे कहा, ''यहाँ पर 270 वर्ग किमी

बाएं से : *ए जी शाइन कुमार, बीजु जोस, जेम्स कुरियन, REAP अध्यक्ष बीजुमोन कुरियन सचिव रॉय वर्गीस, रोटरी क्लब वाइकॉम के अध्यक्ष शिजो मैथ्यू और ए जी साबु वर्गीस।*

की कृषि प्रधान भूमि है लेकिन श्रमिकों की कमी, जलवायु परिवर्तन एवं रासायनिक कीटनाशकों के बुरे प्रभावों के कारण, कोई भी इस भूमि पर खेती करने में दिलचस्पी नहीं लेता था, जब तक हम आगे नहीं आए।''

उनके क्लब में 42 सदस्य है और सभी इस परियोजना में उनके परिवारों सहित सक्रिय रूप से सम्मिलित है। मंडल 3211 के 130 क्लबों में से 60 क्लब अब REAP परियोजना में शामिल है, और अनेक क्लबों के लिए अब यह लगभग नियम बन चुका है कि वे अक्सर उनकी क्लब की बैठकों को उनके द्वारा खेती किए जा रहे धान के खेतों के हरे-भरे परिवेश में आयोजित करते है। इन बैठकों में शराब नहीं परोसी जाती और भोजन भी केरला का पारंपरिक भोजन होता है।

बुवाई, कटाई या प्राकृतिक खाद, नीम पेस्ट, नीम कीटनाशक, इत्यादि जैसी प्राकृतिक सामग्रियों को खेतों में बिखेरकर मिट्टी में जान फूंकने जैसी गतिविधियों के दौरान, रोटेरियन इस बात का ध्यान रखते है कि वे केवल पारंपरिक कपड़े ही पहने; ट्राउसर या जींस को *वेष्टी* एवं *लुंगी* से बदल लिया जाता है। ''जब ऐसा होता है, तो श्रमिक और स्थानीय ग्रामीण हमारे साथ प्रसन्नता से जुड़ते है और परियोजना के बारे में पूछते है, क्योंकि उन्हें लगता है कि भले ही ये लोग मर्सिडीज़ और बीएमडब्ल्यू से चलते हो, लेकिन ये हमारे जैसे ही लोग है,'' REAP प्रमुख कुरियन ने कहा।

शाइन कुमार ने आगे कहा कि यहाँ तक कि वे क्लब भी जो शहरों में होने के कारण ज़मीन को पट्टे पर लेकर खेती नहीं कर सकते, ''उन्हें इस परियोजना को क्रियान्वित कर रहे क्लबों के साथ साझेदार बनने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।''

फिर हम 21 सदस्यीय थालाओलापरम्बु के रोटरी क्लब के धान के खेतों को देखने के लिए निकले जिसके लिए उनके द्वारा 5.3 एकड़ की भूमि पट्टे पर ली गई है। भूमि हरी और हवा ताज़ी थी और कुछ दिनों में कटाई होने वाली थी। ''अगर आप दो महीने पहले यहाँ आते तो आपको यह जगह सापों से भरे एक जंगल जैसी लगती। लेकिन स्थानीय किसानों एवं मजदूरों की सहायता से हमने इसे एक हरी जन्नत बना दिया है,'' क्लब के अध्यक्ष शिजो ने कहा।

समीप स्थित एक नहर से खेतों में पानी आता है और क्लब ने स्थानीय समुदाय को सब्जियां उगाने के लिए 1,000 ग्रो बैग्स वितरित किये। ऐसा स्कूलों से किया गया ताकि बच्चों को प्राकृतिक खेती की महत्ता पर संवेदनशील बनाया जा सके। इस भूमि पर कसावा और केले भी उगाये जाते है, उन्होंने आगे कहा।

साझेदारी के साथ समावेश

REAP की सफलता का श्रेय इसका समावेशी दृष्टिकोण और साझेदारियाँ हो सकती है। मैं इस गाँव की स्थानीय पंचायत के अध्यक्ष वी जी मोहन से मिली, जिन्होंने कहा कि ''रोटरी के साथ साझेदारी हमेशा अच्छी होती है। उनकी पहल के कारण स्थानीय लोगों को नौकरियां मिल रही है और सबसे जरुरी, स्वास्थ्यवर्धक भोजन मिल रहा है।''

इस कायाकल्प परियोजना का अन्य अनपेक्षित लाभ भूमिगत जल का पुनर्भरण होना है। केवल कुएं ही नहीं भरा रहे है अपितु कुछ मात्रा में खारा पानी भी फिर से मीठे पानी में तब्दील हो रहा है। हालाँकि इस क्षेत्र में बहुत पानी है, समस्या पीने के पानी की थी, लेकिन यह भी धीरे-धीरे हल हो रही है, उन्होंने कहा।

कुरियन ने आगे कहा कि एक रोटेरियन ने प्राकृतिक कृषि के माध्यम से 8,500 केले के पौधों की खेती करना शुरू कर दिया है। उन्होंने बताया कि पट्टे पर लिए गए प्रत्येक धान के खेत की एक स्थानीय संस्था के साथ साझेदारी है। हमने REAP, जो एक किस्म का ब्रांडिंग अभ्यास भी है, के माध्यम से रोटरी की पांच सितारा छवि को हिलाने की बहुत कोशिश की और अब जिन समुदायों में हमने

ग्रो बैग वितरित किये या धान की खेती कर रहे है, वहाँ पर रोटरी का लोगो अत्यंत प्रसिद्ध है।''

स्वच्छ, हरा, प्राकृतिक

स्वच्छ, हरा, प्राकृतिक, जैविक... ये वे चार शब्द है जो मैं लगातार सुनता हूँ। अगले दिन मैंने कुमाराकोम से लगभग 40 कि मी दूर स्थित थिरुवल्ला में 11 एकड़ के दो अन्य धान के खेतों का दौरा किया जिसे रोटेरियनों ने धान की खेती के लिए पट्टे पर लिया है। इस परियोजना का निरीक्षण करने के लिए डीजी मैथ्यू रोटेरियनों के साथ जुड़े है। रोटेरियन शर्ट और *वेष्टी/लुंगी* पहने हुए थे और उनके साथ रोटरी एन्स रंगीन छतरियाँ पकड़े हुए थी।

क्लब के अध्यक्ष मैथ्यू के जेकब उनके क्लब के कई सदस्यों के साथ खेत पर बैठक के लिए आये थे। परियोजना के समन्वयक रोटेरियन हरिकृष्णन ने बताया कि क्लब ने 11 एकड़ भूमि एक मंदिर से पट्टे पर ली है। ओमाना कुमार, एक किसान एवं तकनीकी सलाहकार, ने उनके द्वारा विकसित किये जा रहे विशेष किस्म के बीजों के बारे में समझाया और चेल्लप्पन, एक श्रमिक, हमें स्वादिष्ट नारियल पानी परोसकर अत्यंत प्रसन्न हुआ।

लगभग एक दर्जन महिलाएं जंगली घास को उचकाने में व्यस्त थी और उनके मधुर स्वर पूरे हरे खेत में प्रवाहित हो रहे थे। वे एक लोक गीत गा रही थी जिसमें भरपूर पैदावार होने के लिए ईश्वर का गुणगान किया जा रहा था। यहाँ पर, फसल कटाई की अवधि 120 दिनों की है - कुछ खेतों में केवल 90 दिनों में ही कटाई कर ली जाती है।

खेत के एक कोने में कुछ प्लास्टिक के डब्बों का ढेर लगा था, जिनमें फसल की वृद्धि के लिए गाय के गोबर, गोमूत्र और पिसा हुआ राजमा, मटर जैसे अनाज एवं गुड़ से निर्मित प्राकृतिक खाद भरी हुई थी। हरिकृष्णन ने प्राकृतिक एवं जैविक खेती के मध्य अंतर को समझाया। ''प्राकृतिक खेती, जो हम यहाँ करते है, में हम केवल सूक्ष्मजीवों को पनपाते है और उन्हें मिट्टी में छोड़ देते है। यह फसल को सूक्ष्म पोषक तत्वों एवं बीमारियों और कीटों के प्रति अत्यंत आवश्यक प्रतिरक्षा प्रदान करता है।''

साथ ही, वह खाद को एक उर्वरक ना कहकर उसे उपज बढ़ाने वाला कहते है। ''सुभाष पालेकर (प्राकृतिक खेती को प्रसारित करने वाले किसान) ने कभी भी उर्वरक शब्द का इस्तेमाल नहीं किया; वह हमेशा कहते है कि आपको प्रकृति में अधिक दखल देने की आवश्यकता नहीं होती है... जितनी कम दखल उतनी ही भरपूर एवं उत्तम पैदावार के लिए बेहतर। तो यह जैविक खेती से एक कदम ऊपर है। हम प्राकृतिक पारिस्थितिकी को खेती में

जो चावल हम उगाते है वह स्वास्थ्यवर्धक और स्वादिष्ट है, और यह रोटेरियनों के मध्य अत्यंत लोकप्रिय हो गया है। किसी भी रोटरी कार्यक्रम में ठएअझ चावल का स्टाल सबसे प्रसिद्द और स्टॉक खत्म करने वालों में प्रथम होता है।

डीजी सुरेश मैथ्यू

बाएं से : REAP चेयर बीजुमोन कुरियन, ए जी संतोष जॉर्ज और डीजी सुरेश मैथ्यू।

लाते है और वास्तव में मूल पारिस्थितिकी तंत्र को बदल रहे है या उसे पुनः लागू कर रहे है।''

डीजी सुरेश मैथ्यू ने आगे कहा, ''इस विशेष मिट्टी को अब परिवर्तित कर लिया गया है और यह रासायनिक कीटनाशकों से मुक्त है, जिसका मतलब है कि धरती को उपजाऊ बनाने के लिए नए सूक्ष्म जीव पनप रहे है।''

टीआरएफ को 10 रुपये

मैथ्यू ने आगे कहा कि REAP चावलों की अत्यधिक प्रसिद्धि एवं मांग को देखते हुए, हम प्रति किलो कीमत को रु 50 से बढ़ाकर रु 60 करने जा रहे है, और अतिरिक्त रु 10 को टीआरएफ को देंगे। मैं इस चावल का कुछ माल यूएस को निर्यात करने जा रहा हूँ; चूंकि मैं पहले से ही फ्रोजन खाद्य निर्यात व्यवसाय में हूँ, तो मेरे पास पहले से ही एक चैनल है।

किसानों का एक समूह ग्रो बेग में बढ़ते पौधों का निरीक्षण रोटेरियनों की उपस्थिति में करते हुए।

खरपतवार को उचकाते हुए गाना गा रही महिलाओं से हमने बात की। प्रसन्ना, जो पूर्व में जोधपुर में एक नर्स के रूप में काम करती थी लेकिन उसे घर लौटना पड़ा क्योंकि उसके दो बच्चे बहुत छोटे थे, ने धाराप्रवाह हिंदी में बात की। वह, अन्य श्रमिकों के साथ, सुबह 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक काम करती है और उसे रु 400 की दैनिक मजदूरी मिलती है। वह बहुत प्रसन्न है कि REAP पहल उसे यह आमदनी प्रदान करती है, जो एक छोटी सी पान की दुकान चलाने वाले उसके पति की आमदनी में वृद्धि करती है। थिलागम्मा, तीन बच्चों की माँ, और जिनके पति चित्रकार है ने कहा, ''इस काम के कारण हमें कुछ अतिरिक्त कमाई होती है।'' कल्याणी, उन्हें अनेक पारंपरिक कथाओं को गूंथने वाले लोक गीत सिखाने वाली मुखिया, ने कहा कि रोटेरियनों के इस कार्य ने उसे अति-आवश्यक रोजगार प्रदान किया है।

मैंने 1 किलोग्राम REAP चावल की मांग की और कुरियन ने मुस्कुराते हुए कहा, ''आप उसे आज लंच में चखेंगी। हम हरिकृष्णन के घर में लंच के लिए पहुंचे; उनकी पत्नी एक डॉक्टर है और वह काम पर थी। लेकिन उनकी माँ के निपुण मार्गदर्शन में, अन्य रोटरी एन्स ने किचन पर कब्ज़ा कर लिया और उनके द्वारा परोसा गया स्वादिष्ट, शानदार भोजन मेरे द्वारा किये गए सर्वश्रेष्ठ भोजनों में से एक था। इस क्षेत्र की प्रसिद्द *करी मीन* एक नई प्रवीणता के साथ पकाई गई थी और REAP चावलों के साथ परोसा गया सांभर एवं अन्य सब्जियों ने भोजन को पूर्ण किया। चावल वास्तव में स्वादिष्ट थे।

मैंने डीजी मैथ्यू से पूछा, तो क्या अन्य मंडलों ने भी उनकी इस स्वप्निल परियोजना को दोहराया। ''अभी तक नहीं; लेकिन हम केरला में अन्य संगठनों, और तो और कई पंचायतों, को प्रेरित करने में सफल हो चुके है जो इस बात से उत्साहित थे कि हमने हाइब्रिड बीजों की बजाय वायनाड एवं पलक्कड़ से लाये गए पारंपरिक बीजों का इस्तेमाल किया।'' और अब, गुजरात से बासमती चावल के बीजों को लाया गया है और उस चावल की भी खेती की जा रही है, उन्होंने आगे कहा। साथ ही यूके के एक रोटरी क्लब से आये लगभग 20 सदस्यों, जो केरला के एक क्लब का दौरा कर रहे थे, को भी REAP चावल के खेतों में ले जाया गया। मैथ्यू ने आगे कहा, ''उस दिन धान की कटाई की जा रही थी और वे विस्मित थे और उन्होंने हमसे कहा कि यह बिल्कुल वैसी ही परियोजना है जिसके साथ हम सम्बद्ध होकर सहयोगी बनना चाहेंगे, इसलिए हमें और जानकारी भेजिए।''

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

District Wise TRF Contributions as on January 2018

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions	EREY Donors (in numbers)	EREY %
India							
2981	23,612	1,215	0	0	24,828	142	3.3%
2982	34,322	70	2,725	0	37,117	170	6.3%
3000	27,550	7,159	88,541	0	123,250	802	15.9%
3011	63,420	314	44,262	0	107,997	178	5.9%
3012	38,482	6,693	46,590	3,016	94,780	213	6.1%
3020	23,121	9,961	19,950	42,478	95,510	72	1.7%
3030	455	22,724	1,050	0	24,228	3	0.1%
3040	3,432	0	26,185	0	29,617	26	1.2%
3053	5,602	78	11,550	0	17,230	15	0.5%
3054	(1,414)	102	212,650	0	211,338	6	0.1%
3060	34,999	640	206	18,000	53,845	385	10.1%
3070	28,124	148	24,219	789	53,281	144	4.9%
3080	99,765	11,149	15,578	92	126,585	159	4.9%
3090	508	0	0	0	508	2	0.1%
3100*	5,975	0	0	0	5,975	32	2.0%
3110	63,302	2,848	60,631	0	126,781	157	4.1%
3120	77,342	508	0	0	77,850	103	3.5%
3131	195,807	(3,900)	240,333	58,094	490,333	576	11.3%
3132	29,655	906	7,875	0	38,435	120	2.8%
3141	382,353	14,120	353,008	8,785	758,266	571	11.2%
3142	193,383	2,901	350	(1,000)	195,635	399	14.8%
3150	44,450	11,357	9,050	61,000	125,857	244	6.8%
3160	80,502	1,000	0	8,469	89,971	133	5.7%
3170	21,182	7,789	17,707	0	46,678	267	5.0%
3181	46,560	559	0	78	47,197	298	9.9%
3182	36,775	0	20,843	0	57,618	342	10.9%
3190	99,449	300	36,620	16	136,384	72	1.4%
3201	77,185	6,991	131,298	15	215,490	139	2.7%
3202	20,768	2,056	0	0	22,824	61	1.3%
3211	53,429	0	0	43,846	97,275	67	1.6%
3212	189,648	34,322	32,500	1,000	257,470	311	8.4%
3231	52,913	462	61,250	20,000	134,625	67	2.7%
3232	53,337	11,300	83,312	500	148,448	153	4.2%
3240	58,602	325	0	555	59,481	216	7.4%
3250	47,271	100	0	0	47,371	128	3.6%
3261	23,769	100	0	0	23,869	90	3.8%
3262	71,982	150	0	0	72,132	248	7.5%
3291	47,714	24,973	58,789	4,639	136,115	44	1.2%
India Total	**2,355,328**	**179,419**	**1,607,072**	**270,372**	**4,412,191**	**7155**	**4.6%**
3220 **Sri Lanka**	63,835	10,293	6,940	1,217	82,286	156	8.2%
3271 **Pakistan**	28,971	34,888	1,050	0	64,909	70	4.9%
3272 **Pakistan**	10,477	577	0	1,000	12,054	48	1.7%
3281 **Bangladesh**	317,592	13,085	175,328	44,025	550,030	514	9.1%
3282 **Bangladesh**	78,164	1,691	500	1,000	81,354	339	9.0%
3292 **Nepal**	120,722	19,960	145,485	0	286,167	417	9.5%
South Asia Total	**2,975,087**	**259,913**	**1,936,376**	**317,615**	**5,488,990**	**8699**	**4.8%**
World Total	**67,397,651**	**21,550,948**	**8,944,796**	**14,170,047**	**112,063,442**		

** Non-districted*

Source: RI South Asia Office

पुरुलिया के बच्चों के लिए बेंच

टीम रोटरी न्यूज़

जनवरी 28 को, पश्चिम बंगाल के पुरुलिया मंडल के बागटबाडी प्राइमरी स्कूल के छात्र स्कूल जाने के लिए बहुत उत्साहित थे, क्योंकि वे पहली बार बैंच पर बैठने जा रहे थे, और यह कार्य रोटरी क्लब कलकत्ता मिडसाउथ, मंडल 3291 की परियोजना के कारण संभव हुआ।

''उत्साहित बच्चे कक्षा में जाते है और बड़े ही उत्साह के साथ बेंच पर बैठते हुए देखकर हमें अत्यंत प्रसन्नता होती है। अभी तक, हमें पता नहीं था कि एक साधारण फर्नीचर क्या आलीशान हो सकता है हम उनका इस्तेमाल करने के इतना अभ्यस्त हो चुके हैं कि हम उन चीजों पर कोई ध्यान ही नहीं देते हैं,'' क्लब के तात्कालिक पूर्व अध्यक्ष राम प्रसाद नाग जी कहते है।

वर्ष 1905 में स्थापित स्कूल, मध्याहन भोजन के लिए स्थानीय इलाके में लोकप्रिय है। नाग ने स्कूल की अपनी यात्रा के दौरान स्कूल में बेंच और डेस्क की आवश्यकता को महसूस करते हुए दुख हुआ, जब उन्हें बच्चों को फर्श पर बैठे हुए देखा।

परियोजना को तब आगे बढ़ाने में मदद मिली गया जब क्लब को रोटरी क्लब बैटरसी, ब्रिक्टन और क्लैमर, लंदन से वित्तीय सहायता प्राप्त हुई, और एक साथ उन्होंने लंदन क्लब के अंतरराष्ट्रीय परियोजना अध्यक्ष डॉ. अमर बसु की उपस्थिति में एक लाख रुपये की लागत से स्कूल को फर्नीचर उपलब्ध कराया किया, जिन्होंने स्कूल की विशेष यात्रा की।

क्लब अपने रजत जयंती वर्ष मना रहा है और इसने विगत 25 वर्षों में पुरूलिया और आसपास के पिछडे. क्षेत्रों में अनेक विकास परियोजनाएं निष्पादित की हैं। ■

मूल सिद्धांतों पर कार्यशाला

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब धरापुरम, मंडल 3202 द्वारा एक दो दिवसीय रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट (आरएलआई) का आयोजन किया गया था, जिसमें 25 प्रतिभागियों का मार्गदर्शन करते हुए छह समन्वयक शामिल हुए, जिन्होंने जीवंत सहभागिता के माध्यम से रोटरी से संबंधित विभिन्न विषयों पर परिचर्चा की।

डीजी पी एम शिवशंकरन ने मंडल प्रशिक्षक पीडीजी सगादेवन की उपस्थिति में संस्थान का उद्घाटन किया। इस अवसर पर पीडीजी रेखा शेट्टी (मंडल 3232), नवमनी (मंडल 3212), टी जॉर्ज सुंदरराज (मंडल 3202), रोटेरियन मैथिली मुरलीधरन, पी शेषाद्री और कृष्णा जैसे अन्य सलाहकार भी उपस्थित थे।

कार्यशाला में मेरा रोटरी वर्ल्ड, व्यावसायिक सेवा में नैतिकता, रणनीतिक योजना और विश्लेषण, सदस्यता, संचार-संवाद और टीम-निर्माण, रोटरी फाउंडेशन, सार्वजनिक छवि और नेतृत्व क्षमता जैसे विषयों पर चर्चा की गई। प्रतिभागी केरल के त्रिकारीपुर, पंगडी, कुनीमंगलम, कोझिकोड और तिरूर और तमिलनाडु में ईरोड, भवानी, तिरुपुर, सोमानूर, मेट्टुपालयम, पोलाची और धरापुरम जैसे स्थानों से भाग लेने के लिए आएं थे।

अपने विचारों को व्यक्त करते हुए, रोटेरियन मायथिलि मुरलीधरन ने कहा, ''प्रतिभागियों को रोटेरियन के साथ-साथ अनुभवी लोगों से मिलने और प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर प्राप्त

हुआ, जो सामुदायिक परियोजनाओं को कार्यान्वित करने में वृहद अनुभव वाले गवर्नर्स थे,'' जबकि रोटरी क्लब पैंगडी, मंडल 3202 के हरिश ने कहा ''सभी सत्र जानकारियों से परिपूर्ण था। मैं अभी भी उनके महान और सकारात्मक प्रभाव से बाहर नहीं निकल पाया हूँ और प्रशिक्षकों की आवाजें.मेरे कानों में गूंज रही हैं, मुझे दस्तक दे रही है और जागने के लिए कह रही है और आह्वान कर रही है कि अगले बेहतर कार्रवाई के लिए कमर कस कर तैयार हो जाओ।''

रोटरी लीडरशिप इंस्टीट्यूट के संवादात्मक सत्रों द्वारा पूरी तरह से उर्जास्वित सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। ■

तीन महिलाएं एक असीम साहसिक अभियान पर

जयश्री

जहाँ हम में से बहुत से लोग ट्रैफिक और रोज़ाना ऑफिस तक की कुछ कि मी की तनावपूर्ण ड्राइविंग के बारे में शिकायत करते है, वहीं हमारे पास ऐसी तीन महिलाएं है जिन्होंने तमिलनाडू के कोयम्बटूर से वादियों, मैदानों, रेगिस्तानों एवं पहाड़ियों के मध्य से गुजरते हुए, 70 दिनों तक, 24 देशों की यात्रा करते हुए, पिछले वर्ष की 5 जून को लन्दन में भारतीय उच्चायुक्त की उपस्थिति में हमारे राष्ट्रीय ध्वज को फहराने से पूर्व 26,800 कि.मी. की ड्राइविंग की। ''ब्रिटिश राजधानी में होना बहुत अच्छा लगा, विशेषरूप से जब हमारे मिशन में ब्रिटिश शासन से आजादी की 70वीं वर्षगांठ का उत्सव मनाना शामिल था,'' मूकाम्बिगा रथिनम ने कहा जिन्होंने, मीनाक्षी अरविन्द और प्रिया राजपाल के साथ मिलकर 'XPD 2470' दल बनाया था। एक चौथी सदस्य, रुक्मणी सेकर, को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण आखिरी मौके पर यात्रा रद्द करनी पड़ी।

कारण

इस अंतर्देशीय साहसिक ड्राइव का एक उद्देश्य था: महिलाओं के दल ने महिला साक्षरता एवं रोटरी इंडिया लिटरेसी मिशन (RILM) के TEACH के विभिन्न घटकों का प्रचार किया। XPD 2470 के मुख्य समन्वयक पीडीजी के ए कुरिआचन ने कहा, ''यह शायद सबसे लंबी साक्षरता ड्राइव है और महिला सशक्तिकरण एवं साक्षरता के राजदूतों के रूप में इन निर्भीक महिलाओं से बेहतर कौन हो सकता है। इस पहल से स्कूल छोड़ने वाले 200 बच्चों को वापस स्कूल भेजने हेतु रु 5 लाख प्राप्त हुए।''

पूरी यात्रा का खर्च लगभग रु 60 लाख आया। आकृति और कोयम्बटूर टेक्ससिटी के रोटरी क्लब, मंडल 3201, दी रामकृष्ण ग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूशंस, रूट्स, CRI पम्पस और कुछ अन्य परोपकारियों ने

बाएं से : मीनाक्षी अरविंद, प्रिया राजपाल और मूकाम्बिगा रथिनम आईफल टॉवर, पेरिस में।

दाएं से : मीनाक्षी अपविन्द, मूकाम्बिगा रथिनम, पीडीजी के ए कुरियचन (चरम बाएं) रोटरी क्लब आकृति की अध्यक्ष लीमा रोज़ मार्टिन, पूर्व रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म के साथ, चेन्नई में हुए रोटरी साक्षारत सम्मेलन में।

इस अभियान का समर्थन किया। ईंधन, गाड़ी के रख-रखाव, टोल शुल्क और ठहरने पर किये गए वास्तविक खर्चों के अलावा, ''हमें अंतर्राष्ट्रीय ड्राईवर परमिट, 11 वीसाओं, लन्दन से भारत की हवाई टिकट और यात्रा एजेंट की फीस के लिए खर्चा करना पड़ा,'' मूकाम्बिगा ने कहा।

यात्रा के लिए टाटा मोटर्स ने उनकी SUV हेक्सा प्रदान की और रास्ते में आपात स्थितियों से निपटने के लिए उन्होंने उनके पुणे संयंत्र में गाड़ी की यांत्रिकी के बारे में दल को प्रशिक्षण भी दिया। यात्रा के बाद गाड़ी को वापस लन्दन से पुणे भेज दिया गया। गाड़ी के लिए एक विशेष सॉफ्टवेर वाली एक डायग्नोस्टिक केबल ने समस्याओं के निवारण में मदद की। विभिन्न भू-भागों पर बेहतर पकड़ के लिए कार में विशेष रूप से 19-इंच के टायर लगाए गए, और वे उनके साथ दो अतिरिक्त पहिये, ऑक्सीजन के सिलिंडर और अन्य अतिरिक्त पुर्जे ले गए थे। ''शुक्र है कि हमें उनकी आवश्यकता नहीं पड़ी,'' वह मुस्कुराई।

सफ़र

XPD 2470 को 26 मार्च को कोयम्बटूर से नगरपालिका प्रशासन मंत्री एस पी वेलुमनी द्वारा हरी झंडी दिखाई गई और उनका अन्य राज्यों एवं केन्द्रशासित प्रदेशों में बड़ी धूमधाम से स्वागत किया गया। ''अधिकतर स्थानों पर हमें कामयाब महिलाओं द्वारा हरी झंडी दिखाई गई। पांडिचेरी में लेफ्टिनेंट गवर्नर किरण बेदी द्वारा, और भारत में हमारे अंतिम पड़ाव, मणिपुर के इम्फाल में गवर्नर नज़मा हेपतुल्ला द्वारा हमें हरी झंडी दिखाई गई।'' वे जिस राज्य से गुज़री वहाँ रोटेरियनों ने दल को प्रोत्साहित किया।

म्यांमार, चीन, किर्गिस्तान, उज़्बेकिस्तान, कज़ाखस्तान, रूस, बेलारूस, पोलैंड, स्लोवाकिया, हंगरी, रोमानिया, बुल्गारिया, मेसेडोनिया, सर्बिया, क्रोएशिया, ऑस्ट्रिया, चेक गणराज्य, स्विट्ज़रलैंड, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, नीदरलैंड, से गाड़ी चलाते हुए वे 5 जून को लन्दन पहुँची।

दल

कोयम्बटूर-आधारित उद्यमी मीनाक्षी अरविन्द (45) ने दल का नेतृत्व किया, जिसमें पोल्लाची, कोयम्बटूर के निकट स्थित एक शहर, की एक किसान एवं योग प्रशिक्षक मूकाम्बिगा रथिनम (38), और साहसिक कारनामे करने वाली मुंबई की प्रिया राजपाल (55) शामिल थी। ये तीन महिलाएं पहली बार तब मिली जब मीनाक्षी, जो हाल ही में थाईलैंड से अपनी सड़क यात्रा करके लौटी थी, ने विश्व भ्रमण में हिस्सा लेने के लिए एक ऑनलाइन निमंत्रण पोस्ट किया था। मूकाम्बिगा, प्रिया और रुक्मणी ने निमंत्रण का जवाब दिया और योजना को अंतिम रूप दिया गया। ''मैं देश भर के स्थानों का भ्रमण करते हुए एकल ड्राइविंग करने की आदी हूँ। मेरा विचार था कि हमारे देश में देखने के लिए बहुत कुछ है और मुझे विदेश जाने से पूर्व यहाँ की सभी जगहों को देखना चाहिए। लेकिन मीनाक्षी का विचार बहुत आकर्षक था और मेरी माँ ने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया,'' मूकाम्बिगा ने कहा जिनकी सात वर्ष की एक बेटी है।

अपर्याप्त बैंक बैलेंस होने के कारण उनका वीसा तीन बार रद्द किया गया। ''हमारा एक कृषि व्यवसाय है और अधिकतर लेन देन नगद में ही होता है। लेकिन विमुद्रीकरण और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा ऑनलाइन लेन-देन पर ज़ोर दिए जाने के कारण, मेरा बैंक बैलेंस बढ़ गया, और आखिरकार मेरा वीसा स्वीकृत हो गया, बेशक अत्यंत संघर्ष के बाद।''

दल में हर एक लिए XPD 2470 सबसे लंबी यात्रा थी। मीनाक्षी ने लगभग एक साल तक इस रास्ते की रिसर्च की, और हर देश के नियमों के बारे में पढ़ा। ''हमने ध्यानपूर्वक दिन के हर घंटे की योजना तैयार की थी, क्योंकि ज़रा सी भी देरी, भले

ही एक जगह पर, हमारी सुनियोजित ट्रिप को बर्बाद कर सकती थी,'' मूकाम्बिगा ने कहा।

साहसिक कार्यों की भरमार

जब आपने शुरुआत की तब क्या आपको पूरी यात्रा चुनौतीपूर्ण नहीं लगी, मैंने मूकाम्बिगा से पूछा।

कुरिआचन, जो इस अभियान के लिए शुरुआत से ही उत्साहित और इसे पूर्णतः समर्थन देने वाले थे, ने एक त्वरित उत्तर दिया: ''मेरे बहुत से दोस्तों ने इस अभियान को समर्थन देने के लिए मेरा परिहास किया। उन्होंने कहा कि वे सभी युवा है और किसी भी क्षण वह इस विचार को त्याग सकती है, और फिर तुम्हें शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी। लेकिन मैंने उनकी बात नहीं सुनी, हालाँकि तब मुझे थोड़ा संदेह जरुर था। वे वास्तव में मित्र नहीं थी। वे सभी एक-दूसरे से हाल ही में मिली थी और मैं उनके आपसी तालमेल से परिचित नहीं था और ना ही वे स्वयं इससे परिचित थी। लेकिन भगवान का शुक्र है कि सब कुछ अच्छे से हो गया।''

मूकाम्बिगा ने एक गूढ़ मुस्कान के साथ इस पूरे प्रकटीकरण को सुना और फिर शांति से जवाब दिया: ''हाँ, कुछ बातों को लेकर हमारी बहस हुई थी। पानी की बोतल खरीदने जैसी साधारण बात पर, क्योंकि वहाँ तीन विकल्प थे। इसे हम 'केबिन फीवर' कह सकते है - लगातार एक छोटी सी जगह तक सीमित रहना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। जल्द ही हमने अपने स्वयं के नियम बना लिए। उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति ड्राइव करेगा वह अपनी पसंद का गाना बजा सकता है। और इससे हमें धैर्य का सबक मिला।''

मेरे बहुत से दोस्तों ने इस अभियान को समर्थन देने के लिए मेरा परिहास किया। उन्होंने कहा कि वे सभी युवा है और किसी भी क्षण वह इस विचार को त्याग सकती है, और फिर तुम्हें शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी।

पीडीजी के ए कुरिआचन

लेकिन उनके पास सामना करने के लिए बड़ी चुनौतियाँ थी। जैसे कि चीन की यात्रा। ''हमें इर्केश्ताम पास से होते हुए चीन से निकलकर किर्गिस्तान जाना था। इसके बजाय, हमारा गाइड हमें गलत रास्ते से टोरुघाट पास की ओर ले गया जो समुद्र तल से 13,000 फीट की ऊँचाई पर है। अचानक से आए एक बर्फीले तूफ़ान ने हमें चकित कर दिया और हमारे पास बर्फ पर चलने वाले टायर भी नहीं थे। तो हमें तीन सीमा पहरेदारों के साथ 10 फीट् 10 फीट के कमरे में रात गुजारनी पड़ी। बाहर का तापमान —18 डिग्री सेंटीग्रेड था और सीमा बंद थी। अगली सुबह हम हमारी कार को स्टार्ट नहीं कर सके क्योंकि अत्यधिक ठण्ड के कारण इंजन जम गया था।''

महिलाएं रेगिस्तान से लेकर ऊंचाइयों और कुछ खराब सड़कों तक सबसे गुज़री। ''गुवाहाटी से इम्फाल तक की यात्रा वाकई में कठिन थी।'' बायें एवं दायें-हाथ की ड्राइविंग के अनुरूप होना समस्या नहीं थी, लेकिन सड़क संकेतों को समझना कठिन था। ''हम एक दिन में केवल छह घंटे ड्राइविंग करते थे और बार-बार पानी पीते रहते थे। मौसम की स्थितियां पूर्णतः अलग होती थी। हम हमारी यात्रा 30 डिग्री सेंटीग्रेड से शुरू करते, और दिन के अंत तक एक ऐसी जगह पहुंचते जहाँ तापमान —16 डिग्री सेंटीग्रेड होता था,'' उन्होंने कहा।

आश्चर्य

चीन, म्यांमार और किर्गिस्तान जैसे देशों में, गाइड नियुक्त करना अनिवार्य था और उज़्बेकिस्तान में डीजल ब्लैक में बेचा जा रहा था क्योंकि वहाँ गाड़ियाँ तरलीकृत गैस, मीथेन और प्रोपेन से चलती है। चीन में ड्राइव करने के लिए आपको एक अस्थायी लाइसेंस और एक स्थानीय नंबर प्लेट की आवश्यकता होती

लंदन में भारत से युके के उप उच्चायुक्त दिनेश के पटनायक (बीच में) समन्वय मंत्री ए एस राजा के साथ अभियानीगण। चित्र में पीडीजी टी जॉर्ज सुंदरराज, रोटेरियन सतवंत सिंह जो रोटरी क्लब पालक्काडु से हैं, पीडीजी के ए कुरिआचन और उमा सतवंत।

चीन में।

है, और ट्रिप को स्थानीय यात्रा एजेंसी द्वारा नियोजित करवाना पड़ता है। म्यांमार से यात्रा करने से पहले आपको अपनी गाड़ी को पंजीकृत करवाना होता है। थाईलैंड की सड़कों पर आपकी गाड़ी चलाने के लिए आपको एक विशेष परमिट की आवश्यकता होती है।

हमें यह तब पता चला जब हम म्यांमार से थाईलैंड में दाखिल हो गए थे। ''हमें कहा गया कि हम प्रवेश कर सकते है, लेकिन हमारी कार नहीं। हमें केवल बैंकाक में परमिट मिल सकता था, और उसमें तीन हफ्ते लगते। लेकिन हमारे पास आगे के देशों के लिए तिथि-विशेष वीसा थे। और थाईलैंड'' अगले दस दिन सोंगक्रान त्यौहार के कारण बंद हो रहा था। अगर हमें हमारा परमिट नहीं मिलता, तो हमें भारत लौटना पड़ता।

हमने भारतीय दूतावास से बात की और अपने दोस्तों से मदद मांगी। आखिर में कोयंबटूर में एक परिचित, जो पूर्व थाई उप प्रधान मंत्री को जानते थे, हमारी मदद करने के लिए राज़ी हुए। तो फिर हम बैंकाक के लिए उड़े, और 24 घंटों के अंदर अपना परमिट लिया, लेकिन इस प्रक्रिया में हमने चार दिन गंवा दिए। इस क्षति की पूर्ति करने के लिए, हम थाईलैंड की जगहों को देखे बिना आगे बढ़ गए, और चीन में हम अपने निर्धारित कार्यक्रम पर आ गए, उन्होंने आगे कहा।

दल ने उज़्बेकिस्तान में शाही सुलूक का आनंद लिया क्योंकि ''हम 'राज कपूर की भूमि' से थे। एक परिवार के बैंड को बॉलीवुड गीत, विशेषकर राज कपूर की फिल्मों के गीत, गाते हुए सुनकर हम चकित और उत्साहित थे।''

दल ने एक दिन में सबसे लम्बा सफ़र बुडापेस्ट से बुकारेस्ट तक 893 कि मी का तय किया। एक दिन में वे औसतन 550 कि मी ड्राइव करते थे। ''लेकिन किर्गिस्तान में, खराब रास्तों एवं ऊँची चढ़ाई के कारण हम एक दिन में 250 कि मी से अधिक ड्राइव नहीं कर सकें।''

इस तरह के अभियान में तकनीक एक बहुत बड़ा वरदान थी। महिलाएं अपने साथ सेटेलाईट से जुड़ा गैजेट ले गई थी, जो 200 देशों में वाई-फाई सुविधा प्रदान करता है। ''इसका खर्च हमें 80 डॉलर प्रतिदिन का पड़ रहा था। इस डिवाइस की मदद से हमने सोशल मीडिया पर अपनी प्रगति को अपडेट किया और अपने परिवारों से जुड़े रहे। यह एक वाई-फाई हॉटस्पॉट की तरह कार्य करता है, जिससे पाँच गैजेट्स जोड़े जा सकते है।''

कारनेट

चूंकि दल ने अपनी कार को लन्दन से भारत पानी के जहाज द्वारा लाना तय किया था, इसलिए कारनेट, एक अंतर्राष्ट्रीय कस्टम और अस्थायी आयात-निर्यात का दस्तावेज आवश्यक था। उन्हें उस दस्तावेज पर हर सीमा को पार करते वक्त स्टाम्प लगवाना पड़ता था और सीमाएं दिन में केवल कुछ घंटों के लिए ही खुलती थी, ''इसलिए हमें चौकन्ना रहना पड़ता था और हर दिन घड़ी देखकर कार्य करना पड़ता था।''

''यहाँ पर समय की पाबंदी को विशेष उल्लेख की आवश्यकता है। वे योजना अनुसार निश्चित समय पर 5 जून को लन्दन में थी,'' कुरिआचन ने कहा। वह, परियोजना प्रमुख कृष्णराज और रोटरी क्लब आकृति की अध्यक्ष लीमा रोज़ मार्टिन के साथ, लन्दन में दल का स्वागत करने और इस अद्भुत उपलब्धि के लिए उनका अभिनन्दन करने हेतु वहाँ मौजूद थे। पूर्व में, दल ने तत्कालीन रोई अध्यक्ष जॉन जर्म से चेन्नई में रोटरी लिटरेसी समिट में मुलाकात की थी।

''मुझे लीमा की माँ जैसी चिंता का जिक्र अवश्य करना चाहिए। हर सुबह वह हमारा हाल-चाल और ठौर-ठिकाने के बारे में पूछते हुए सन्देश भेजती थी। मैंने इस यात्रा को पूर्ण करके अत्यंत विनम्र महसूस किया। हम रास्ते में अद्भुत लोगों से मिले और इस ट्रिप में हमने जितना निवेश किया, उससे अधिक हमने सीखा,'' मूकाम्बिगा ने कहा।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

निश्चय करें - धोना है या पोछना है

राकेश भाटिया

जब भारतीय विदेश जाते है तो वे हेल्थ फॉसेट की मांग नहीं करते, बल्कि वे पश्चिमी तरीके को अपनाने की कोशिश करते है, शौचालय का उपयोग करने के बाद पोछने का। बहुत से लोग पोछने के बाद उपयोग किये गए टीशू को शौचालय में रखे कूड़ेदान में फेंक देते है, इस डर से कि कहीं निकास नली के चोक हो जाने से एक शर्मनाक स्थिति उत्पन्न ना हो जाये।

जब भारत में विदेशी मेहमान आते है, सबसे पहले हम अपने शौचालयों की जाँच करते है, और यह सुनिश्चित करते है कि वहाँ पर टॉयलेट पेपर रोल सुसज्जित हो। हम अपने मेहमानों को साफ एवं स्वच्छ भारतीय तरीके को अपनाने की सलाह तक नहीं देते है, फिर से, वहीं शर्मनाक स्थिति के डर के कारण।

जो कार्य धुलाई करती है, वो किसी पुछाई से नहीं हो सकता। फर्श पर थोड़ा तरल पदार्थ फैला दीजिये, उसे पोछिये, साफ कीजिये, इसके बाद भी कुछ निशान होंगे ही; इसे धो दीजिये, पूरा फर्श हर प्रकार के धब्बों से मुक्त हो जाएगा। उसी प्रकार, कितना ही पोछ लेने से आपके कूल्हे पूरी तरह साफ नहीं हो सकते, जो एक अकेली धुलाई से हो सकते है। भारतीयों ने अपने पुरखों से हर बार शौचालय का उपयोग करने के बाद धोना सीखा है। हमें सिखाया गया है - उल्टा हाथ सफाई करने के लिए है और सीधा हाथ खाने के लिए है। आज, आधुनिक भारत में, हम धोने के लिए हाथ के शावर का प्रयोग करते है और अंतिम अंश तक की सफाई करते है। यह स्वच्छता का सही तरीका है और स्वास्थ्यकारक है। इससे काग़ज बचता है और निकास नली के चोक हो जाने का भी भय नहीं होता। यह पर्यावरण बचाता है। संक्रमण को दूर करता है।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता और डॉक्टर मानते है कि पोछने से मल छूट जाता है और अत्यधिक पोछने से भगंदर और मूत्र पथ में संक्रमण जैसी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती है। यह तब होता है जब वे गुदा को पीछे से आगे की ओर पोछते है जिसके साथ ही बैक्टीरिया शरीर के सामने के भाग में आ जाते है। दूसरी ओर, जब धोते है, वे सदा के लिए बहा दिए जाते है। और वह जगह साफ और स्वस्थ रहती है। यह भी देखा गया है कि उस जगह पर पानी के हल्के से प्रेशर के कारण मल त्याग आसानी से होता है। एक ग्राम मल में दस मिलियन वायरस, एक मिलियन बैक्टीरिया और कीड़ों के 100 अंडे हो सकते है।

पोछना गन्दा होता है और अक्सर हमारे हाथ दूषित हो जाते है। अगर आपका टॉयलेट पेपर सफ़ेद है, तो इसमें ब्लीच हो सकता है। क्लोरीन ब्लीच खतरनाक विषाक्त पदार्थों को उत्पन्न करता है जो शरीर में जमा होकर गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनते है।

रोटरी में WASH जाना पहचाना शब्द है, अब समय दुनिया को सिखाने का है - अपने शौचालय में धुलाई को अपनाइए और अंतर को महसूस कीजिये।

लेखक रोटरी क्लब बेलूर, मंडल 3291 के निर्वाचित अध्यक्ष है।

भरूच में स्ट्रीट फन!

रशीदा भगत

आम तौर पर गुजराती लोग सर्दियों का स्वागत ठण्ड में सुबह ऐसे नाश्ते से करते हैं जिससे शरीर में दिन भर गरमाहट बनी रहे - जैसे ताजा लहसुन से बने व्यंजन या हलवा - हां दाना मेथी का हलवा सुबह-सुबह, याद रखें यह गुजरात है... बाजरे की रोटी और गुड़ के साथ इत्यादि।

लेकिन पिछले दो साल की तरह ही इन सर्दियों में भी मंडल 3060 के रो क्लब भरूच नर्मदा नगरी ने गुजरात में शिशिर ऋतु के प्रवेश को एक नये और अनूठे तरीके से मनाने का फैसला किया जिसका नाम रखा - रोटरी नी धमाल गली यानी स्ट्रीट फन!

क्लब के अध्यक्ष पूनम सेठ ने कहा कि इस आयोजन की अवधारणा इस प्रकार की गई ताकि सर्दियों की सुबह, शहर के किसी प्रसिद्ध स्थल पर ''बड़ी तादाद में लोग इकट्ठे हों सकें जिसमें मनोरंजन के साथ आपसी साहचर्य भी बढ़े। इसका मक़सद रोटरी की पहचान स्थापित करना और रोटरी के बारे में जागरूक करना और विशाल समुदाय के बीच अपनी सार्वजनिक छवि को बढ़ाना है।''

इसलिए इस मनोरंजन और पीआर को बढ़ाने के लिए, भरूच की खासी चहल पहल वाली गली की पहचान की गई, जहां काफी लोगों का आना जाना है। उन्होंने कहा, ''हमने भरूच पुलिस, स्थानीय नगर पालिका और जिला प्रशासन से विशेष अनुमति ली और उनके सहयोग से, सड़क पर आवागमन बंद कर दिया गया और लोगों के लिये यातायात के वैकल्पिक मार्ग की व्यवस्था की गई। रविवार की सुबह बड़ी संख्या में लोगों, खासकर युवाओं को आकर्षित करने के लिए इसका आयोजन किया गया था, बहुत सारे मज़ेदार खेलों के साथ ही जुम्बा नृत्य, गरबा और लाइव रॉक बैंड ने इस समारोह को और मज़ेदार बना दिया।''

बच्चों के लिए एक कला प्रतियोगिता।

पारम्परिक खेल और गतिविधियों जैसे गिल्ली डण्डा, पतंगबाजी, रस्सा खींच, लखोटी (कंचे खेलना), टायर रोलिंग, गली क्रिकेट, स्ट्रीट पेंटिंग, मेहंदी लगाना और नुक्कड़ नाटकों का भी आयोजन किया गया। विशेषकर युवाओं को स्कूली बच्चों, इंटरैक्टर्स और रोटारैक्टर्स सहित खाने पीने के आइटम्स के स्टाल लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

इस आयोजन को इंटरएक्ट और रोटारैक्ट के अलावा, NGO क्लीन भरूच ग्रीन भरूच, वरिष्ठ नागरिक क्लब भरूच, भरूच अग्रवाल समाज, आर्ट ऑफ़ लिविंग फाउंडेशन भरूच और विमंदित बच्चों के लिए 'असिमता स्कूल' जैसे गैर-सरकारी संगठनों ने भरपूर सहयोग दिया।

इस आयोजन में क़रीब 2,500 लोगों ने भाग लिया, रोटरी और मानवीय परियोजनाओं के बारे में बहुत सारी जानकारी दी गई। 28 जनवरी को पोलियो दिवस (NID) होने के कारण, यहां एक पोलियो बूथ भी लगाया गया और लगभग 70 बच्चों को पोलियो ड्रॉप्स दी गईं। ■

दो पूर्व रो ई अध्यक्ष ने आगामी गवर्नरों को मन्त्रमुग्ध किया

रशीदा भगत

पूर्व रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म।

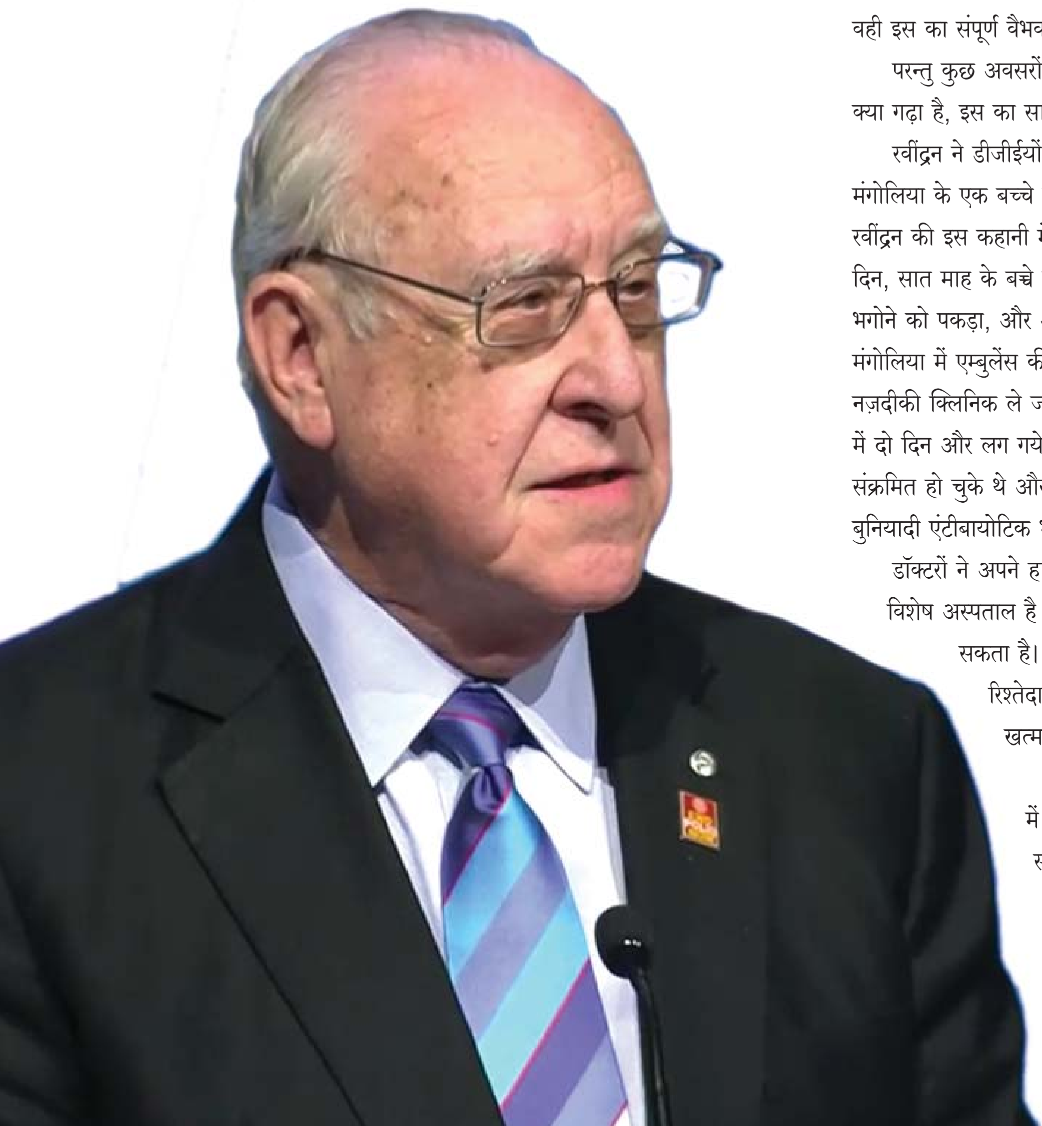

इस जनवरी, सैन डिएगो में इंटरनेशनल एसेम्बली (IA) में दो पूर्व रो ई अध्यक्ष - जॉन जर्म और के आर रवींद्रन ने बेहद दिलचस्प व्याख्यान दिए।

रवींद्रन ने कहा कि IA सभी आगामी गवर्नरों के लिए एक विशेष आयोजन था, लेकिन हर एक ने अपने अपने ढंग से इसके ''विभिन्न क्षणों को बड़ी तल्लीनता से महसूस किया जैसे कई पुर्जे मिलकर अनगिनत रंगीन धागों से कालीन का निर्माण करते हैं। सिर्फ ऊपर बैठा मास्टर ही इस सरंचना का समायोजन करता है , वही इस का संपूर्ण वैभव देख सकता है।''

परन्तु कुछ अवसरों पर ही मनुष्य सौभाग्य से ''हमारे हाथ में क्या गढ़ा है, इस का साक्षी बनता है।''

रवींद्रन ने डीजीईयों से एक सच्ची कहानी साझा की, मंगोलिया के एक बच्चे ज़कचारी की, और रोटेरियनों और खुद रवींद्रन की इस कहानी में एक अनोखी भीमिका निभाई हैं। एक दिन, सात माह के बच्चे ने उबलते पानी से भरे, एक विद्युतचलित भगोने को पकड़ा, और अपने ऊपर खाली कर दिया। ग्रामीण मंगोलिया में एम्बुलेंस की सुविधा नहीं है, और उसे सबसे नज़दीकी क्लिनिक ले जाने में एक दिन तथा अस्पताल पहुंचाने में दो दिन और लग गये। लेकिन अब तक उसके घाव बुरी तरह संक्रमित हो चुके थे और ''अस्पताल में उसके इलाज के लिए बुनियादी एंटीबायोटिक भी उपलब्ध नहीं थे।''

डॉक्टरों ने अपने हाथ उठा लिए और कहा कि सिर्फ एक ही विशेष अस्पताल है वो भी विदेश में, जो उसका जीवन बचा सकता है। ''हताश माता पिता अपने हर दोस्त, हर रिश्तेदार के पास गए। लेकिन ज़ैचरी का समय खत्म होता जा रहा था।

उसके शरीर के आधे से ज्यादा हिस्से में थर्ड डिग्री बर्न हो चुका था, और उसका संक्रमण विषाक्त हो चला था।''

सिनसिनाटी शहर का एक धर्मार्थ अस्पताल, श्राइनर्स, उसका इलाज करने के लिए सहमत हो गया और हताश व

निराश माता पिता ने किसी तरह हवाई टिकट के पैसे उधार लिए और उड़ान पर साथ जाने के लिए एक डॉक्टर की भी व्यवस्था की। ''लेकिन कोई भी एयरलाइन इतनी हालत में, ज़िन्दगी और मौत के बीच झूल रहे बच्चे को ले जाने के लिए राज़ी नहीं थी। और बच्चे के पास, केवल दो दिन थे!'' माता-पिता क्या कर सकते थे सिर्फ़ प्रार्थना, जो वो कर रहे थे और साथ ही उम्मीद भी थी एक चमत्कार की। वे रात भर प्रार्थना करते रहे, बच्चा और कमज़ोर हो चला था, उन्होंने भगवान से दया की विनती की।

अगली सुबह, मंगोलिया अस्पताल में बर्न्स वार्ड के दरवाजे पर अचानक उन्हें एक अजनबी मिला। उसने कहा कि वह उनकी मदद करने के लिए आया था, उसने सभी दस्तावेज लिए और शाम को वापस लौट आया, बच्चे और उसके माता-पिता को सिनसिनाटी जाने की चमत्कारिक मंजूरी के साथ। एम्बुलेंस की शुरुआत से ले कर बाकी सारी व्यवस्थाएं की गई, और आखिरकार, परिवार सही समय पर, ज़ककारी के जीवन का बचाने के लिए सिनसिनाटी अस्पताल पहुँच गया।

लेकिन इस चमत्कार के लिए ही टेपेस्ट्री के दूसरे छोर पर धागे बुने गए थे... उस समय यहां से बहुत दूर, इवान्स्टन में, रोटरी मुख्यालय के भीतर। रो ई अध्यक्ष कार्यालय के फोन बजने से ये शुरू हुआ; तत्कालीन पदाधिकारी रवींद्रन ने फोन उठाया और उधर से रो ई स्टाफ के एक सदस्य की आवाज़ आई, जिसने मंगोलिया में अपने दोस्त के गंभीर रूप से बीमार पोते को बचाने के लिए दारुण विनती की। ''उसने कहा: आप रोटरी अध्यक्ष हैं और आप के लिए ये बिलकुल आसान है। वास्तव में मुझे नहीं पता था कि इसमें कितना सच था,'' रवींद्रन ने एसेम्बली को बताया।

लेकिन उन्होंने कोशिश करने का आश्वासन दिया; हांगकांग में उस क्षेत्र के मण्डलाध्यक्ष पीटर पेंग से संपर्क किया। रात बहुत हो चुकी थी, लेकिन डीजी ने भी पूरी सहायता के लिए आश्वस्त किया। सुबह तक, डीजी, मंगोलिया में रोटरी क्लब उलानबाटर के अध्यक्ष से सम्पर्क कर चुके थे, जिन्होंने सरकार में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बात कर एयरलाइन से, बच्चे को ले जाने के निर्देश देने के लिए कहा। वहाँ के अन्य रोटेरियन्स अस्पताल पहुंचे, औपचारिकताओं को पूरा किया और ''यहां इवान्स्टन में, हमारे स्टाफ के सदस्य देर रात तक रुके रहे, एक चिकित्सा की दृष्टि से नाजुक बच्चे के लिए विशेष टिकट बुक की गई। एयरलाइंस के अधिकारी ने हवाई अड्डे पर फोन कर कहा, ये वीआईपी यात्री हैं- उनका अच्छी तरह से ख़याल रखना।''

रवींद्रन ने आगामी डीजी को अत्यंत महत्वपूर्ण पैग़ाम दिया: ''उस दिन हम सबके हाथों में सिर्फ़ एक ही धागा था। लेकिन उस एक धागे पर, दूर मंगोलिया में एक परिवार की पूरी दुनिया टिकी हुई थी। और अगले साल, आप के हाथों में भी धागे होंगे जिन पर पूरी दुनिया निर्भर कर सकती है। उन्हें मजबूत और अच्छी तरह से बुनना, आपका काम होगा।''

उन्हें, उनके लिए बनाई गई योजनाओं का अनुसरण करना होगा, अपने पूर्ववर्तियों के काम को आगे बढ़ाना और ''उन लोगों के लिए जमीन तैयार करनी होगी जो आने वाले समय में एक साथ, सेवा की एक विशाल टेपेस्ट्री बुनने के लिए आगे आएंगे।'' उन्हीं के कार्यों पर, ऐसे संकट में पड़ने वालों का भविष्य निर्भर करेगा। इस एक वर्ष, आपको अपने कार्यालय का महत्व समझना होगा- आपके पास जितना समय है, उसमें जितना ज़्यादा कर सकते हैं - करना होगा, उनके लिए, जो आपका इंतज़ार कर रहे हैं। उसी लालसा, उमंग और विशिष्टता के साथ, जैसे सिर पर तलवार लटकी हो।''

रवींद्रन ने खुलासा किया कि जब उन्होंने पीछे मुड़ कर, अपने आप को रोटरी अध्यक्ष के रूप में देखा, ''ईमानदारी से कह रहा हूँ , मैंने कभी नहीं सोचा था कि यह इतना मुश्किल होगा।

यह अत्यंत ही दुष्कर था, थकाऊ था, वे मेरे जीवन के सबसे मुश्किल वर्ष थे।'' तो उन्होंने रोटरी से विश्राम करने के लिए एक लंबी छुट्टी ली और वापस घर जाने के लिए फ्लाइट पकड़ी; मैंने अपने आप से कहा, ''मैंने वो सब किया जो मैं करना चाहता था। मशाल को आगे सौंप दिया गया है। मेरा काम ख़त्म हुआ। लेकिन फिर रोटरीयन का काम उसके साथ घर तक आ गया।''

और उन्होंने नए दृष्टिकोण से एक परियोजना देखी जिसे उनके क्लब, आर.सी. कोलंबो ने एक दशक पहले किया था - कोलंबो में रोटरी कैंसर डिटेक्शन सेंटर, जहां 40,000 महिलाओं को गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर की जांच की गई थी और

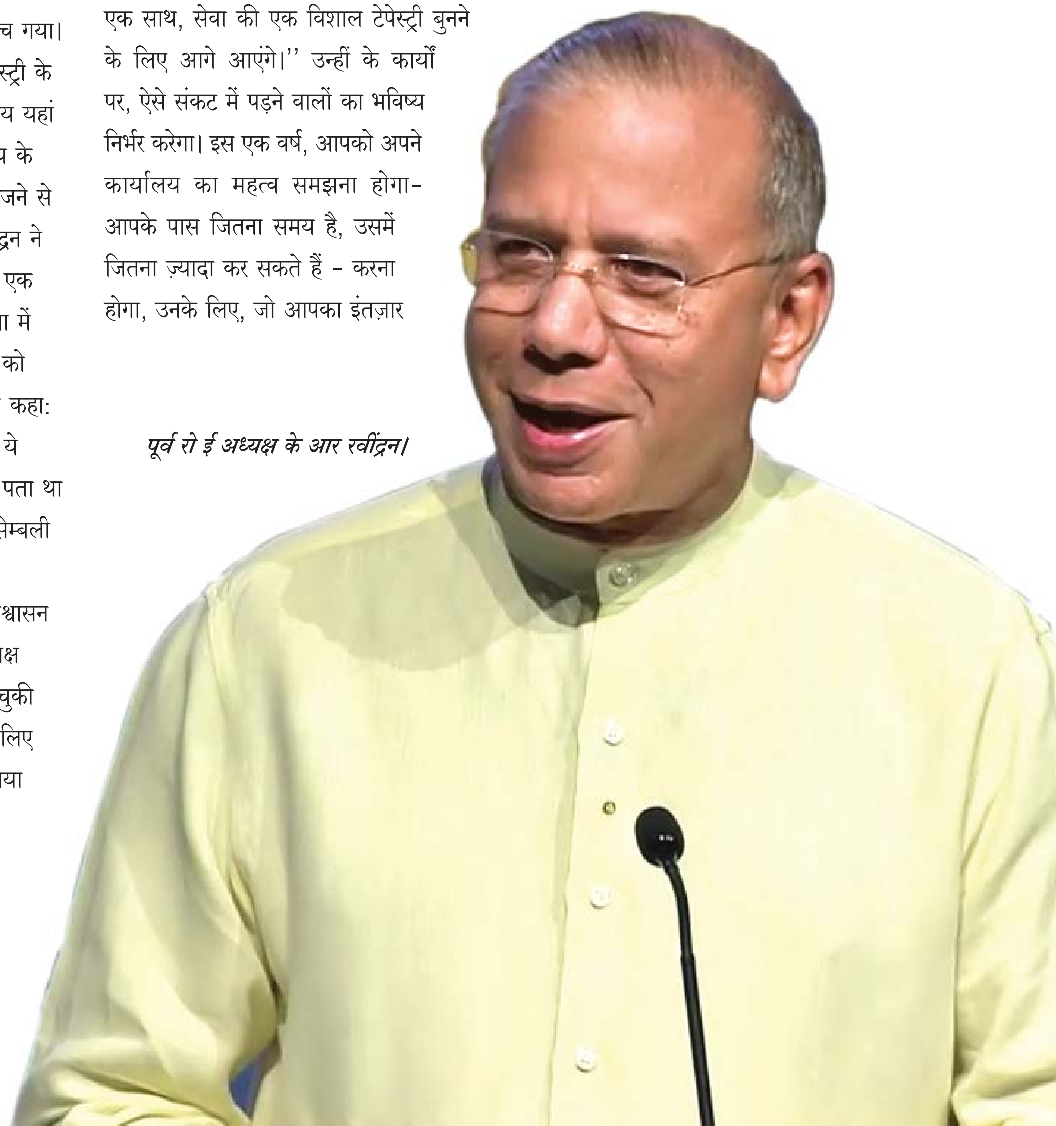

पूर्व रो ई अध्यक्ष के आर रवींद्रन।

7,000 से अधिक को सकारात्मक पाए जानेके बाद, उपचार के लिए आगे भेज दिया गया । सभी क्लब सदस्य, अपनी सफलता में हमेशा इन दो आंकड़ों का हवाला दिया करते थे।

लेकिन दूसरी ओर, नए दृष्टिकोण से , एक और आंकड़े ने उनका ध्यान खींचा कि श्रीलंका में हर साल 2,000 महिलाओं का गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर का निदान किया जाता है, और उनमें से लगभग आधी महिलाओं की मृत्यु हो जाती है। एचपीवी वायरस की वजह से उत्पन्न हुए लगभग सभी संक्रमणों को, टीकाकरण के माध्यम से रोका जा सकता था।

यहां से जन्म लिया एक नई परियोजना ने - देश में 15 से 18 वर्ष की हर लड़की के टीकाकरण की और 35 से 60 साल की प्रत्येक महिला की जांच की। अब क्लब टीआरएफ और श्रीलंका सरकार के साथ मिलकर टीके के संयुक्त निधिकरण, रोकथाम और शिक्षा पर व अपने देश को गर्भाशय ग्रीवा के कैंसर से मुक्त करने के लिए काम करेगा।

मण्डलाध्यक्षों को संबोधित करते हुए,पूर्व रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म ने, ''विशाल स्तर पर स्थायी परियोजनाएं करने पर जोर दिया जिससे अधिक से अधिक व्यक्ति प्रभावित हों'' विभिन्न श्रेणी के संगठनों से सहभागिता कर।

उन्होंने कहा कि दुनिया को, ''पहले से कहीं ज़्यादा, रोटरी की ज़रुरत, आज है ; हमारे साहस, हमारे आशावाद और आदर्शवाद की। इसे सहिष्णुता, सहयोग और आशा की उस आवाज़ की ज़रुरत है जो हम दे सकते हैं, और इन सब से

इस एक वर्ष, आपको अपने कार्यालय का महत्व समझना होगा– आपके पास जितना समय है, उसमें जितना ज़्यादा कर सकते हैं – करना होगा, उनके लिए, जो आपका इंतज़ार कर रहे हैं।

पूर्व रो ई अध्यक्ष
के आर रवींद्रन

ऊपर उस संगठन के दृष्टान्त की, जिसने साबित कर दिया है कि सभी देशों के नागरिक, मिलजुल कर सफलतापूर्वक काम कर सकते हैं।''

रोटेरियन उनके द्वारा किये गए कामों का प्रभाव नहीं जानते। पत्नी ज्युडी के साथ बेरूत यात्रा के दौरान पीडीजी जमिल मोआवाद से मिल कर वो काफी प्रभावित हुए। दूषित पानी पीने से बीमार हो रहे छात्रों को देखकर, उन्होंने लेबनान के सभी रोटेरियन को, सरकार, निजी व्यापारसंघों और टीआरएफ को साथ लिया। आज 700 स्कूलों में शुद्ध पेयजल उपलब्ध है और लक्ष्य है लेबनान के सभी स्कूलों तक पहुंचना। पानी पीते हुए बच्चों के चेहरे पर, मुस्कराहट देखना सबसे संतोषजनक था।

ज़रूरी नहीं की परिवर्तनकारी प्रोजेक्ट की लागत हमेशा बहुत ज्यादा हो, ज़्यादा भागीदार हों या फिर बहुत सारे रोटेरियन शामिल हों। इससे एक युवा उद्यमी, सहज रूप से व्यवसाय शुरू करने का तरीका सीख सकता है, ऋण ले सकता है और स्वयं व अपने परिवार के जीवन में परिवर्तन ला सकता है।

अपनी रोटरी यात्रा के दो वर्षों में, उन्होंने कई बार देखा कि सर्वोत्तम परियोजनाओं में कुछ चीजें तो समान थीं:

उन पर अच्छी तरह से शोध किया गया था और योजनाबद्ध तरीके से निष्पादित किये गए थे

- समाज में स्वाभाविक जरूरतों को संबोधित किया, न कि रोटेरियंस के पूर्वकल्पित विचारों को ।
- योजना से लाभान्वित होने वालों को शामिल किया, उनके विचारों और प्रतिक्रियाओं को सुना, और स्थानीय चुनौतियों को ध्यान में रखा गया।
- दीर्घकाल तक चलने वाले थे; आने वाले वर्षों में वे सार्थक रूप से जीवन में परिवर्तन लाते रहेंगे।

ग्वाटेमाला में एक परियोजना का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने उस क्षेत्र के अत्यन्त निर्जन देहाती समुदाय का दौरा किया जहां एक्स-रे सुविधा, ऊबड़ खाबड़ और खराब सड़कों पर 6 से 8 घंटे की दूरी पर उपलब्ध थी। अगर क्लिनिक समस्या का निदान नहीं कर पाता था ''तो वो रोगियों की शर्ट या ब्लाउज की जेब में कागज़ का एक टुकड़ा रख देते और रोगियों

दुनिया को,पहले से कहीं ज़्यादा, रोटरी की ज़रुरत, आज है ; हमारे साहस, हमारे आशावाद और आदर्शवाद की। इसे सहिष्णुता, सहयोग और आशा की स आवाज़ की ज़रुरत है जो हम दे सकते हैं।

पूर्व रो ई
अध्यक्ष जॉन जर्म

को अस्पताल भेज देते, जिस पर लिखा होता था मरोग के लक्षण नहीं पता।''

फिर रोटरी ने एक प्रोजेक्ट के तहत वहां एक डिजिटल एक्सरे मशीन लगाईं जिस से उस समुदाय की चिकित्सकीय देखभाल में ज़बरदस्त परिवर्तन आ गया। ''लोग इतने खुश थे कि उन्होंने सचमुच सड़कों पर उत्सव मनाया। उस मशीन का मतलब था कि अब डॉक्टर उनकी देखभाल कर सकता है और वे भी एक-दूसरे की देखरेख कर सकेंगे।'' वो अकेला क्लिनिक ग्रामीण इलाके के 29 गांवों में दस लाख लोगों के काम आ रहा था।

गवर्नर्स के रूप में, उन्हें काम करने के लिए उस दृष्टि की आवश्यकता होगी, जो परिवर्तनकारी भिन्नता लाये; ''देखिये गलत क्या हो रहा है और आप किन किन कारणों का समाधान कर सकते हैं। एक हफ्ता भी ऐसा नहीं गुज़रता जब मैं किसी चीज को देख कर ये नहीं सोचता कि, इसके लिए रोटरी का प्रोजेक्ट तैयार है,'' जर्म ने कहा।

उन्होंने एक ऐसी संभावित परियोजना का ज़िक्र किया, जहां किसानों के लिए पर्यावरण के अनुकूल एक ऐसे तरीके की खोज, जिस में किसान अपने खेतों में से फसल की कटाई के बाद ठूँठ को दूर कर सके। अभी वे इसे जला रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप धुएं और धुंध की इतनी खराब और मोटी परत बनती है कि लोग साँस नहीं ले सकते और विमानों को भी जमीन पर नहीं उतार सकते। ''रोटेरियन के रूप में हम जरूरतों को देखते हैं, लेकिन क्या हमारे पास उन्हें हल करने की दूरदर्शिता है? हम केवल हमारी कल्पना तक ही सीमित हैं,'' उन्होंने कहा। ■

साइकिल का उत्सव मनाते हुए, रोटरी की शैली में

टीम रोटरी न्यूज़

एक मॉल में एक साइकिल प्रोटोटाइप प्रदर्शना।

क्या आपने कभी सोचा है कि सर्वव्यापी साइकिल का सबसे-पहला प्रोटोटाइप कैसा दिखता था?

अगर आप हाल ही में बेंगलुरु में थे तो आपने सन 1817 ईस्वी में जर्मन बैरन कार्ल वॉन ड्रेज.द्वारा आविष्कार किए गए 'डेंडी घोडे' की एक प्रतिकृति को देखा होगा, जिसे शहर के मॉल में प्रदर्शन के लिए रखा गया था।

यह रोटरी क्लब, बेंगलूर कोरमंगलला, मंडल 3190 द्वारा आयोजित समारोहों का हिस्सा था, जिसका आयोजन साइकिल के आविष्कार के 200 वर्ष व्यतीत होने की स्मृति में किया गया था। क्लब ने एक रोड्शो का भी आयोजन किया जहां बैंगलोर के आसपास के स्थानों तक प्रतिकृतियों को ले जाकर दिखाया गया। इस कार्यक्रम ने रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढ़ाने में योगदान दिया क्योंकि यह जन-साधारण का ध्यान आकर्षित करने के साथ ही मीडिया का ध्यान आकर्षित करने में सफल रही थी।

दो साइकलो थॉन

क्लब ने 'ज़रूरतमदों के लिए साइकिल' परियोजना को बढावा दिया, जहां गैर सरकारी संगठनों की मदद से उन्होंने लाभार्थियों जैसे कि किसान, चाय विक्रेताओं, घरेलू नौकर, पहरेदार और छात्रों की पहचान की, जिन्हें प्रतिदिन यात्रा के लिए दोपहिया वाहन की आवश्यकता होती है। अब तक, क्लब ने लगभग 60 लाभार्थियों को बुनियादी मॉडल वाला साइकिल प्रदान किया हैं।

इसके अलावा, क्लब ने रोटरी क्लब चैनपाटना के साथ दो साईक्लोथोन का भी आयोजन किया गया, जहां अन्य क्लबों के रोटेरियन, रोटरी सायक्लिंग फैलोशिप के सदस्य और आरएसी ज्योति निवास कॉलेज रोट्रैक्टर ने भाग लिया था। प्रत्येक भागीदार को शहर में एक पौधा लगाने का कार्य सौंपा गया। अब तक, आरसीबीके ने शहर और इसके उपनगरीय क्षेत्रों में 600 से अधिक पौधे लगाए हैं। ■

बाएं : क्लब अध्यक्ष जेनेट येग्रेश्वरन, सचिव गणेश प्रभु मंडल वाइस गवर्नर बी एन प्रसन्नकुमार, डीजी आशा प्रसन्नकुमार ए जी एन रवींद्रनाथ और सचिव प्रकाश बेलावाडी, लाभार्थीयों को साइकिल सौंपते हुए।

ब्लैकबोर्ड से डिजिटल बोर्ड तक

रशीदा भगत

रोटरी इंडिया लिटरेसी मिशन (RILM) द्वारा पुणे में आयोजित किये गए रोटरी ई-शिक्षा मिशन के लोकार्पण समारोह में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने कहा, ''जिस प्रकार हमारी सरकार ने एलईडी बल्बों की कीमत में कमी की है उसी प्रकार हम डिजिटल बोर्ड की कीमत कम करेंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि भारत के प्रत्येक स्कूल में कम से कम एक डिजिटल बोर्ड हो।''

शुरुआत से ही इस बात को स्पष्ट करते हुए कि शिक्षा केवल सरकार की अकेले की जिम्मेदारी नहीं हो सकती और यह कि समस्त भारत में पूर्ण एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल तभी संभव है जब नागरिक हिस्सा लेंगे, उन्होंने पीआरआईडी शेखर मेहता की अध्यक्षता वाले RILM की ई-शिक्षण पहल का स्वागत किया। बहुत से लोग इस बात को नहीं जानते होंगे कि महाराष्ट्र में, वे दूरस्थ एवं ग्रामीण इलाकों में पदस्थ प्राथमिक शिक्षक थे जिन्होंने ई-शिक्षण क्रांति की शुरुआत की थी। ''हमारे देश में बहुत सी अच्छी चीज़ों की तरह, यह डिजिटल क्रांति भी सरकार की सहभागिता के बिना हुई। एक परियोजना तभी सफल होती है जब समुदाय उसमें सम्मिलित होता है,'' उन्होंने कहा।

जावड़ेकर ने कहा कि 1960 के दशक में, 'ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड' एक प्रसिद्द नारा था। ''लेकिन आधुनिक समय की जरूरत को ध्यान में रखते हुए, हम प्रत्येक कक्षा में एक 'डिजिटल बोर्ड' प्रदान करना चाहते है।''

रोटरी की प्रत्यय

मंत्री ने याद किया कि कुछ वर्ष पूर्व, उनके करीबी मित्र पीडीजी प्रमोद जेजुरिकर ''मेरे पास आये और रोटरी द्वारा ई-शिक्षण में दिलचस्पी लेने की

शिक्षा केवल सरकार की अकेले की जिम्मेदारी नहीं हो सकती समस्त भारत में पूर्ण एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केवल तभी संभव है जब नागरिक हिस्सा लेंगे।

HRD मंत्री प्रकाश जावेड़कर

बात कही, मैंने सोचा बहुत से लोग हमारे पास आकर बड़ी योजनाओं की बात करते है; फिर वास्तव में कुछ भी नहीं होता। लेकिन क्योंकि वह रोटरी थी, इसलिए कुछ विश्वसनीयता थी। और सरकार को हर चीज़ को करने के लिए साझेदारों की आवश्यकता होती है, इसलिए रोटरी से बेहतर साझेदार कौन हो सकता है।'' इस वजह से, पिछले वर्ष चेन्नई में दक्षिण एशिया साक्षरता सम्मेलन में उनके मंत्रालय ने रोटरी के साथ महाराष्ट्र के 18,000 स्कूलों में ई-शिक्षण लाने के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया।

सभा को संबोधित करते हुए, पीआरआईडी मेहता ने कहा कि ''यह रोटरी के लिए एक ऐतिहासिक पल है क्योंकि यह विशाल कार्यक्रम भारत में 40 लाख से अधिक बच्चों को प्रभावित करेगा। और कार्यक्रम की लागत रु 75 करोड़ से अधिक है। पोलियो को छोड़कर, क्या आपने भारत में रोटरी में रु 75 करोड़ की लागत का कोई कार्यक्रम देखा है?''

उन्होंने मानव संसाधन विकास मंत्री को आश्वस्त किया कि यह तो केवल शुरुआत थी। ''महाराष्ट्र सरकार के साथ 18,000 स्कूलों के अलावा, हमने पिछले माह मध्य प्रदेश सरकार के साथ 30,000 स्कूलों एवं पंजाब सरकार के साथ 20,000 स्कूलों के लिए समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है और हरियाणा के मुख्यमंत्री ने कहा कि चलिए 2,000 स्कूलों से शुरुआत करते है और हम इसे आगे ले जायेंगे।''

मूल रूप से, लक्ष्य भारत के हर स्कूल में ई-शिक्षण को पहुंचाना था, ''लेकिन इस अभियान ने तब गति पकड़ी जब हमने महाराष्ट्र के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया। संयुक्त रूप से, इस कार्यक्रम की लागत 150 करोड़ है। रोटरी में समय बदल गया है, हमें अब बड़ा, साहसिक एवं बेहतर सोचना होगा। इस कार्यक्रम के माध्यम से हम एक लाख स्कूलों तक पहुंचेंगे, और यदि हम हर स्कूल में बच्चों की औसत संख्या को 200 माने, तो इस कार्यक्रम से 2.5 करोड़ बच्चे प्रभावित होंगे।''

मेहता ने कार्यक्रम में उपस्थित महाराष्ट्र के शिक्षा सचिव नंद कुमार को ''आपके द्वारा किये जाने वाले कार्यों की गति के लिए धन्यवाद'' दिया। साथ ही उन्होंने इनर व्हील को भी धन्यवाद दिया जिसने TEACH परियोजना की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए रोटरी के साथ एक बड़े रूप में साझेदारी की।

10,000 शिक्षकों का प्रशिक्षण

10,000 स्कूलों को 10,000 टेबलेट देने हेतु राज़ी होने के लिए उन्होंने रोटरी क्लब पुणे नार्थ को भी धन्यवाद दिया। साथ ही, राकेल श्रॉफ की अध्यक्षता में ICEDC 10,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए सहमत हो गया है। पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा स्वीकृत कर लिया गया है। ''इसमें पूरा पैसा रोटरी द्वारा लगाया जायेगा, नंद कुमार जी को केवल हमें 10,000 शिक्षकों के नाम देने है। हम पूर्व रोई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी के पूर्णतः साक्षर भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार है, लेकिन कृपया

दाएं से : पीआरआईडी शेखर मेहता, यूनियन एचआरडी मंत्री प्रकाश जावड़ेकर, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी और पीआरआईडी अशोक महाजन।

यदि एक स्कूल एक झुग्गी में बच्चों को सस्ती शिक्षा प्रदान करता है, तो इस बात का क्या महत्व कि उसका मैदान बड़ा है या नहीं? अभिभावकों को यह तय करने दीजिये कि उनके लिए क्या महत्व रखता है।

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी

कन्या शिक्षा पर बेनर्जी के विचार

पुणे में ई-शिक्षा कार्यक्रम के लोकार्पण को संबोधित करते हुए, पूर्व रोई अध्यक्ष कल्याण बेनर्जी ने बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए ''एक जोशीला अनुनय किया और कहा कि न्यायसंगत रोष को प्रकट करने से आगे बढ़ने का समय आ गया है।''

इस बात को बारम्बार दोहराते हुए कि वह संपूर्ण दक्षिण एशिया में बालिका शिक्षा के लिए बोल रहे है, उन्होंने कहा कि केवल ''शिक्षा ही उनका एक उचित दांव है, गरीबी से बाहर निकलने का एक रास्ता।'' शिक्षा से उन्हें वंचित करने का मतलब होगा कि महिलाएं ''ज़मीन पर काम तो कर सकती है लेकिन उसका लेनदेन नहीं कर सकती।'' इसलिए गरीबी महिला-केन्द्रित है, और विश्व नेताओं को कार्यवाही करने की आवश्यकता है यह सुनिश्चित करने के लिए कि 2030 तक शिक्षा तक विश्वव्यापी पहुँच, संवहनीय विकास लक्ष्यों में तय किया गया लक्ष्य, लड़कियों के लिए भी वास्विकता बन सके।

इन सब के अन्याय पर न्यायसंगत क्रोध को प्रकट करने के बजाय, ''उस हिंसा - शारीरिक, भावनात्मक एवं कानूनी - पर नाराज़गी प्रकट करने की आवश्यकता है जो लड़कियों के खिलाफ ऐसे अन्याय को कायम रखती है। लेकिन आशा की उम्मीद भी है। क्योंकि शोध स्पष्ट है - आंकड़ों में साफ़ और आधार पर प्रमाणित - कि लड़कियों की शिक्षा में पैसा लगाना दान नहीं बल्कि निवेश है, और इसके प्रतिफल परिवर्तनकारी है।''

लड़कियों को केवल एक अतिरिक्त साल की पढ़ाई करने दीजिये और उनका वेतन 12 प्रतिशत से बढ़ जायेगा। ''उनको लड़को के जितनी तालीम दीजिये, और चीज़ें वास्तव में बदलना शुरू हो जाएगी। शिक्षा में लैंगिक अंतर को मिटाने से दक्षिण एशिया के प्रगतिशील देशों में प्रतिवर्ष 112 बिलियन डॉलर से 152 बिलियन डॉलर उत्पन्न हो सकते है। जब आप लड़कियों एवं महिलाओं में निवेश करते है, वे ऊपर उठकर उनके परिवारों, समुदायों, अर्थव्यवस्थाओं एवं देशों को आगे ले जाती है। वे आगे बढ़ती है-और नेतृत्व करती है।''

उन्होंने आगे कहा कि इन देशों में, 130 मिलियन लड़कियाँ है जो ''हमारे संयुक्त कार्यो को एक साथ लाने, बेहतर नीतियों हेतु ज़ोर देने और राजनीतिज्ञों से अधिक करने एवं कार्यों में अधिक पैसा लगाने का अनुरोध करने के लिए महिलाओं एवं पुरुषों पर निर्भर है। मंत्री (जावड़ेकर) महोदय, भारत को रास्ता दिखाने दीजिये।''

अनिश्चितता की स्थिति

बेनर्जी ने कहा कि भारत में ''शिक्षा अनिश्चितता की स्थिति में है।'' सरकार इसमें बहुत सारा पैसा लगाती है, लेकिन सभी जगह वांछित परिणाम नहीं मिलते है। हाल ही की एक एनुअल स्टेटस ऑफ़ एजुकेशन रिपोर्ट (ASER), जिसे स्वयं सरकार द्वारा कुछ हद तक निराशाजनक'' बताया गया, बताती है कि पांचवी कक्षा के 52 प्रतिशत विद्यार्थी दूसरी कक्षा की किताबें नहीं पढ़ सकते। और आंठवी कक्षा के 58 प्रतिशत छात्र सरल विभाजन नहीं कर सकते, शिक्षकों की अनुपस्थिति काबू से बाहर थी। साथ ही, सस्ते निजी स्कूलों की तुलना में, सरकारी शिक्षकों को काफी अधिक वेतन मिलता है और उन्हें लगभग आजीवन नियुक्ति मिलती है। ''उनके पास कोई वजह नहीं है कि वे उत्कृष्टता के लिए प्रयत्न करें या गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करें। कैसे उन्हें कोई उत्तरदायी ठहराएं, और इस बात को सुनिश्चित करें कि हमारा पैसा बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जा रहा है? इसका एक हल है स्कूल वाउचर। इस व्यवस्था को यूएस में प्रसिद्धि मिल रही है। क्या यह यहाँ काम कर सकता है, मुझे शक है।''

वाउचर व्यवस्था में, सरकार, सरकारी स्कूलों को पैसा देने के बजाय, अभिभावकों को वाउचर देती है जो उनके बच्चों के लिए सर्वश्रेष्ठ स्कूल को चुनते है, और वहाँ अपना वाउचर जमा कर सकते है। वह स्कूल फिर वाउचर को सरकार को देता है और उसे शिक्षकों को भुगतान करने के लिए पैसा मिलता है।

यह व्यवस्था सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के प्रेरकों को बदल देती है। ''उन्हें अब काम करना होगा, और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देनी होगी, वरना अभिभावक अपने बच्चों को कहीं और ले जायेंगे। प्रतियोगिता जवाबदेही लाती है। यह अभिभावकों को भी चुनाव करने की क्षमता देती है; वे चुन सकते है कि उनके बच्चों के लिए क्या श्रेष्ठ है। संक्षेप में कहे तो, सरकार स्कूलों में पैसा लगाने, जैसा अभी होता है, के बजाय पढ़ाई में पैसा लगाएगी,'' बेनर्जी ने कहा।

उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने हमेशा से समुदायों में छोटे, स्वयंसेवकों द्वारा संचालित निजी स्कूलों की स्थापना में सहायता की है। ''70 सालों से, हमने उन बातों पर नियम बनाये जो निजी स्कूलों को वर्जित या हतोत्साहित करते है, विशेषरूप से गरीबों के लिए। यदि एक स्कूल एक झुग्गी में बच्चों को सस्ती शिक्षा प्रदान करता है, तो इस बात का क्या महत्व कि उसका मैदान बड़ा है या नहीं? अभिभावकों को यह तय करने दीजिये कि उनके लिए क्या महत्व रखता है।''

सेंटर फॉर सिविल सोसाइटी जैसे संगठनों ने प्रमाण प्रस्तुत किये है कि कैसे संपूर्ण भारत में झुग्गियों एवं गाँवों में रहने वाले हज़ारों गरीब मां-बाप उनके बच्चों को एक मुफ्त सरकारी स्कूल में भेजने के बजाय एक सस्ते निजी स्कूल में भेजना पसंद करते है। ''मेरा मानना है कि एक बाजार में, मुनाफा ही सबसे अच्छा प्रलोभन है। आख़िरकार, दूसरों को मूल्य देकर ही आप लाभ कमा सकते है। 1950 एवं 1960 के दशक में जब मैं बड़ा हो रहा था, दूरसंचार, हवाई सेवा और शिक्षा सभी पर सरकार का एकाधिकार था, और वह, जैसे हम सभी जानते है, खराब गुणवत्ता की सेवाएं देती थी। आज, उन में से दो हवाई सेवा और दूरसंचार, निजी खिलाड़ियों को स्वतंत्र रूप से प्रतियोगिता करने की छूट देते है, और प्रतियोगिता एवं मुनाफे के कारण, हम लोग खुशहाल स्थिति में है।'' लेकिन ऐसा शिक्षा के लिए नहीं किया गया, ''जो हमारे राष्ट्र की तरक्की के लिए इतनी महत्वपूर्ण है,'' बेनर्जी ने आगे कहा।

दाएं से : डी जी व्येंकटेश चन्ना, पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी, पीआरआईडी अशोक महाजन, पीडीजी गोपाल मंदानिया, विनय कुल्कर्णी और प्रशान्त देशमुख। पिछली श्रेणी : पीडीजी ज़ुबिन अमरिया और रत्ना प्रभाकर एन्नी।

हमें साक्षरता के लिए सरकार का पसंदीदा साझेदार बना दीजिये।''

वयस्क साक्षरता और पुस्तकालयों के निर्माण के अलावा, RILM कौशल विकास पर भी काम कर रहा था और पिछले महीने ही पीआरआईपी बेनर्जी ने लन्दन में लूम्बा फाउंडेशन के चेरी ब्लेयर के साथ समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया जिसके अंतर्गत 30,000 विधवाओं को रोजगार के लिए प्रशिक्षित किया जायेगा।

सभा को संबोधित करते हुए, बेनर्जी ने कहा कि भारत को शीघ्र-अतिशीघ्र साक्षर बनाने के लिए भारत के रोटरी क्लब भारत सरकार के साथ हाथ मिलाने एवं उनकी सहायता करने के लिए प्रतिबद्ध रहे है। ''भारत को साक्षर बनाने में मदद करना प्रक्रिया का एक अहम कदम है और इसमें महाराष्ट्र देश के अन्य राज्यों से काफी आगे है।''

भारत में डिजिटल तकनीक के विकास के कारण, स्कूलों में शिक्षण की धारणाएं बदल चुकी है। ''पारंपरिक चाक और बातचीत पद्धति ने अधिक संवादात्मक शिक्षण पद्धतियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया है क्योंकि तकनीकी परिवर्तनों के साथ स्वयं को बराबर रखने के लिए स्कूल तेजी से डिजिटल समाधानों को अपना रहे है।'' वर्तमान पीढ़ी के विद्यार्थियों को लैपटॉप, आई-पेड एवं स्मार्टफ़ोन में अनुभवी होने की वजह से, ये अभिनव शिक्षण पद्धतियाँ विद्यार्थियों की अधिक सहभागिता को सुनिश्चित करती है, उन्होंने कहा।

लड़कियों की शिक्षा में पैसा लगाना दान नहीं बल्कि निवेश है, और इसके प्रतिफल परिवर्तनकारी है।

पीआरआईपी कल्याण बेनर्जी

आज, हजारों स्कूलों द्वारा इसे अपनाए जाने एवं शिक्षकों को भी डिजिटल रूप से दक्ष किये जाने के साथ-साथ भारत के अधिकतर राज्य डिजिटल शिक्षा में संलिप्त है। ''रोटरी में हमारा ऐसा मानना है कि शिक्षा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण पहलू है अच्छे शिक्षक; यह हमारी अत्यावश्यकता है,'' उन्होंने प्रभावपूर्ण ढंग से कहा।

महाराष्ट्र शिक्षा सचिव नंद कुमार ने कहा कि डिजिटल साक्षरता के रूप में एक बड़ी क्रांति पूरे राज्य में फ़ैल रही है। ''हमारे पास 66,000 सरकारी स्कूल है और इनमें से, 63,458 स्कूलों की कम से कम एक कक्षा डिजिटल बन गई है। इसके साथ ही, राज्य के पास जो 3 लाख शिक्षक है, उनमें से 1.6 लाख शिक्षक, जिनमें से बहुत से यहाँ बैठे हुए है, स्वयं को तकनीकी जानकार घोषित कर चुके है।'' यह सरकार की नहीं बल्कि लोगों की परियोजना है, और इन साधनों पर खर्च किये गए रु 350 करोड़ कॉर्पोरेट एवं सामुदायिक सामाजिक जिम्मेदारी दोनों से आये है। और यह सब कुछ रोटरी के नेतृत्व के कारण संभव हुआ है।

ई-शिक्षण के माध्यम से हम एक लाख स्कूलों तक पहुंचेंगे, और 2.5 करोड़ बच्चे प्रभावित होंगे।

पीआरआईडी शेखर मेहता

पीआरआईडी अशोक महाजन ने कहा कि शिक्षण प्रणाली में मूलरूप से परिवर्तन हुआ है और नई तकनीक शिक्षण को अधिक प्रभावी एवं रोचक बना रही है। सर्वेक्षणों में पाया गया है कि ई-शिक्षण के आरम्भ होने के बाद से स्कूलों में नामांकन एवं उपस्थिति में बढ़त हुई है। उपस्थिति 15 प्रतिशत से बढ़ी है जो इस बात को साबित करती है कि स्कूलों में उपस्थित होने के लिए प्रेरक के रूप में डिजिटल शिक्षण, शिक्षा को मनोरंजक बनाकर जल्द ही मध्याहन भोजन की जगह ले लेगा।

डीजी अभय गाडगिल (मंडल 3131), डीजी प्रफुल्ल शर्मा (3141) और डीजी व्यंकटेश चन्ना (3132) ने कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

चित्र: रशीदा भगत

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

सदस्यों को जोड़ने के लिए अतिरिक्त प्रयास करना

जयश्री

पीआरआईडी फ्रेडरिक लिन, एक बच्चे को पोलियो की बूंद देते हुए। डीजीएन ए ज़मिर पाशा, पीडीजी पी वी पार्थसारथी और सम्मेलन के सचिव एम सी संतोश भी चित्र में मौजूद हैं।

मंडल 3000 के वार्षिक सम्मेलन ने रोटेरियन के बीच प्रचुर मात्रा में उत्साह और और प्रेम का संचार किया, और ताइवान से आए पीआरआईडी फ्रेडरिक लिन को टिप्पणी करने के लिए प्रोत्साहित किया, उन्होंने कहा, ''यह एक भारतीय विवाह में भाग लेने जैसा है। यहाँ चारों ओर बहुत ही भव्यता और स्नेह देखने को मिलता है। और सब से ऊपर, रोटरी का उत्सव यहां पर सबसे अच्छा है।'' वह मदुरै में आयोजित सम्मेलन में आरआई राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के तौर पर उपस्थित थे। डीजी पी गोपालकृष्णन के विषय - *अतिरिक्त मील जाएं और सेवा करें* (GEMS) - की ओर संकेत करते हुए, उन्होंने टिप्पणी कि यह कार्यक्रम निश्चित रू प से ''सदस्यों को जोड़ने की दिशा में अतरिक्त प्रयास'' है।

रो ई निदेशक सी भास्कर, पीआईआईडी फ्रेडरिक के साथ।

वह दिन एक पोलियो एनआईडी था, जिसके कारण, डीजी के साथ, उन्होंने स्थल पर कुछ बच्चों को पोलियो के दवा की कुछ बूंदें पिलाई।

उन्होंने अधिक से अधिक महिला सदस्यों को शामिल करने के लिए आरआई अध्यक्ष इयन राय्सली के आह्वान को प्रतिध्वनित करते हुए, उन्होंने कहा, ''हमें महिला सदस्यों को आकर्षित करने के लिए अवश्य ही रोटरी को बेहतर बनाना चाहिए। वर्तमान में उनकी सदस्यता संख्या कुल सदस्यता का केवल 34 प्रतिशत है जो बहुत ही कम है।'' रोटरी में युवा सदस्यों को शामिल करने पर जोर देते हुए उन्होंने कहा, ''हमें युवा सदस्यों को लगातार आकर्षित करने और शामिल करने के लिए नए और बेहतर तरीकों को अपनाना चाहिए ताकि हम लगातार रोटरी के लिए नए पीढ़ी के सदस्यों और नेताओं को पनपने के लिए तैयार कर सकें। 2016 सीएलएल सदस्यों को जोड़ने और बैठकों को आयोजित करने में अधिक लचीलापन प्रदान करता है।''

समुदाय सबसे पहले

तमिल में बोलते हुए, आरआई के निदेशक सी भास्कर दर्शकों के साथ दिल से जुड़ गए। उन्होंने वर्ष

1991-92 में आयोजित मंडल सम्मेलन को याद किया जब वह रोटरी क्लब करूर के अध्यक्ष थे। ''उस समय तो केवल 32 क्लब थे लेकिन फिर भी सम्मेलन एक परिवार की तरह - एक साथ हुआ करता था। और आज 120 क्लबों के साथ, यह अभी भी शानदार है।'' उन्होंने वक्ताओं और कार्यक्रमों के चयन के लिए डीजी गोपाल और सम्मेलन के अध्यक्ष वी रमेश को बधाई दी।

स्थानीय समुदाय की जरूरतों के पूरा करने के लिए अपने विचारों को दोहराते हुए निर्देशक भास्कर ने कहा, ''आप में से कितने लोगों ने अपनी क्लब की बैठकों में अपने समुदाय की आवश्यकताओं को रेखांकित किया है? ऐसी जरूरतों को पूरा करने से रोटरी की सार्वजनिक छवि को काफी उन्नत बनाने में मदद मिलेगी।''

उन्होंने रोटेरियन से इस बात पर विश्वास करने का आग्रह किया कि उनका कार्य फलित हो रहा था। ''जब रोटरी फिलीपींस में व्यापक स्तर पर फैले हुए पोलियो को समाप्त करना चाहता था, तो नकारात्मक सोच अनेक लोगों ने हमारी पहल पर अविश्वास किया। लेकिन टीआरएफ के 3 एच अनुदान ने देश को पोलियो मुक्त बनाने में हमारी मदद की और इस सफलता ने संसार को एक विशाल पैमाने पर पोलियो प्रतिरक्षण को अपनाने के लिए प्रेरित किया। आपके विश्वास से सबकुछ संभव हो जाता है। हमारे देश में सबसे बडी युवा शक्ति है, लेकिन आत्मविश्वास की कमी हमें विकसित राष्ट्र बनने से रोकती है। आइए हम युवा पीढी को समाज में परिवर्तन लाने के लिए अपनी शक्ति में विश्वास करना सिखलाएं।''

इससे पहले, प्रिकोल के प्रबंध निदेशक मुख्य अतिथि वनिता मोहन ने कोयंबटूर में जल निकायों को पुनर्जीवित करने में एनआरओ सिरुथुली के प्रयासों के बारे में बताया। वह एनजीओ के मैनेजिंग ट्रस्टी हैं। ''10,000 लोगों के सहयोग से, हमने 300 एकड के झील को साफ किया जो वर्षों से जंगली घास से आच्छादित थी। हम पिछले साल बेमौसम वर्षा के दौरान झील को पानी से लबालब भरते हुए देख कर बहुत खुश थे। जब आप एक सकारात्मक कदम उठाते हैं, तो प्रकृति आपके साथ कदमताल करने के लिए 10 कदम उठाती है,'' उन्होंने कहा।

डीजी पी गोपालकृष्णन, पीडीजी एम मुरुगानंदम उनकी पत्नी सुमती और नीला गोपालकृष्णन, सरतकुमारजी सम्मानित करते हुए।

करूर वैश्य बैंक के एमडी और सीईओ पी आर शेषादरी ने मंडल में डायलिसिस सेंटर स्थापित करने के लिए रोटरी से जुड़ने की बैंक की योजना के बारे में बताया। अक्षयपात्रा फाउंडेशन के उपाध्यक्ष चंचलापति दास ने बताया कि देश के 12 राज्यों में संगठन 1.6 लाख बच्चों को कैसे भोजन उपलब्ध करवाती है। ''कुछ क्षेत्रों में रोटरी हमारे साथ जुड़ा हुआ है,'' उन्होंने कहा। पोलियो पीडति और पैरालिंपियन माधवी लता ने बताया कि उन्हें कैसे एक सफल तैराक और बास्केटबॉल खिलाडी के रूप में उभरने के दौरान अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

कनाडा की SCAW (स्लीपिंग चिल्ड्रेन एक्रोस द वर्ल्ड) टीम जो कि मंडल में वंचित बच्चों को स्लीपिंग किट उपलब्ध कराती रही है और साइबर-प्रेमी ऑटो चालक अन्नदुराई को सम्मानित किया गया। वर्तमान तकनीकी विकास एक वरदान है या अभिशाप और कवि जो मैलॉरी के विषय *जीवन - एक आशीर्वाद या अभिशाप* पर विचारोत्तेजक और भावपूर्ण भाषण तथा जीवंत बहस ने दर्शकों को उनकी सीटों से जकड़े रखा।

रोटरी क्लब त्रिची डायमंड सिटी द्वारा आयोजित विशेष बच्चों के लिए प्रतियोगिता से छः सर्वश्रेष्ठ पेंटिंग के लिए एक नीलामी आयोजित की गई और प्राप्त आय को टीआरएफ को दान किया गया।

अभिनेता/राजनेता/रोटेरियन सरथकुमार ने सार्वजनिक शिकायतों को प्राप्त करने के लिए विकसित एक मोबाइल ऐप SSK पेश किया। उनके सहयोगी समस्याओं के समाधान के लिए उसे स्थानीय अधिकारियों के पास लेकर जाएंगे। अब तक, 1,000 सामाजिक समस्याओं का समाधान किया जा चुका है, उन्होंने कहा।

इस महत्वपूर्ण अवसर के मुख्य आकर्षण तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री ओ पनेरसेल्वम की मौजूदगी थी। उन्होंने वर्ष 1986 में रोटरी क्लब पेरियाकुलम के सचिव के रूप में अपने दिनों को याद किया और कहा कि कैसे उनकी टीम ने इलयाराजा संगीत समारोह और शहर में अन्य विभिन्न परियोजनाओं के माध्यम से पोलियो को समाप्त करने के लिए निधि एकत्र किया था। मंडल की मानवीय परियोजनाओं की सराहना करते हुए, उन्होंने पेरियाकुलम में डायलिसिस केंद्र स्थापित करने के लिए सहयोग देने पर भी सहमति व्यक्त की।

नीला और डीजी गोपालकृष्णन, उपमुख्यमंत्री ओ पन्नीरसेल्वम का स्वागत करते हुए। चित्र में सम्मेलन के अध्यक्ष वि रमेश भी मौजूद हैं।

चित्र: जयश्री

आरआई दक्षिण एशिया

- जुलाई 2017 के बकाये राशि का भुगतान नहीं करने के कारण जिन क्लबों की सदस्यता समाप्त कर दी गई थी, उन्हें समाप्ति की तिथि से 150 दिनों के भीतर पुनर्नियुक्ति के लिए निम्नलिखित शर्तों के अनुपालन को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है:
  - समाप्ति के समय से सभी बकाये वित्तीय दायित्वों का भुगतान करें।
  - सभी सदस्यता देय राशि का भुगतान करें, जो बाद में निरंतर जमा होता रहा है।
  - 30 प्रति सदस्य की दर से पुनर्स्थापना शुल्क और गुड्स और सर्विसेज टैक्स @18% की दर से भुगतान करें।
  - पुनर्स्थापना के लिए आवेदन प्रस्तुत करें।

कृपया ध्यान दें कि समाप्ति तिथि के 150 दिन बाद, क्लब स्थायी रूप से समाप्त हो जाता हैं और पुनर्स्थापित नहीं किए जा सकता हैं।

- आयकर अधिनियम 1961 के प्रावधानों के आलोक में सभी योगदानकर्ताओं से अनुरोध किया जाता है कि वे अपने योगदान प्रपत्र/पत्र में अपने स्थायी अकाउंट नंबर (PAN) अवश्य लिखें या हमें PAN कार्ड की स्कैन की गई प्रति भेज दें, ताकि वर्तमान वित्तीय वर्ष में इनके योगदान की रिपोर्टिंग की जा सकें।

- वर्तमान क्लब के अधिकारियों से अनुरोध है कि वे आने वाले अधिकारियों के विवरण को जल्द से जल्द अद्यतन करें। समयबद्ध डेटा अपडेट करने से नए आने वाले क्लब के अधिकारियों को आरआई से ई-मेल प्राप्त करने में सुविधा होगी और उनके नाम 2018-19 रोटरी इंटरनेशनल की आधिकारिक निर्देशिका में भी शामिल किया जा सकेगा।

- रोटेरियन विभिन्न विषयों पर उपलब्ध वीडियो का उपयोग कर सकते हैं जैसे कि हम कौन हैं, हमारा ध्येय, हमारे युवा नेता, हमारे इतिहास, साथ ही अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के भाषण आदि। *http://video.rotary.org/* पर रोटरी के ध्येय और कार्यों को बेहतर ढंग से समझने के लिए इन संसाधनों का उपयोग करें।

- नवीन आने वाले क्लब और मंडल अधिकारियों के वार्षिक प्रशिक्षण चक्र के साथ यह रोटरी के लिए मंडल सम्मेलनों का मजेदारमाह हैं। रोई वेबसाइट (My Rotary के माध्यम से) पर लर्निंग और रेफेरेंस मेनू के अंतर्गत अनेक उपयोगी प्रशिक्षण संसाधन, दस्तावेज और मैनुअल उपलब्ध हैं। मंडल सम्मेलनों की सफलता और आगामी प्रशिक्षण की घटनाओं के लिए हमारी शुभकामनाएं।

रोटरी साझेदारी की शक्ति में दृढ़ विश्वास रखता है और कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व जनादेश के माध्यम से कंपनियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रहा है। आज, रोटरी को अपने मंडल/क्लबों द्वारा वैश्विक अनुदान परियोजनाओं को निष्पादित करने के लिए अनेक कॉर्पोरेट भागीदारों के साथ कार्य करने पर गर्व है।

समीप आते जा रहें अंतिम समय सीमा पर ध्यान दें:

- रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन के लिए पूर्व पंजीकरण छूट की अंतिम तिथि निकट आती जा रही है। 10 छूट का लाभ उठाने के लिए, कृपया ***31 मार्च, 2018*** को या उससे पहले http://www.riconvention.org/en/toronto/register पर ऑनलाइन पंजीकरण कराएं।
- अनुदान रिपोर्टिंग की समय सीमा - कृपया 31 मार्च 2018 तक सभी खुले अनुदानों की गतिविधियों के बारे में **31 मई 2018** तक अंतरिम रिपोर्ट प्रस्तुत करें; अन्यथा अनुदान जून 1, 2018 को प्रभावी ढंग से रिपोर्ट करने पर विलंबित हो जाएगा। यदि कोई अनुदान प्रायोजक किसी फाउंडेशन अनुदान के लिए रिपोर्ट को विलंबित रखता है तो नए फाउंडेशन अनुदान के लिए आवेदनों को स्वीकार नहीं किया जाएगा।
- वर्ष 2019-20 रोटरी शांति फैलोशिप कार्यक्रम के लिए आवेदन अब स्वीकार किया जा हैं। शांति फैलोशिप आवेदन के बारे में अधिक जानने के लिए, लिंक *https://my.rotary.org/en/peace-fellowship-application* पर क्लिक करें। आवेदकों को अपने मंडल में आवेदन जमा करने की अंतिम समय सीमा **31 मई, 2018** है। मंडलों को **1 जुलाई** तक रोटरी फाउंडेशन के समक्ष अनुमोदित आवेदनों को प्रस्तुत करना चाहिए। अपने प्रश्नों का समाधान प्राप्त करने के लिए, कृपया *rotarypeacecenters@rotary.org* पर लिखें। ■

Corporate Donors (RY 2016-17)

ADITYA BIRLA GROUP
Gestamp
BL Agro
NAINI
RDS Project Ltd.
ZECO
airef engineers (p) ltd.

Corporate Donors (RY 2017-18)

FOSECO
Kanam KANAM LATEX INDUSTRIES PVT. LTD.
cello

जहाँ रोटरी एक पसंदीदे साझेदार से अधिक है

रशीदा भगत

पुणे में टाटा टेक्नोलॉजीस के कंपनी सेक्रेटरी एवं कॉर्पोरेट संवहनीयता के प्रमुख, अनुभव कपूर कहते है, ''ई-शिक्षण के हमारे हर कार्यक्रम में अब हम रोटरी को शामिल करते है।''

तो क्या आप कहेंगे कि रोटरी आपका भरोसेमंद साझेदार है, पुणे में एक साक्षात्कार के दौरान मैं उन्हें उकसाती हूँ। उनका जवाब है, ''ओह, मैं कहूँगा कि वे उससे भी कई अधिक है। 5 से 6 वर्षों के संबंध के दौरान, वे हमारे मित्र, दार्शनिक एवं गाइड बन गए है।''

उनके उत्साह का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि पिछले चार वर्षों के दौरान, टाटा टेक्नोलॉजीस ने ''700 से भी अधिक स्कूलों में 1,000 से ज्यादा ई-शिक्षण किट देकर, महाराष्ट्र के स्कूलों में चल रहे रोटरी के ई-शिक्षण कार्यक्रम में लगभग 1 मिलियन डॉलर लगाए है। और इस परियोजना की सबसे अच्छी बात जो मुझे पसंद है वह इसकी सरलता है जिसके साथ इसे स्कूलों, विशेषरूप से ग्रामीण इलाकों के स्कूलों, में लागू किया जा रहा है,'' वह आगे कहते है।

रोटरी के साथ संबंध की उत्पत्ति को समझाते हुए, कपूर ने कहा कि छह वर्ष पूर्व, एक कार्यनीति बैठक में कंपनी के अगले पाँच वर्षों के विकास पथ की योजना बनाते हुए, एक लक्ष्य सामने रखा गया कि पाँच वर्ष बाद टाटा टेक्नोलॉजीस को 1 बिलियन डॉलर की कंपनी बन जाना चाहिए। ''तब हमारा राजस्व केवल 400 मिलियन डॉलर का था। चूंकि कंपनी मूलरूप से इंजीनियरिंग सलूशन्स प्रदान करती है, हमने जाना कि बिलियन डॉलर के मुकाम पर पहुँचने के लिए, श्रमशक्ति की अत्यंत आवश्यकता होगी और हमें लगभग 25,000 इंजीनियरों की जरूरत होगी। उस वक्त हम केवल 4,000 इंजीनियर ही थे।''

साथ ही, चूंकि ''संपूर्ण इंजीनियरिंग जगत में बढ़त हो रही है, इसलिए आपूर्ति एवं मांग में विश्वव्यापी अंतर है। इसलिए हमने 'तैयार इंजीनियर' का विचार निकाला और शिक्षा, नवप्रवर्तन एवं संबंधित मुद्दों के बारे में कुछ करने का निश्चय किया।''

आंकड़ों से स्पष्ट है कि अच्छे इंजीनियरों को अच्छी शिक्षा और STEM (विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग, गणित), जिस पर कंपनी ध्यान केन्द्रित करती है, के सक्रिय प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

एक साझेदारी की शुरुआत

2013 में, डीजीएन रवि धोत्रे कपूर से मिले और उनसे शिक्षा को बेहतर बनाने के रोटरी के अभियान के विषय में बात की, कि इसे हासिल करके भारत को पूर्णतः साक्षर बनाने के लिए भारत में रोटेरियन क्या कर रहे है। ''मेरी वास्तव में दिलचस्पी थी क्योंकि शिक्षा पर हमारे आंकड़े बताते है कि 100 विद्यार्थियों में से, केवल दो विज्ञान लेते है और शायद 0.2 इंजीनियरिंग करते है। जब हमने इसके कारण का पता लगाया, हमने जाना कि शिक्षा की खराब गुणवत्ता इसका कारण थी, क्योंकि विज्ञान पढ़ाना एवं सीखना दोनों ही कठिन होता है।''

चर्चाओं के अनेक दौरों - पूर्व में, पीडीजी दीपक शिकरपुर भी उनके पास आए थे - एवं स्कूलों में ई-शिक्षण परियोजना को लागू करने के सर्वश्रेष्ठ तरीके का निर्धारण करने के परीक्षण के बाद, हमें ''यकीन हो गया था कि रोटरी एक अच्छा साझेदार होगा। मुझे

हमारे आंकड़े बताते है कि 100 विद्यार्थियों में से, केवल दो विज्ञान लेते है और शायद 0.2 इंजीनियरिंग करते है। शिक्षा की खराब गुणवत्ता इसका कारण थी।

यह ज़रूर कहना चाहिए कि पाँच वर्षों के साहचर्य के बाद उन्होंने इस बात को सिद्ध किया है।''

इसलिए टाटा टेक्नोलॉजीस ने स्कूलों में ई-शिक्षण किट प्रदान करने के लिए 1 मिलियन डॉलर लगाए है। कपूर कहते है, ''मैंने आपको बताया कि इस परियोजना की सबसे अच्छी बातें इसके बढ़ने का तरीका एवं इसकी सरलता है जिसके साथ इसे लागू किया जा रहा है। हम जमीनी स्तर पर जाकर देखते है कि परियोजना कैसे कार्य कर रही है, और जब मैं ई-शिक्षण किट से सुसज्जित ऐसी ही एक कक्षा में जाता हूँ, मैं देखता हूँ कि वह बच्चे है जो इसे चला रहे है। जिसका मतलब है कि वास्तव में हमें शिक्षक बदलने की आवश्यकता नहीं है।'' वह आगे कहते है, जब डिजिटल बोर्ड बच्चों के समक्ष विज्ञान के चमत्कारों को खोलता है, तब यदि बच्चों को कोई शंका होती है तो वे बाजू में खड़े शिक्षक से सवाल करते है। ''हम सभी जानते है कि यह सीखने का सबसे अच्छा तरीका है; सवाल-जवाब अध्ययन को तेज बनाते है।''

सीखने के उत्साह को जगाना

वह प्रसन्न है कि पूर्व के दौरे में दिए जाने वाले हार या गुलाब अब बच्चों द्वारा बनाई गई साधारण वस्तुओं से बदल गए है। ''ये छोटी चीज़ें हो सकती है लेकिन हम नन्हें दिमागों में उत्सुकता पैदा कर रहे है और यह एक बच्चे में उत्साह को जगाने एवं उसे विज्ञान में नवप्रवर्तन की ओर ले जाने का सर्वश्रेष्ठ तरीका है। परिणाम शानदार है। यदि हम नवप्रवर्तन के माध्यम से मूल्यों को जोड़ सकते है, केवल तब ही देश में असली विकास हो सकता है। चेन्नई में आयोजित रोटरी लिटरेसी समिट में HRD मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने भी ऐसा ही कहा था।''

कपूर आगे कहते है कि इस वर्ष 100 स्कूलों में ई-शिक्षण कार्यक्रम लागू किया गया और ''हम देख सकते है कि उपस्थिति, सीखने की गुणवत्ता, ग्रेड में बढ़ोत्तरी या स्कूल छोड़ने वालों की दर में कमी जैसे सभी 6 मानदण्ड सकारात्मक है।''

''और फिर रोटरी क्लब पुणे फार ईस्ट के पूर्व अध्यक्ष पंकज पटेल शामिल हुए। वह पुणे के निकट तांबे गाँव के एक विशेष स्कूल को लेकर बहुत उत्साहित है। वह विज्ञान प्रयोगशाला के लिए हमारा प्रायोजन चाहते थे।'' पास की पहाड़ियों एवं वादियों के साथ, स्कूल एक अत्यंत प्राकृतिक स्थान में स्थित है। कपूर ने कुछ लोगों द्वारा स्कूल का परीक्षण करवाया और पाया कि ''उन्होंने स्कूल का बहुत अच्छे से नवीनीकरण किया है, लगभग एक आदर्श स्कूल की तरह।''

पटेल ने स्कूल में एक विज्ञान प्रयोगशाला के निर्माण का प्रस्ताव दिया। ''आम तौर पर हम ऐसी गतिविधियाँ नहीं करते है, टाटा टेक्नोलॉजीस में हम कार्यक्रमों एवं प्रभावों के माप में विश्वास करते है। इसलिए मैंने उनसे कहा कि केवल एक नहीं बल्कि 15 से शुरुआत करते है, क्योंकि आखिरकार, यदि बच्चे विज्ञान की ताकत को महसूस नहीं करते है... और एक विज्ञान प्रयोगशाला इसे करने का सबसे

रोटरी के ई-शिक्षण कार्यक्रम परियोजना की सबसे अच्छी बात जो मुझे पसंद है वह इसकी सरलता है विशेषरूप से ग्रामीण इलाकों के स्कूलों, में लागू किया जा रहा है।

अच्छा रास्ता है... तो हम बच्चों में विज्ञान को सीखने के उत्साह को नहीं जगा सकते।''

धोत्रे और कपूर दोनों दृढ़तापूर्वक यह मानते है कि छोटे शहरों एवं विशेषरूप से गाँवों में की गई ये पहलें तैयार स्नातक/इंजीनियर बनाएगी, जो भारत में रहेंगे एवं उनके क्षेत्रों के विकास के लिए कार्य करेंगे।

''हम यह भी पाते है कि बहुत सी भर्तियाँ भारत के इ और उ क्लास शहरों में हो रही है और टाटा टेक्नोलॉजीस में हमारा मानना है कि उच्च क्षमताओं वाली अगली पीढ़ी इन्ही शहरों से आने वाली है।'' परिणाम यह है कि उनकी कंपनी पहले से ही 700 अनोखे सरकारी और सरकारी-सहायता प्राप्त स्कूलों को 1000 ई-शिक्षण किट दे चुकी है और उनका मानदंड यह है कि स्कूलों में कक्षा 8-10 में कम से कम 220-250 विद्यार्थी होना चाहिए।

विज्ञान प्रयोगशाला पर आते हुये, ''हम स्टाफ समर्थन, शिक्षकों की गुणवत्ता, विज्ञान पढ़ाने पर स्कूल के ध्यान का व्यापक मूल्यांकन करेंगे, और उसके बाद ही हम एक विज्ञान प्रयोगशाला देंगे,'' वह कहते है।

बाएं से : अनुभव कपूर, डीजीएन रवी धोत्रे और रोटेरियन पंकज पटेल।

जुगाड़ और कूकाबारा

टाटा टेक्नोलॉजीस के कॉर्पोरेट संवहनीयता के प्रमुख अनुभव कपूर भारतीय जुगाड़ और कूकाबारा पक्षी पर दो जायज़ मुद्दे उठाते है।

वह कहते है कि जुगाड़ शब्द, जो वास्तव में भारतीय नवप्रवर्तन का सार प्रस्तुत करता है, ''का दुर्भाग्यवश एक बहुत ही नकारात्मक अर्थ निकाला गया है, इसके बावजूद भी कि इसका मतलब वास्तविक एवं असली नवप्रवर्तन होता है। पंजाब एवं गुजरात में हमारे ग्रामीणों द्वारा विकसित की जाने वाली मशीनों को देखिये। या केरला में नारियल तोड़ने का सरल उपकरण। वे इतने साधारण होकर भी अत्यंत प्रभावी है, लेकिन चूंकि उनका पेटेंट नहीं कराया गया, हम खझ या ऐसी ही अन्य शब्दावलियों के बारे में बात नहीं करते, और वह जुगाड़ बन जाता है। नवप्रवर्तन वहाँ होता है जहाँ ज़रुरत होती है। और भारत की प्रगति गाँवों में होती है जहाँ पर खेत है और उत्पादन एवं प्रोसेसिंग होती है। तो हमें जनसंख्या के उस हिस्से को उनकी विज्ञान में रूचि जगाकर उन्हें उत्तेजित करना होगा, और वो भी छोटी उम्र से ही।''

एक विचार जो कि आर ए मशेलकर ने हमें दिया वह यह था कि क्यों हम छात्रों के स्नातक होने के बाद ही आविष्कारों के विचार की प्रतीक्षा या उम्मीद करते है? ''आपको नन्हें दिमागों को जागृत करना होगा क्योंकि वे अभिनव पद्धतियों के प्रति कई अधिक ग्रहणशील होंगे।''

कपूर आगे कहते है कि केवल शिक्षण के सहायकों या इलेक्ट्रॉनिक किट देना ही सीखने के लिए पर्याप्त नहीं है। ''परिणाम हासिल करने के लिए हमें सामग्री, अध्यापन, परामर्श, इत्यादि के सही मिश्रण की जरूरत है।'' वह कहते है, कई बार एक विचारहीन पाठ्यक्रम का अनुसरण किया जाता है, और वह नर्सरी की कविता 'कूकाबारा पुराने गोंद के पेड़ पर बैठती है' का उदाहरण देते है।

पीढ़ियों से, शिक्षक इस कविता को पढ़ा रहे है और विद्यार्थी उसे पढ़ रहे है। लेकिन यह पक्षी भारत में नहीं पाया जाता; यह केवल ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है। ''लेकिन विडंबना यह है कि एक गाँव के स्कूल के शिक्षक को भी इस कविता को बच्चों को पढ़ाना पड़ता है; और ना ही शिक्षक और ना ही बच्चे ने कभी इस पक्षी के बारे में सुना है, देखना तो छोड़ ही दीजिये।''

वह एक किस्सा सुनाते है कि कैसे गाँव के एक स्कूल के दौरे के दौरान उन्होंने एक शिक्षिका को कूकाबारा का उच्चारण करने तक में संघर्ष करते हुए देखा! ''ना ही शिक्षिका को और ना ही बच्चों को कोई जानकारी थी कि कूकाबारा क्या है; उन्होंने शायद यह सोचा होगा कि वह पेड़ पर बैठा कोई व्यक्ति है! हम हमारे पुराने पाठ्यक्रम में इतना फंसे हुए है कि हम चीज़ों को बस पढ़ाये जा रहे है बिना यह सवाल किये कि वे कितनी प्रासंगिक है। इस विचारधारा को बदलना होगा।''

प्रत्येक प्रयोगशाला के लिए उपकरणों की लागत रु 60,000 है और प्रयोगशाला को बनाने में रु 1.75 लाख से रु 2 लाख का खर्च आता है। ''हम अब उन 15 प्रयोगशालाओं की परिचालन लागत को उठा रहे है जिनके लिए पूंजीगत व्यय एक वैश्विक अनुदान द्वारा दिया गया है। यही सहभागिता है,'' कपूर कहते है।

वह आगे कहते है कि ये प्रयोगशालाएं, जो विश्लेषणात्मक सोच को जागृत करेगी और उम्मीद है कि नवप्रवर्तन को प्रेरित करेंगी, बच्चों को उनके विज्ञान के विषयों में मिल रहे लाभों को मापेगी। ''यह एक प्रायोगिक परियोजना है, हमारे द्वारा STEM के लिए विकसित किया गया ऑनलाइन कार्यक्रम प्रयोगशाला का पूरक होगा।'' किसी समय एक सर्वेक्षण किया जायेगा और प्रभावों को मापा जाएगा।

भावी साझेदारियाँ

रोटरी के साथ टाटा टेक्नोलॉजीस की भावी साझेदारियों पर, डीजीएन धोत्रे कहते है, ''उनके द्वारा पुणे में स्थापित किये जा रहे कौशल विकास केंद्र में एक साझेदारी की गुंजाइश के लिए हम उनसे चर्चा कर रहे है। कपूर आगे कहते है कि कंपनी ने पुणे में इस नवाचार केंद्र, जो पुणे के कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग के साथ मिलकर काम करेगा, को बनाने के लिए ही लगभग 20 करोड़ रुपये की राशि लगाई है। खखढ बॉम्बे द्वारा हमें परामर्श दिया जा रहा है और टाटा ट्रस्ट द्वारा हमें प्रायोजित किया जा रहा है।''

वह कहते है, उद्देश्य वर्तमान स्थिति को सुधारने का है ''जहाँ हर कोई एक कॉलेज जाकर एक डिग्री प्राप्त कर नौकरी ढूँढना चाहता है। कोई भी इसलिए कॉलेज नहीं जाता कि उसे एक उद्यमी बनना है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उसके पास पैसा नहीं है और ना ही वह उसके विचार को उस स्तर पर प्रदर्शित कर सकता है जहाँ से उसको पैसा मिल सकता है। ऐसे उज्जवल विचारों वाले विद्यार्थियों को सही परामर्श तक नहीं मिलता; अधिक से अधिक, वार्षिक परियोजना के साथ उनके आविष्कार भी रुक जाते है। परन्तु अगर हम इन युवाओं को उनके विचारों को हमारे साथ साझा करने के लिए प्रेरित कर सकें, तो फिर हम उन्हें सबसे अच्छे या सबसे मेधावी प्रोफेसरों से जोड़ सकते है केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी क्योंकि आख़िरकार, टाटा MIT जैसे संस्थानों की भी सहायता करता है।''

धोत्रे आगे कहते है, ''2019 में, भारत में रोटरी उसकी शताब्दी का उत्सव मनाएगी, क्योंकि भारत का प्रथम क्लब, कलकत्ता का रोटरी क्लब, 1919 में शुरू हुआ था। उस साल के लिए हम 100 हैप्पी स्कूलों को करने की योजना बना रहे है और हम उस उपक्रम में भी टाटा टेक्नोलॉजीस के साथ साझेदार बनना पसंद करेंगे।''

चित्र: रशीदा भगत

एक मदद हाथ

रशीदा भगत

दुनिया भर में पदस्थ होने के 22 वर्षों के बाद यूनीलीवर से सेवानिवृत्त होकर जब निहाल कविरत्ने 2005 में मुंबई लौटे, तो वह और उनकी पत्नी श्यामा कैंसर से पीड़ित बच्चों, और टाटा मेमोरियल अस्पताल (TMH), जो मुंबई में कैंसर के इलाज के लिए विशिष्ट है, के सामने बने फुटपाथ पर उनके माता-पिता को सोता हुआ देखकर व्याकुल हो गए।

उन्होंने जाना कि जहाँ TMH, धर्मार्थ संस्थानों के साथ साझेदारी में, मुफ्त उपचार प्रदान करता है और अन्य स्वैच्छिक संगठन दवाइयों के लिए पैसा प्रदान करते है, वहीं मुंबई जैसे बड़े शहर में आवास एक बहुत बड़ी चुनौती है। माता-पिता अपने कैंसर से पीड़ित बच्चों के साथ समस्त भारत से यहाँ आते है। जबकि वे परिवार जिनके पास थोड़े पैसे होते है वे धर्मशाला में तब तक रुक जाते है जब तक उनके पैसे खत्म ना हो जाए, वहीं अधिकतर परिवार रेलवे स्टेशन और अस्पताल के बाहर बने फुटपाथ पर ही ठहर जाते है। ''सड़क पर अस्वास्थ्यकर स्थिति के बीच रहने से पहले से ही कमजोर बच्चे संक्रमण के प्रति संवेदनशील होते है। कीमोथेरेपी प्रतिरक्षी तंत्र को कमजोर करती है और अक्सर बच्चे इलाज के पूर्ण होने से बहुत पहले ही निमोनिया और तपेदिक के शिकार हो जाते है,'' रोटरी क्लब बॉम्बे मिडसिटी की सचिव माला सिन्हा कहती है। यह क्लब रोई मंडल 3141 के उन नौ क्लबों में से एक है, जो बड़े स्तर पर इस परियोजना के लिए सहायता कर रहे है।

कविरत्ने आगे कहते है, ''जब मैंने विस्तार से जाँच-पड़ताल की, मैंने पाया कि मुंबई में ठहरने के लिए जगह इन लोगों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है,

सेंट जूड सेंटर में बच्चे चित्र में रंग बहरते हुए।

जिसके कारण बड़ी संख्या में लोगों को सड़कों पर रहना पड़ता है। सबसे बुरा तो यह है कि बहुत से परिवार सड़कों पर रहने की चुनौती से हतोत्साहित होकर अपने बच्चों का इलाज बीच में ही छोड़ देते है। वे वापस अपने गाँव जाना पसंद करते है जहाँ उनका बच्चा शायद कुछ माह ही जियेगा, लेकिन बड़े शहर की सड़कों पर मरने के बजाए अपने घर में आराम से शांति और गरिमा के साथ प्राण त्याग सकेगा।

कविरत्ने ने जाना कि कैंसर से पीड़ित बच्चों की मृत्यु का सबसे बड़ा कारण उपचार का त्याग करना है और उन्होंने निश्चय किया कि कुछ तो करना पड़ेगा। इस तरह उनका इन बीमार बच्चों को बढ़िया आवास केंद्र देने का कार्य शुरू हुआ, एक साफ और स्वच्छ जगह जहाँ वे अपने माता-पिता के साथ मुफ्त में रह

> **जगह इन लोगों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है, जिसके कारण बड़ी संख्या में लोगों को सड़कों पर रहना पड़ता है। सबसे बुरा तो यह है कि बहुत से परिवार सड़कों पर रहने की चुनौती से हतोत्साहित होकर अपने बच्चों का इलाज बीच में ही छोड़ देते है।**
>
> **निहाल कविरत्ने**

सकें। और इस प्रकार जूड इंडिया चाइल्डकेयर सेंटर (SJICC) का उदय हुआ जिसका नाम उपयुक्त रूप से नाउम्मीद प्राणियों के संरक्षक सैंट जूड के नाम पर रखा गया है।

लोअर परेल की बीडीडी चॉल के एक जर्जर भवन में केवल आठ परिवार इकाइयों के साथ केंद्र की एक सादी शुरुआत हुई। इस जगह को मुंबई पुलिस के पूर्व कमिश्नर जुलिओ रिबेरो और दी बॉम्बे मदर्स एंड चाइल्ड वेलफेयर सोसाइटी के तत्कालीन अध्यक्ष द्वारा प्रदान किया गया था।

वे परिवार जिनके पास थोड़े पैसे होते है वे धर्मशाला में तब तक रुक जाते है जब तक उनके पैसे खत्म ना हो जाए, वहीं अधिकतर परिवार रेलवे स्टेशन और अस्पताल के बाहर बने फुटपाथ पर ही ठहर जाते है।

माला स्वरूप

एक नमूने को विकसित करके उसे संशोधित किया गया ताकि वह इस प्रकार के सभी केन्द्रों के लिए आदर्श बन सके। दस वर्षों में, SJICC ने ज़बर्दस्त तरक्की की है और अब इसके पांच शहरों में 33 केंद्र है - मुंबई (22), दिल्ली (4), कोलकाता और जयपुर में तीन-तीन और हैदराबाद में एक। ये केंद्र 418 बच्चों एवं उनके माता-पिता को आश्रय दे सकते है। जैसा कि कहा जाता है: कर भला तो हो भला, इसलिए 2016 में, बॉम्बे पोर्ट ट्रस्ट द्वारा टाटा मेमोरियल अस्पताल को मिले एक उदार दान, जिसे

दाएं : *एक योगा सत्र।* ***नीचे :*** *एक संगीत सत्र।*

बदले में SJICC को प्रदान किया गया, की मदद से कॉटन ग्रीन की तीन अनुपयुक्त इमारतों को खेल के दो मैदान और 165 परिवारों के ठहरने की जगह के साथ एक सुन्दर परिसर में बदल दिया गया।

रोटेरियन आगे आए

2013-14 में, जब मंडल 3141 के रोटेरियनों को इस सुयोग्य परियोजना के बारे में पता चला, तो उन्होंने भी इसमें शामिल होने का निश्चय किया। माला ने बताया कि कैंसर ऐसा शब्द है जो अपने साथ ''मौत का फरमान लाता है।'' माता-पिता को जब यह पता चलता है कि उनके बच्चे को कैंसर है तो वे भयानक तनाव और चिंता में पड़ जाते है। छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों में रहने वाले ''सुविधाओं से वंचित लोगों को बड़े शहरों में इलाज के लिए अपने बच्चे को लाने पर गंभीर खर्च उठाना पड़ता है। और विशेषरूप से मुंबई, बाहर से आने वाले साधारण लोगों को भयभीत कर देता है। हमें पता चला कि ऐसे परिवार अक्सर यहाँ पर अपनी छोटी सी ज़मीन, जानवर या उनकी कोई भी अन्य संपत्ति बेचकर यहाँ आते है, ताकि उनके बच्चे को इलाज मिल सके।''

कैंसर से पीड़ित बच्चों की सेवा करने हेतु नौ रोटरी क्लबों ने पैसा इकट्ठा करने के लिए हाथ मिलाया। 2013 से अब तक, वे रु 49.5 लाख जमा करके, SJICC की ग्यारह परिवार इकाइयों को प्रायोजित कर चुके है। माला कहती है कि पिछले वर्ष रोटरी क्लब मुंबई मालाबार हिल और रोटरी क्लब मुंबई क्वीन्स नेकलेस द्वारा मुंबई के दो केन्द्रों के लिए पूँजी इकट्ठा की गई; प्रत्येक क्लब ने रु 1 करोड़ इकट्ठा किये। एक पुराने रोटेरियन, जय दीवानजी, संगठन के निदेशक और मूल टीम के सदस्यों में से एक है। प्रायोजक एवं दानकर्ता की एक अन्य टीम के सदस्य, डॉ. अजय भटनागर, बेसल, स्विट्ज़रलैंड, के पीडीजी है।

कैंसर से पीड़ित बच्चों के लिए और अधिक नए सैंट जूड केंद्र वेल्लोर (टीम लीडर रोटेरियन सेल्विन रत्नराजन), चेन्नई (टीम लीडर झञ्ॠ रेखा शेट्टी, मंडल 3232) और गुवाहाटी में स्थापित किये जा रहे है। पिछले तीन वर्षों से, ज़्यूरिख बेल्वोइर का रोटरी क्लब SJICC के लिए दौड़ प्रतियोगिताओं का आयोजन करके धन इकट्ठा कर रहा है। जहाँ वेल्लोर का केंद्र मार्च में शुरू होगा, वहीं चेन्नई

और गुवाहाटी के केंद्र इस वर्ष के अंत तक शुरू हो जाएँगे।

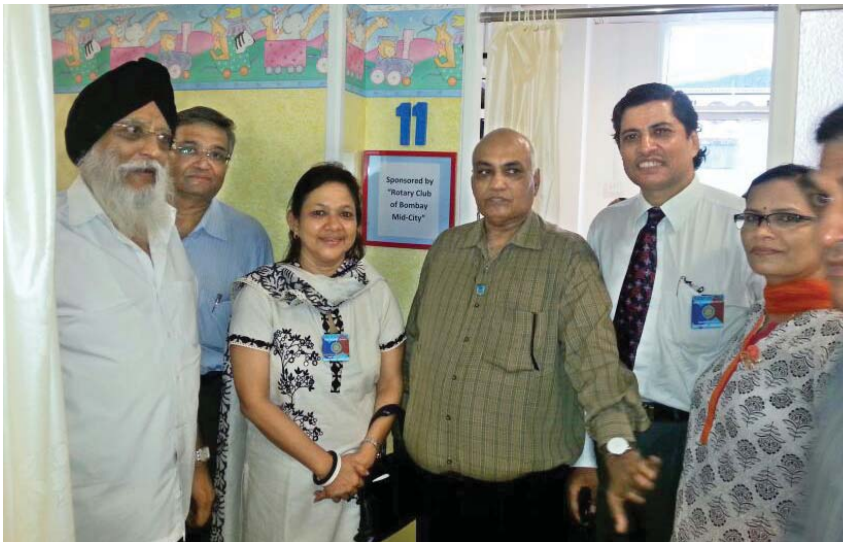

SJICC में सुविधाएं

सैंट जूड बाल केंद्र की हर परिवार इकाई में एक पलंग, एक गद्दे के लिए जगह, एक स्टील की अलमारी और शेल्फ का एक रैक है। इसमें एक बीमार बच्चा और उसके माता-पिता ठहर सकते है। हर परिवार के लिए एक सिंगल-बर्नर वाला गैस चूल्हा है ताकि वे ''ताज़ा भोजन बना सके, परिवार के उपयोग के लिए एक भंडारण स्थल के साथ हफ्ते भर का राशन जैसे चावल शक्कर, चाय और तेल, एवं बर्तन, प्लेट और गिलास सब कुछ मुफ्त में मिलता है। हर केंद्र पर महिलाओं एवं पुरुषों के लिए एक पृथक सार्वजनिक स्नान एवं शौच गृह, एक सार्वजनिक रसोईघर और भोजन कक्ष, और एक सार्वजनिक मनोरंजन कक्ष है। सभी केंद्र प्रतिकृति के अनुसार एक जैसे है।''

बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को निर्मित करने के लिए पोषक तत्वों के अलावा, परिवारों को केंद्र से लेकर उपचार करने वाले अस्पताल तक जाने के लिए मुफ्त आवागमन की सुविधा भी मिलती है। शैक्षणिक एवं मनोरंजक गतिविधियाँ जैसे कि कला आधारित थेरेपी, संगीत थेरेपी और योग इस समर्थन के पूरक है। उपचार के लिए घर से दूर रहने के कारण बच्चे की पढ़ाई में आने वाले विघ्न को कम करने के लिए, बुनियादी कंप्यूटर कौशलों, अंग्रेजी, पढ़ने, गणित और विज्ञान को एक रचनात्मक और आकर्षक अंदाज़ में सिखाया जाता है। ''हम, मंडल 3141 के रोटेरियन, इस एनजीओ से जुड़कर बहुत खुश महसूस करते है, जो कैंसर से जूझने वाले बच्चों के लिए एक आशा और खुशियाँ लाता है,'' माला कहती है, जो SJICC के साथ प्रबंधकीय मामलों में मदद के लिए स्वेच्छा से कार्य कर रही है।

लोअर परेल की बीडीडी चॉल के एक जर्जर भवन में केवल आठ परिवार इकाइयों के साथ केंद्र की एक सादी शुरुआत हुई। इस जगह को मुंबई पुलिस के पूर्व कमिश्नर जुलिओ रिबेरो और दी बॉम्बे मदर्स एंड चाइल्ड वेलफेयर सोसाइटी के तत्कालीन अध्यक्ष द्वारा प्रदान किया गया था।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस उपक्रम में सैंट जूड के साथ रोटरी एक गर्वित साझेदार बन गया है।

.. और वे ठीक हुए

अस्पतालों द्वारा मिलने वाले इलाज और दवाइयों के अलावा, नन्हे कैंसर मरीजों को आरामदेह एवं स्वास्थ्यकर आवास, पौष्टिक आहार एवं उनके माता-पिता की देखभाल मिलने के कारण अब बहुत से बच्चे ठीक हो रहे है और वापस अपने घर उनकी शिक्षा ज़ारी रखने एवं एक सामान्य जीवन जीने के लिए लौट रहे है।

माला आगे कहती है, ''हमारा सपना कैंसर का उपचार प्राप्त कर रहे प्रत्येक जरूरतमंद बच्चे को सहायता सुनिश्चित करने का है और टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल, भारत का प्रमुख कैंसर अस्पताल, ने SJICC से कहा है कि जहाँ कहीं भी वे अस्पताल खोले वहाँ वे उनके साझेदार बने। क्योंकि बचपन में होने वाले कैंसर के ठीक होने की संभावना अधिक होती है यदि उपचार उचित ढंग से एवं समय पर देकर पूर्ण कर लिया जाए, SJICC के कारण, हजारों परिवार उनके बच्चों को कैंसर से लड़कर उसपर जीत हासिल करने का मौका दे पाए। और हम रोटेरियन इस मानवीय सेवा का हिस्सा होने पर गौरवान्वित महसूस करते है।''

सेंटर में एक उज्ज्वल कमरा।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

मधुमेह जागरूकता के लिए वॉकथन

टीम रोटरी न्यूज़

मधुमेह के बारे में लोगों को जागरूक बनाने के उद्देश्य से, सुप्रीम क्लिनिक, आकुडी के सहयोग से रोटरी क्लब निगडी, मंडल 3131 द्वारा हाल ही में आयोजित वॉकथन में 800 से अधिक लोगों ने भाग लिया। उप महापौर शैलाजा मोरे ने समारोह का उद्घाटन किया, और पैदल यात्रा शुरु करने से पहले सभी प्रतिभागियों के रक्त में शर्करा की जाँच की गई। रोटरियनों ने संपूर्ण वॉकथन मार्ग पर मधुमेह के विषय पर बैनर प्रदर्शित किया। 2 किमी लंबी पैदल यात्रा के बाद नाश्ते और मधुमेह की जागरूकता पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जहाँ मधुमेह रोगियों के लिए स्वस्थ आहार, मधुमेह रोगों में एनेस्थेसिया और मधुमेह रोगियों के सर्जरी की चुनौतियों पर चर्चा की गई।

यातायात पुलिस ने पैदल यात्रा को नियंत्रित किया और स्वयंसेवकों ने प्रतिभागियों के बीच पानी की बोतलों मंडल और ग्लूकॉन डी के पाउच का वितरण किया। किसी भी प्रकार के आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए एक एम्बुलेंस तैयार रखा गया था। सभी प्रतिभागियों को टी-शर्ट और कैप दिया गया। इस कार्यक्रम ने क्षेत्र में रोटरी की सार्वजनिक छवि को बढाने में मदद की। ■

राउरकेला में फिटनेस को प्रोत्साहित करना

टीम रोटरी न्यूज़

राउरकेला रॉयल के रोटरी क्लब, मंडल 3261, ने हाल ही में 'मेगा साइक्लोथोन' के माध्यम से शहर के नागरिकों के मध्य स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को बढावा दिया, जिसमें शहर के बाहरी इलाके के 200 आदिवासी छात्रों सहित लगभग 900 पंजीकृत लोग शामिल हुए। ''हम इसे बात से प्रसन्नता थी कि हमारे कार्यक्रम में समाज के सभी स्तरों के लोगों ने भाग लिया; यह केवल ङ्कसभ्रांत विशेष' लोगों का कार्यक्रम नहीं था,'' सहायक गवर्नर अजय अग्रवाल ने कहा।

सुबह की बेला में प्रतिभागियों को खुश करने के लिए 1,500 से अधिक लोग एकत्र हुए थे। पीडीजी शशि वारवन्दकर के साथ आठ बार राष्ट्रीय चैंपियन रह चुके अनुभवी साइकिल चालक मिनाती महापात्र ने चार प्रकार के मैराथन को झंडी दिखाकर रवाना किया।

पुरुषों और महिलाओं के लिए 16 कि मी की दौड़ में रु 11,000 (प्रथम) रु 5,000 (द्वितीय) और रु 3,000 (तृतीय) की पुरस्कार राशि के साथ मुख्य आकर्षण था, परंतु इसके साथ ही 16 किलोमीटर, 8 किमी और 4 किमी के तीन और अधिक मजेदार रेस का आयोजन भी युवा आयु वर्ग के लिए किया गया। आदिवासी, हिप-हॉप नृत्य, स्टील्ट वॉकर और जादुई करतबों के डेमो सहित अनेक मनोरंजन कार्यक्रमों ने आगंतुकों को काफी रोमांचित किया। कार्यक्रम के 10 बजे तक समाप्त होने तक, सोशल मीडिया पर खुश चेहरे और मजेदार पोस्ट ने क्लब की सार्वजनिक छवि को बेहतर बनाने में योगदान दिया।

सायक्लटन के अध्यक्ष राकेश अग्रवाल, जो एक प्रसिद्ध साइकिल चालक है, और जिन्होंने अनेकों राष्ट्रीय और वैश्विक मैराथन में भाग लिया है और इस आयोजन के सृजक थे, तथा क्लब के अध्यक्ष विवेक एल ने वर्ष 2018 में इस परियोजना को और आगे बढाने का निर्णय लिया है।

स्कैन स्टील्स, ट्रैक एंड ट्रेल, ऑडी भुवनेश्वर, महानदी कोलफील्ड्स और पेट्रोलियम रिसर्च कंजर्वेशन अथॉरिटी जैसी कॉर्पोरेट कंपनियों ने प्रायोजन के कार्यक्रम के संचालन में महती भूमिका निभाई। ■

मंडल 3160 महिला अधिकार पर ध्यान केंद्रित करता हैं

जयश्री

भारतीय सम्मेलन लगभग फिल्मों के सामान होते हैं। वे जोश और उत्साह से भरे होते हैं... यहाँ होना एक बहुत ही बेहतरीन अनुभव है,'' स्वीडन के आरआई के निदेशक मिकेल एहलबबर्ग ने बेंगलुरु में डीजी मधुप्रसाद कुरुवादी द्वारा आयोजित मंडल 3160 के मंडल सम्मेलन के दौरान ये बातें कही।

''यहां के रोटेरियन उत्साही और मैत्रीपूर्ण होते हैं, वे सेवा के प्रति अत्यंत समर्पित हैं। यहां आने पर, हम महसूस कर सकते हैं कि भारत में रोटरी कितना शक्तिशाली है।'' उनकी पत्नी शार्लेट ने कही।

''रोटेरियन के चारों ओर फैले हुए ऊर्जा, संस्कृति और प्यार के कारण भारत हमारे लिए बहुत खास है, और पति-पत्नियों के बीच असंख्य रोटरी समर्थकों को देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई है। रोटरी समर्थकों को रोटेरियन में बदलकर, रोटरी के लिए यहां और विकास करने की क्षमता मुझे दिखाई देती है।'' विशाल कार्यक्रम के तुरंत बाद, दोनों दंपतियों ने

आरआईडी माइकल एहलबर्ग, पीआरआईडी अशोक महाजन और शार्लेट एहलबर्ग का पारम्परिक स्वागत किया गया। चित्र में डीजी मधुप्रसाद, डीजीएनडी चिन्नप्पा रेड्डी भी मौजूद हैं।

रोटेरियन के चारों ओर फैले हुए ऊर्जा, संस्कृति और प्यार के कारण भारत हमारे लिए बहुत खास है, और पति-पत्नियों के बीच असंख्य रोटरी समर्थकों को देखकर उन्हें बहुत प्रसन्नता हुई है।

शार्लेट एहलबर्ग

आरआईडी माइकल एहलबर्ग और शार्लेट, अतिथियों और स्पीकर लावण्या पटेल और पीडीजी आर एस नारायणस्वामी के साथ नृत्य प्रदर्शन करते हुए।

होस्पेट के निकट स्थित हम्पी के प्रसिद्ध खंडहर का दौरा किया।

इस दो दिवसीय सम्मेलन की मेजबानी चित्रदुर्गा के चार रोटरी क्लब - रोटरी क्लब चित्रदुर्ग, फोर्ट, चिन्मुल्लादिरी और मंडल के केवल अखिल-महिला क्लब, विंडमिल सिटी द्वारा की गई थी। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए करीब 1,200 प्रतिनिधियों ने पंजीकरण कराया था।

सम्मेलन के अध्यक्ष एम के रविंद्र और उनकी पत्नी और सम्मेलन सचिव वेद के नेतृत्व में सम्मेलन समिति द्वारा ''पारंपरिक स्वागत से एहल्बर्ग और शार्लेट अत्यंत अभिभूत'' थे। इसमें *पूर्णकुम्भ* भी शामिल थे जो संस्कृत में श्लोकों का जाप कर रहे थे। पीआरआईडी अशोक महाजन और पद्मभूषण डॉ बी एन सुरेश राव, भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्थान के संस्थापक निदेशक, इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे।

पीआईआईडी महाजन ने *दान ही जीवन है*, विषय पर अपना विचार व्यक्त किया। आदित्य बिड़ला फाउंडेशन के अध्यक्ष राजश्री बिड़ला की उदारता का हवाला देते हुए उन्होंने कहा, ''बिरला पैसे का मूल्य, और उसके उचित उपयोग के बारे में जानते है। उनके जैसे लोगों को हम हृदय से धन्यवाद देते हैं, जिनके योगदान से हमारे पोलियो निधि ने विश्व को लगभग पोलियो मुक्त बनाने की अद्वितीय उपलब्धि हासिल की है।'' उन्होंने 250,000 का योगदान करने के लिए पीडीजी रवि वदलमानी (मंडल 3150) की भी प्रशंसा की। ''उनसे किसी ने भी अनुरोध नहीं किया, वे स्वयं एक एक्सेस सदस्य बन गए।'' महाजन ने डीजी मधुप्रसाद को उनके योगदान लक्ष्य को 250,000 डॉलर से 265,000 डॉलर तक बढाने के लिए प्रोत्साहित किया जिससे डीजी ने सहमति व्यक्त की। सभी 56 सदस्यों के पीएचएफ बनने के साथ ही उनके उनके होम क्लब रोटरी क्लब चित्रदुर्ग ने पहले ही 40,000 डॉलर एकत्र कर लिया हैं।

वदलमानी ने अपने सत्र, अनुदानों के जादू, के माध्यम से *वैश्विक अनुदान प्राप्त करने की प्रक्रिया का जादू समझाया।* उन्होंने प्रतिनिधियों को टीआरएफ को देने के लिए प्रोत्साहित किया और समझाया कि टीआरएफ अनुदान ने उनके मंडल में रोटरी क्लब गुंटूर को एक सरकारी अस्पताल में ऑपरेशन थियेटर का निर्माण करने के लिए आर्थिक मदद कैसे उपलब्ध कराया। उन्होंने कहा, ''वैश्विक अनुदान के जरिए 3 करोड रुपये की परियोजनाओं को क्रियान्वित करना संभव हुआ है, जबकि क्लब ने सिर्फ रु 6,000 का योगदान दिया।''

पीडीजी टिक्कू (मंडल 3150) ने रोटेरियनों को फाउंडेशन से सहायता लेने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि ''लाभों को समझने के बाद ही, आप फाउंडेशन के मूल्य को जान

सम्मेलन के अध्यक्ष एम के रवींद्रा और पत्नी वेदा का सत्कार। आरआईडी एहलबर्ग, शार्लेट, डीजी मधुप्रसाद उनकी पत्नी माधुरी भी चित्र में सम्मेलन टीम के साथ मौजूद हैं।

सकेंगे और आपको देने के लिए प्रोत्साहन प्राप्त होगा।''

डॉ. राव ने वैज्ञानिक विक्रम साराभाई और दिवंगत राष्ट्रपति अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि देते हुए एक अंतरिक्ष कार्यक्रम के विकास के महत्व के बारे में बताया और समझाया कि यह सभी क्षेत्रों में कैसे उपयोगी है। ''तकनीक वास्तव में कठिन है, और इसलिए वाक्यांश 'रॉकेट विज्ञान' का प्रयोग आमतौर पर किया जाता है जब आप एक महान कार्य को पूरा करने का निश्चय करते हैं।''

अनेक वक्ताओं ने अपना विचार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिया। हिलेरी लीव, आरआई के मूल्यांकन और रणनीतिक प्रबंधक, इवान्स्टन, ने आरआई की सामरिक योजना के बारे में बताया। मनोवैज्ञानिक लवानी पटेल ने दर्शकों को अपने ''दबावों को खुशी'' में परिवर्तित करने का गुर बताया और उन्हें संगीत के लाभों से परिचित करवाया, लक्ष्मी माई, एक ट्रांसजेंडर अधिकार कार्यकर्ता थे, ने प्रतिनिधियों से अपने बेटों को लिंग संवेदनशीलता के बारे में संवेदनशील बनाने की अपील की, ताकि वे महिलाओं को समझें और उनका बेहतर तरीके से सम्मान करें, जो कि महिला भ्रूण-हत्या को कम करने और अन्य सभी प्रकार के दुर्व्यवहारों को कम करने में मदद करेगी। उसने सुझाव दिया कि रोटेरियन को ट्रान्सजेंडर के लिए रात्रिकालीन आश्रयों की स्थापना करनी चाहिए, जिनमें से ज्यादातर प्लैटफॉर्म पर जीवन-जीने को विवश हैं, जिससे उन्हें विभिन्न प्रकार के जोखिमों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने आजीविका में सहायता के लिए तीसरे लिंग के लिए व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने की अनुशंसा की। ''उन्हें आपकी सहानुभूति और मदद की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, आप उन्हें एक सभ्य जीवन जीने का अवसर दीजिए।''

शिक्षाविद् गुरुराज करजगी द्वारा संबोधित एक जानकारीपूर्ण सत्र ने दर्शकों का ध्यान आकर्षित किया। अपने सत्र के दौरान उन्होंने कुछ विचारोत्तेजक बाते कहीं:

- महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और मदर टेरेसा जैसे लोगों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा, जो खुद के लिए जीवित रहे, उसे याद नहीं किया जाएगा; जो दूसरों के लिए जीता है वो नहीं भुलाया जाएगा।
- मत सोचो कि लोग आपसे हमेशा कुछ उम्मीद करते हैं; कभी कभी सहारा देने के लिए एक कंधा ही काफी होता है।
- दूसरे के काम में दिलचस्पी दिखाइए, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, उसके लिए यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।
- शिक्षण एकमात्र व्यवसाय है जिसमें भविष्य के साथ एक संवाद किया जाता है।
- आप जो कहते है, लोग उसका अनुसरण नहीं करेंगे, बल्कि आप जो करते हैं, उसका अनुसरण करेंगे।

जब प्रख्यात टीटी चैंपियन नैना जसवाल और उनके भाई, अगस्त्य, गुगल ब्वॉय, ने सूचनाओं को याद रखने के लिए चेन मेमोरी की कला का प्रदर्शन किया, बल्कि आँख मूँद कर चीजों को याद करना जो स्कूली बच्चों में आम बात है, तो दर्शकों ने जोरदार तालियों से उनका उत्साहवर्द्धन किया। नैना ने 8 वर्ष की आयु में ही अपनी 10 वीं कक्षा की परीक्षा उत्तीर्ण की, और अब 17 वर्ष की आयु में डॉक्टरेट करने वाली संभवत: सबसे छोटी किशोरी है। समान रूप से प्रतिभाशाली अगस्त्य ने पिछले साल इतिहास रच डाला, जब वह मात्र 11 वर्ष की आयु में इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले सबसे कम उम्र के लड़का बन गया।

पुरस्कार और सम्मान

डीजी मधुप्रसाद ने रोटरी क्लब नेल्लोर के बोमिना नागा सतीश बाबू को एंडोमेंट फंड में योगदान देने के लिए सम्मानित किया, जो मंडल से ऐसा दान देने वाले पहले दाता है। इसके साथ ही डॉ सज्जन कुमार को पिछले 28 वर्षों से लगातार उनके 1,000 डॉलर के वार्षिक अंशदान और पीडीजी सुरेंद्र रेड्डी को आरआई के विशिष्ट सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 65,000 नि: शुल्क मोतियाबिंद सर्जरी करने के लिए राज्यकीय सम्मान प्राप्त करने वाले अनकापुत्तूर के डॉ अक्षर बाबू को भी सम्मानित किया गया। डीजी और रोटरी क्लब होस्पेट की उपस्थिति में निदेशक अहलेबर्ग ने प्रमुख दाताओं को सम्मानित किया और रोटरी क्लब होस्पेट को 100 प्रतिशत पीएचएफ क्लब बनने के लिए मान्यता प्रदान की गई।

चित्र: जयश्री

रूबेला के बारे में जागरूकता बढ़ना

रूबेला जागरूकता के वॉक थॉन में।

टीम रोटरी न्यूज़

जैसा कि भारतीय रोटेरियन, भारत सरकार के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार हैं ताकि रूबेला, खसरा, क्षय रोग जैसी बीमारियों के रोकथाम के लिए व्यापक कवरेज को सुनिश्चित किया जा सके। इस दौरान इनर व्हील डिस्ट्रिक्ट 323 द्वारा चेन्नई में इलियट के समुद्र तट पर रूबेला अवेयरथन वाक का आयोजन किया गया था।

रूबेला की गंभीरता को समझाते हुए, भूतपूर्व मंडलध्यक्ष नलिनी प्रभाकर ने कहा कि यह खसरा का एक हल्का रूप है जो किसी को भी प्रभावित कर सकता है। लेकिन ''सबसे अधिक जोखिम गर्भवती महिलाओं को है; क्योंकि अगर वह गर्भावस्था के दौरान रूबेला से पीड़ित हो जाती है, तो बच्चा जन्म जात दोष के साथ पैदा हो सकता है।'' लेकिन इसे टीके का एक खुराक लेकर रोका जा सकता है, ''हर लड़की को 15 वर्ष की उम्र में या शादी से पहले इसका एक टीका लगवाना चाहिए।''

रूबेला के खतरों और रूबेला टीकाकरण के महत्व को समझाने के लिए, लगभग 300 इनर व्हील के सदस्य और छात्र तमिल और अंग्रेजी में प्लैकार्ड लेकर समुद्र तट की ओर कदमताल किया। ऐसी ही जानकारियों वाली पुस्तिकाओं का वितरण किया गया।

नलिनी के अलावा, इस सार्वजनिक शिक्षा अभियान की योजना में शामिल अन्य लोगों में मंडलध्यक्ष पद्मा प्रीता सुमंत और विशेष परियोजना समन्वयक विजयलक्ष्मी प्रभाकर शामिल थे।

सहायक पुलिस आयुक्त रवींद्रन द्वारा कदमताल को झंडी दिखाकर रवाना किया गया। ■

रोटरी ने छह प्रसिद्ध लोगों को सम्मानित किया

टीम रोटरी न्यूज़

रोटरी क्लब बॉम्बे सी फेस, मंडल 3141 द्वारा *रोटरी सेवा अभियान* परियोजना के अंतर्गत छह प्रसिद्ध व्यक्तियों को वोकेशनल एक्सलैंस अवार्ड्स देकर सम्मानित किया गया। मनीषी एम वोरा, प्रभारी निदेशक, वोकेशनल सर्विस, कहते हैं कि पहली बार, क्लब ने नवीन-स्थापित हुए उद्यमों पर अपना ध्यान केंद्रित किया था।

हग इनोवेशन्स, हैदराबाद के संस्थापक राज नेरवती, जो इशारों से नियंत्रित करने वाले स्मार्ट घड़ियों का निर्माण करते हैं, और इन्वेंटो रोबोटिक्स, बेंगलुरु के बालाजी विश्वनाथन, जिन्होंने मानव-तुल्य रोबोट तैयार किया था जो मनुष्य के चेहरे की भावभंगिमा की पहचान कर सकता है और कई भाषाओं में बातचीत कर सकता है, ने स्टार्ट-अप श्रेणी में अवार्ड को साझा किया। दोनों कंपनियों ने दिसंबर 2017 में *इकोनॉमिक टाइम्स* द्वारा जारी 50 *हॉट स्टार्ट-अप* की सूची में अपना स्थान बनाया था।

पुरस्कार विजेताओं के साथ रोटेरियन।

एडेलवेस समूह के संस्थापक राशेशशाह और इसरो की शाखा लिक्विड प्रोपल्शन सिस्टम सेंटर (एलपीएससी), की वैज्ञानिक रेवती हरिहरकृष्णन अन्य अवार्ड प्राप्तकर्ता थे।

म्यूजिक संगीतकार आनंदजी वीरजी शाह, प्रसिद्ध कल्याणजी-आनंदजी के सहोदर भाई, और डॉ भीम सेन सिंघल, न्यूरोलॉजिस्ट, जो बॉम्बे हॉस्पिटल इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में पढाते हैं, को लाइफ टाइम अचिएवेमेंट देकर सम्मानित किया गया। ■

TRF में देने के लिए अब एक SIP?

रशीदा भगत

रोटेरियनों के मध्य देने की आदत को उनके मन में बिठाने के लिए, ''हम एक SIP (सिस्टेमेटिक इन्वेस्टमेंट प्लान) को शुरू करने की योजना बना रहे है जिसके माध्यम से रोटेरियन नियमित रूप से दी रोटरी फाउंडेशन को अपनी पसंद की राशी का योगदान दे सकते है। राशी महत्व नहीं रखती; यह रु 100 की छोटी राशी भी हो सकती है या रु 1,000 या इससे ज्यादा की भी। ऐसी आदत को विकसित करना महत्व रखता है,'' पीडीजी विनोद बंसल ने कहा जिन्हें कान्हा, मध्यप्रदेश में संपन्न हुए रोई मंडल 3261 के मंडल सम्मेलन, जिसका शीर्षक था राइजिंग 3261, का RIPR नियुक्त किया गया था।

इस मंडल का ARFC भी होने के नाते, उन्होंने कहा कि रो ई अध्यक्ष इयन राय्सली का प्रतिनिधि होने के कारण, वह प्रतिनिधियों के लिए अध्यक्ष की ओर से कई सन्देश लायें है। पहला संदेश था कि रोटरी एक 113 वर्ष पुराना सेवा संगठन है जिसके नाम बहुत सी उपलब्धियाँ है। इसके द्वारा कुछ सिद्धांतों का पालन करने के कारण, इसने इसकी समुदाय की सेवा करने की विरासत को 100 वर्षों से अधिक समय से संभाले रखा है, जबकि कई दूसरों ने हार मान ली। ''उन सिद्धांतों में से एक है

डीजी हरजीत हुरा, संगीता बंसाल और क्लब के नेता की उपस्थिति में आरआईपीआर विनोद बंसाल, रोटरी क्लब विलासपुर क्वीनस् का प्राधिकार करते हुए।

बदलते वक्त के साथ बदलना। हमारे अध्यक्ष ने यह एकदम स्पष्ट कर दिया है कि यदि रोटरी को अगले 100 वर्षों तक उपयुक्त बने रहना है, तो इसे समाज की जरूरतों के अनुसार बदलना होगा।''

लेकिन यह सुनिश्चित करने के लिए, सदस्यता का वर्तमान प्रतिरूप एवं संरचना काम नहीं करेगी; ''हम एक ऐसे संगठन के रूप में विकास नहीं कर सकते जिसके लगभग 90 प्रतिशत सदस्य 50 से अधिक उम्र के हो।'' उन्होंने कहा, समाज के दो बड़े वर्ग– महिलाएं एवं युवा – का रोटरी में पर्याप्त रूप से प्रतिनिधित्व नहीं किया गया और इसे बदलना होगा। पर्यावरण का बचाव और इसका क्षरण रोकने के लिए गंभीर प्रयासों की आवश्यकता, और संवहनीय परियोजनाएं करना, उनके द्वारा लाए राय्सली के अन्य सन्देश थे। ''जैसा कि हमारे रोई अध्यक्ष कहते है, रोटरी का काम कुएं खोदना नहीं है बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि हमारे द्वारा समुदाय को दिए गए कुएं में वर्षों तक पानी आता रहे।''

बंसल ने आगे कहा कि एक नेता की सच्ची विशेषता सभी लोगों को साथ लेकर चलने एवं एक संसक्त दल की तरह काम करने की क्षमता होती है, और मंडल 3261 के डीजी हरजीत हूरा भी एक ऐसे ही नेता साबित हुए है। चूंकि मंडल 3261 उनके अंतर्गत आता है, एक ARFC होने के नाते उन्हें यह करीब से देखने का मौका मिलता है कि कैसे डीजी ने 3261 जैसे मुश्किल मंडल का नेतृत्व संभाला है ''जिसकी अपनी स्वयं की खासियतें, मसले, सांस्कृतिक विविधता और अन्य चुनौतियां है। तीन राज्यों के हिस्से जिसमें आप काम करते है और मौजूदा आर्थिक असमानता के साथ, आपके मंडल की भौगोलिक विविधता के बावजूद भी आपके नाम बड़ी उपलब्धियाँ है और आप अत्यंत सफल हुए है।''

हम एक ऐसे संगठन के रूप में विकास नहीं कर सकते जिसके लगभग 90 प्रतिशत सदस्य 50 से अधिक उम्र के हो।

पीडीजी और एआरएफसी
विनोद बंसाल

उन उपलब्धियों में से एक है रायपुर के सत्य साईं संजीवनी अस्पताल को तीन करोड़ रुपये से अधिक की बड़ी लागत और एक वैश्विक अनुदान के माध्यम से आधुनिक कैथ लैब प्रदान करना। बंसल ने उनको बधाई देते हुए आगे कहा, सदस्यता बढ़त में भी हूरा ने उम्मीद से अधिक किया है।

मंडल में अधिक रोटेरियनों को PHF एवं बड़े दानकर्ता बनने के लिए प्रेरित करते हुए, बंसल ने आगे कहा कि वह स्वयं 2007 में बड़े दानकर्ता बनें, और पाया कि जब भी ''मैंने एक अच्छे कारण के लिए ढठऋ को दिल खोलकर दिया, भगवान ने मुझे बदले में और अधिक प्रदान किया।''

राइजिंग 3261 क्यों?

सम्मलेन को संबोधित करते हुए, जिसमें 350 सदस्यों ने पंजीकरण करवाया था, हूरा ने समझाया कि क्यों उन्होंने उनके सम्मेलन का नाम 'राइजिंग 3261' रखा था। जब वह तीन वर्ष पूर्व DGN बनें, ''तब जयपुर इंस्टिट्यूट में रोई निदेशक ने कहा था कि मंडल 3261 सबसे निम्न प्रदर्शन करने वाला मंडल है; ऐसे तीन मंडलों के नाम लिए गए और उनमें से एक हमारा था। मुझे बहुत बुरा लगा... मैंने हमारे पीडीजी से इसका कारण पूछा और उन्होंने बताया कि ऐसा इसलिए है क्योंकि हम टीआरएफ में

कम योगदान देते है। मैंने कहा, पैसे के आधार पर श्रेणीबद्ध करना, यह एक सामाजिक सेवा संगठन की कसौटी नहीं हो सकती।''

लेकिन जब उन्होंने रोई निदेशक से बात की, ''उन्होंने कहा: 'हरजीत, क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे मंडल में कितने क्लबों को प्रशस्ति पत्र मिले है? 70 में से केवल एक को। और वह रोटरी क्लब संबलपुर है (उनका अपना क्लब)।

क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे मंडल के 2,400 रोटेरियनों में से केवल 140 ने My Rotary पर पंजीकरण किया है? इसलिए तुम्हारा नाम नीचे है।''

हूरा ने कहा कि उन्होंने इसे एक चुनौती के रूप में लिया; 1 जुलाई को उनके द्वारा डीजी का प्रभार संभालने के बाद से, जहाँ My Rotary पर मंडल 3261 के 185 सदस्य पंजीकृत थे, वहीं अब संख्या 1,000 तक पहुँच गई है। उन्होंने मंडल प्रशिक्षक पीडीजी शंभू जगतरामका, माय रोटरी अध्यक्ष एफ सी मोहांटी और वेबमास्टर जतिंदर शर्मा को इसका श्रेय दिया। उनके पास चार महीने और है और वह संख्या को 2,000 तक ले जायेंगे।

हूरा ने आगे कहा कि एक सर्जरी के कारण वह रोटरी की गतिविधियों से 45 दिन तक दूर रहे, ''लेकिन हमारे मंडल में मापदंडों को सुधारने के लिए हमने कड़ी मेहनत की है।'' जब उन्होंने डीजी का प्रभार संभाला, पाँच क्लब बंद हो गए, तीन क्लब शुल्क ना चुकाने की वजह से लेकिन ''उसमें मेरा दोष नहीं था। इस सब के बावजूद, अब तक हमने 150 सदस्य जोड़े है, रो ई निदेशक सी भास्कर को किये गए सदस्यता लक्ष्य के वादे को पूरा करते हुए।'' रोटरी क्लब संबलपुर ग्रेटर और रोटरी क्लब रायपुर ग्रेटर दोनों ने ही कई रोटेरियनों को एक ही दिन में PHF बनते देखा।

सम्मेलन में, बंसल ने एक अखिल महिला क्लब रोटरी क्लब विलासपुर क्वीन्स को अधिकृत किया ''और उनके द्वारा प्रदर्शित ऊर्जा एवं जोश को देखकर, मैं जानता हूँ वे उत्कृष्टता हासिल करेंगी। रोटरी में अधिक महिलाओं को भर्ती करने के रोई अध्यक्ष इयन राय्सली के निर्देशों के मुताबिक, हम एक अन्य

डीजी हरजीत हुरा और उनकी पत्नी रानी पीडीजी सुभाष साहु को मंडल सम्मेलन में सम्मानित करते हुए।

बाएं से : डी 3262 पीडीजी अशोक मोहपात्रा, डी 3261 पीडीजीओं एस पी चतुर्वेदी, शशि वरवांकर, डी 3262 डीजी हरजीत हुरा, पीडीजी राकेश दवे और डीजीई निखिलेश त्रिवेदी।

महिला क्लब - रोटरी क्लब जबलपुर क्वीन्स - खोलने जा रहे है। आवेदन प्रस्तुत किया जा चुका है और कुछ दिनों में अधिकार-पत्र आ जायेगा। दो क्वीन्स क्लब शुरू कर दिए गए है, तीन अन्य क्वीन्स क्लबों के साथ पाँच और रोटरी क्लबों की योजना बन रही है। 30 जून को मेरे प्रभार सौंपने तक, मैं हमारे सदस्यता आंकड़े को 400 के पार ले जाने को लेकर आश्वस्त हूँ,'' तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उन्होंने कहा।

TRF के दान में सुधार

डीजी ने आगे कहा कि TRF के मोर्चे पर भी चीज़ों में सुधार हुआ है। ''जिस समय हमारे मंडल का गठन हुआ, हमारे पास केवल छह बड़े दानकर्ता थे जो TRF के लिए 10,000 डॉलर का योगदान देते थे। लेकिन केवल आठ माह में, मैंने अतिरिक्त छह बड़े दानकर्ता तैयार कर लिए, जिनमें पीडीजी विवेक तनखा भी शामिल थे, जिनके पास में सर्वप्रथम पहुँचा था। और मुझे यकीन है इस सम्मेलन में हमें कुछ और बड़े दानकर्ता मिल जाएँगे।''

उन्हें चार मिल गया - सुशील रामदास (आर सी राय गढ़ स्टील सिटी) निखिल ढगत (रायपुर मिडटाउन), डीजीएनडीएफ सी मोहंती और मनजीतसिंह अरोड़ा (आर सी राउरकेला मिडटाउन)।

तनखा, ''जिन्होंने कई सारे राहत चिकित्सा शिविर आयोजित करके, नेत्र सर्जरी के लिए बहुत से लोगों को जबलपुर से दिल्ली ले जाकर, और उड़ीसा तूफ़ान के दौरान कड़ी मेहनत करके, हमारे मंडल के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया है,'' को सम्मेलन में लेजेंडरी रोटेरियन अवार्ड देकर सम्मानित किया गया। चूंकि उन्हें PMO के प्रतिनिधि मंडल के साथ नेपाल जाना पड़ा, उनकी पत्नी आरती ने पुरस्कार स्वीकार किया और सभा को संबोधित किया। सम्मेलन में अन्य वक्ताओं में आज तक टीवी चैनल के कार्यकारिणी प्रमुख संजय सिन्हा भी शामिल थे।

रोटेरियनों को TRF के लिए उदारतापूर्वक दान करने के लिए प्रेरित करते हुए, हूरा ने कहा, हमें विश्व में और अधिक अच्छा करने के लिए पैसे की जरुरत है। श्री सत्य संजीवनी अस्पताल में जो कैथ लैब हमने स्थापित की उससे सर्जरी के जरूरतमंद बच्चों की प्रतीक्षा अवधि तीन साल से घटकर 15-18 महीने हो गई है। अब हम एक अन्य वैश्विक अनुदान की प्रतीक्षा कर रहे है ताकि इस अस्पताल को एक ऑपरेशन थिएटर प्रदान करके बच्चों के लिए प्रतीक्षा अवधि को और कम किया जा सके। हमारी एक अन्य अच्छी परियोजना रायपुर में एक डायलिसिस केंद्र की है। आपकी सहायता से हम और भी अधिक कर सकते है।''

डीजीई निखिलेश त्रिवेदीमें अपने अनुभव का वर्णनअंतरर्राष्ट्रीय विधानसभा में करते हुए कहा कि वह चकित थे जिस अनुशासन द्वारा और संक्षेप में जिस तरीके से सभी वरिष्ठ रो ई नेताओं ने अपनी प्रस्तुतियों बनायीं - शुरुआत से - अंत समाप्तसमय पर। बहुत सारा बातें सिखने को मिली, उन्होंने कहा।

चित्र: रशीदा भगत

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

अपंग लोगों को मिला नया जीवन

वी. मुत्तुकुमारण

होसर का अभिजीत (7) एवं उसकी माँ रोटरी क्लब बैंगलोर पीन्या, मंडल 3190, द्वारा प्रति वर्ष जनवरी में आयोजित किये जाने वाले जयपुर लिंब फिटमेंट शिविर का बेसब्री से इंतज़ार करते है ताकि उसके कृत्रिम पैर को बदला जा सके। 2013 में, घर के सामने खेलते वक्त, अभिजीत के ऊपर से एक रिवर्स होता ट्रक निकल गया था।

बढ़ते हुए बच्चे जिन्होंने अपने पैर गंवा दिए हो, उनके लिए बढ़ते हुए पैर के अनुसार समय-समय पर अपना कृत्रिम पैर बदलवाना अनिवार्य है ताकि लचीलापन सुनिश्चित किया जा सके। पिछले 21 वर्षों में, जयपुर लिंब फिटमेंट शिविर 38,000 लाभार्थियों तक पहुँचा है। रोटरी क्लब बैंगलोर पीन्या की अध्यक्ष सविता सुरेश कहती है, हम छात्रावास-किस्म का आवास और दिन में तीन बार भोजन प्रदान करते है जिसमें स्नैक्स एवं पेय के अतिरिक्त, सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात का खाना शामिल है। जिन्हें रात रुकने की आवश्यकता है, हम उन्हें दरी, तकिया एवं कम्बल प्रदान करते है।

जयपुर की भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (BMVSS) के साथ साझेदारी में, क्लब पिछले चार दशकों से इस परियोजना पर कार्य कर रहा है एवं 21 वर्ष पुराने लिंब फिटमेंट शिविर, एक चिन्हक परियोजना, को रोटरी अंतर्राष्ट्रीय की 100 'आदर्श परियोजनाओं' में शामिल किया गया है।

विस्तृत प्रचार एवं प्रसार

मंडल में लगभग 140 क्लब विभिन्न मीडिया प्रणालियों के माध्यम से लांच से पूर्व के प्रचार एवं अभियान में शामिल होते है ताकि अधिक से अधिक लाभार्थियों को आकर्षित किया जा सके। ''दर्शकों की भलाई के लिए, हमारे कन्नड़ टीवी चैनल भी शिविर के एक हफ्ते पहले पूरे दिन सन्देश को स्क्रॉल कर अपना

मुस्कुराता सुमंत अपने माता पिता और अध्यापक के साथ।

मुफ्त है और लाभार्थियों को केवल आयोजन स्थल पर आना होता है और फिर हम सभी चीज़ों की देखभाल करते है सविता कहती है।

सविता सुरेश
अध्यक्ष
रोटरी क्लब बैंगलोर पीन्या

अपनी माँ की मदद से शबीना केपिलर पहनती हुई।

योगदान देते है।'' इस वर्ष, क्लब ने व्हाट्सएप के माध्यम से सामाजिक मीडिया का भी सहारा लिया और ''हमारे तीन समर्पित स्वयंसेवकों में से प्रत्येक को आयोजन दिवस तक हर दिन लगभग 300-350 कॉल प्राप्त हुए।''

कुल मिलाकर, हफ्ते-भर तक चलने वाले इस शिविर में रोटेरियन, रोट्रैक्टर एवं इनर व्हील सदस्यों को मिलाकर 150 स्वयंसेवकों ने हिस्सा लिया। इसके अलावा, वाहन निर्माता कंपनी मर्सिडीज़ बेन्ज़ ने आयोजकों की मदद हेतु 50-सदस्यीय दल भेजा। शिविर पूर्णतः ''मुफ्त है और लाभार्थियों को केवल आयोजन स्थल पर आना होता है और फिर हम सभी चीज़ों की देखभाल करते है सविता कहती है।''

जयपुर के NGO के साथ एक बंधन

इतने वर्षों में, BMVSS के 15 सदस्यीय-दल ने क्लब के सदस्यों के साथ दोस्ती का एक संबंध स्थापित किया है। ''जयपुर के तकनीशियन शिविर स्थल पर रुकते है और प्रत्येक कृत्रिम पैर का निर्माण प्राप्तकर्ता की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार करते है। फिटमेंट के बाद हम पुनर्वास का भी ध्यान रखते है और इस बात का परामर्श देते है कि अपनी आजीविका के लिए मरीज किस प्रकार का काम करने के योग्य है,'' परियोजना प्रमुख वसंत कुमार कहते है। शिविर स्थल पर लाभार्थियों के नाम रोजगार के लिए भी पंजीकृत किये जाते है।

शिविर का आयोजन कोई आसान काम नहीं है; सही डिज़ाइन को आकार देने एवं प्रत्येक लाभार्थी को कृत्रिम अंग फिट बैठे यह सुनिश्चित करने के लिए तकनीकी दल को एक दिन में लगभग 14 घंटे कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ पर जरूरतमंदों को बैसाखी, कैलिपर और LN 4 कृत्रिम हाथ भी प्रदान किये जाते है।

अपने मौजूदा खराब ढंग से फिट होने वाले कृत्रिम अंग, जिससे उसे अनेक समस्याएं होती थी, के स्थान पर LN 4 कृत्रिम हाथ मिलने के बाद जगदीश अत्यधिक प्रसन्न हुआ। ''अब, कब्जों की मदद से मैं अपनी उँगलियों को चला सकता हूँ और तो और दस्तावेजों पर हस्ताक्षर भी कर सकता हूँ मेरे प्राकृतिक हाथ के एहसास के साथ जिसे मैंने एक सड़क दुर्घटना में खो दिया था,'' यह कहते हुए वह उसके जीवन में इस अमूल्य तोहफे के लिए रोटरी का धन्यवाद करता है। डीजी आशा प्रसन्नकुमार ने शिविर के 21वें संस्करण का उद्घाटन किया जिसमें 2,500 लाभार्थी आएं। ■

से पूछिए

जयश्री

सेलवम कहता है, ''अम्मा मीनाक्षी, कामाक्षी को पूजने के बाद रम्या के लिए एक पत्ता निकालो।'' मीनाक्षी, एक तोता, टें-टें करता है और पिंजरे से बाहर निकलकर एक बक्से पर चढ़ता है मानो बक्से के ऊपर रखी देवी कामाक्षी को पूजने जा रहा हो, फिर नीचे आता है और टैरो कार्ड के ढेर में चोंच मारता है। फिर वह एक पत्ता निकालकर सेलवम को देता है जिसके लिए वह तोते को उसकी सेवाओं के लिए एक दाना देता है, और फिर सेलवम देवी की स्तुति करके रम्या का भविष्य बताना शुरू करता है।

ऊपर का दृश्य 'तोता ज्योतिषशास्त्र' (तमिल में किली जोसियाम) कहलाता है, जो कि तमिलनाडू में एक आम बात है, खासतौर से छोटे नगरों में जहाँ कोई भी तोता ज्योतिषी को टैरो कार्ड और एक पिंजरे के साथ एक पेड़ के नीचे या सड़क किनारे बैठा देख सकता है। उनकी सेवाओं के लिए वह रु 11 या रु 21 का नाममात्र शुल्क लेते है।

पौराणिक संबंध

लेकिन तोता क्यों? एक कौवा या एक कबूतर क्यों नहीं? उपनिषद् कहते है कि तोते भविष्य देख सकते है। एक पौराणिक कथा के अनुसार जब संत सुखब्रह्म भेष बदले हुए राम, लक्ष्मण और सीता को नहीं पहचान पाए, तो एक पेड़ की शाख पर बैठा तोता राम, राम! चिल्लाया। और वह संत जो राम के दर्शन के लिए लम्बे समय से तपस्या कर रहे थे उनके चरणों में गिर गए। हिन्दू पौराणिक कथाएँ ऐसी ही अन्य दंतकथाओं से संपन्न है, जिसमें एक तोते के शरीर में संत अरुणागिरिनाथर द्वारा प्रभु कार्तिकेय पर कवितायेँ लिखने वाली कथा शामिल है; वास्तव में, तैत्तरीय उपनिषद् तो पक्षियों को समर्पित है।

ऐसा माना जाता है कि तोते मौसम की कड़ी स्थितियों जैसे तूफ़ान या बवण्डर का भी पूर्वानुमान लगा सकते है। यह एक सुप्रसिद्ध तथ्य है की चेन्नई और तटीय नगरों पर सुनामी का कहर टूटने से कई घंटों पहले ही पक्षियों ने अजीब व्यव्हार करना शुरू कर दिया था।

तोते हिन्दू देवी-देवताओं के लिए भी महत्व रखते है। संत आण्डाल को उनके बायें हाथ में एक तोता पकड़े हुए चित्रित किया गया है। यह तोता प्रतिदिन विशेषरूप से पत्तियों द्वारा बनाया जाता है और दिन के अंत में एक श्रद्धालु को दिया जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह सौभाग्य लाता है। एक परिवार इन तोतों को बनाने के लिए समर्पित है। एक तोता देवी मीनाक्षी के दाहिने कंधे पर सुशोभित है और माना जाता है कि वह देवी को 64 कलाओं का ज्ञान देता है। मदुरई मीनाक्षी मंदिर के *किली मंडपम* में अनेक तोते रहते है। जब आप 'रामा' या 'मीनाक्षी' पुकारते है, तो तोते आपके बाद दोहराते है। ऐसा माना जाता है कि उन्होंने वेदों को दोहराया है जिससे इस सिद्धांत की पुष्टि होती है कि हमारे द्वारा बोले जाने वाला प्रत्येक सुविचार दुहराता है।

तोता प्यार के देवता कामदेव की सवारी है। अनेक तमिल साहित्यों के कुछ छंदों के अनुसार तोता संदेशवाहक का काम भी करता था। पुराणों के अनुसार, प्यार के संदेशवाहक के रूप में सेवा देने के लिए आण्डाल के तोते को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है जो आण्डाल और भगवान् विष्णु के मध्य सन्देश पहुँचाता था।

एक घटता हुआ पेशा

दुर्भाग्य से, पशु कल्याण कार्यकर्ता एवं झएढ- जैसे संगठनों के कारण, तोता ज्योतिष के दिन बुरे चल रहे है। वह नहीं समझ पा रहा कि क्यों, क्योंकि *किली जोसियम* में पक्षियों को ना ही चोट पहुंचाई जाती है और ना ही पीड़ा दी जाती है। इसके उलट उनका अच्छे से ध्यान रखा जाता है और उन्हें खिलाया भी जाता है।

इसके अलावा, वर्तमान पीढ़ी इस काम को करने में रूचि नहीं रखती, सेलवम अफ़सोस जताते है। आमतौर पर यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाई जाती है। सेलवम के पूर्वज भी तोता ज्योतिषी थे। ''बचपन में मैं अपने पिता के साथ जाता था और जब मैं बड़ा हुआ,'' उन्होंने मीनाक्षी को प्रशिक्षित करके मुझे सौंप दिया। मीनाक्षी सेलवम के साथ पिछले सात सालों से है। एक तोते की उम्र 40 वर्ष होती है और *किली जोसियम* के लिए आमतौर पर मादा तोते का इस्तेमाल किया जाता है, वह कहते है।

हम मांस और चिकन खाते है। लेकिन तोता ज्योतिष बंद करने के पीछे क्या तर्क है जो वर्षों से लोगों को आजीविका प्रदान कर रहा है?

वह आगे कहते है, ''हम ना ही झूठ बोलते है और ना ही बढ़ा-चढ़ाकर कहते है। हम केवल वही बताते है जो पत्ता हमें तोता निकालकर देता है।'' 27 टैरो कार्ड होते है जो 27 नक्षत्रों के प्रतीक बनते है और प्रत्येक कार्ड में एक हिन्दू भगवान या जीसस क्राइस्ट, मैरी या कुरान की तस्वीर होती है।

औसतन, एक ज्योतिषी प्रतिदिन रु 200 कमाता है और त्यौहारों के मौकों पर, मैं कम से कम रु 1,000 कमा लेता हूँ, सेलवम कहता है।

संताप

मदुरई में कदंबवनम रिसोर्ट चलाने वाली चित्रा गणपति बताती है कि कैसे उनके रिसोर्ट में काम करने वाले एक तोते ज्योतिषी की आजीविका वन अधिकारियों द्वारा छीन ली गई; उन्होंने यह कारण बताकर उसका पिंजरा और तोते छीन लिए कि पक्षियों को पिंजरे में बंद करना गैरकानूनी है। वे रु 5,000 की रिश्वत देने पर उसे लौटाने के लिए राज़ी हो गए। इन लोगों के लिए यह एक बड़ी रकम है, चित्रा गणपति कहती है।

वह पूछती है: ''हम मांस और चिकन खाते है। लेकिन तोता ज्योतिष बंद करने के पीछे क्या तर्क है जो वर्षों से लोगों को आजीविका प्रदान कर रहा है? है ना सोचने वाली बात?'' ■

जंगल के अनुभव के लिए कॉर्पोरेट जॉब की अदला-बदली

जोविटा अरान्हा

क्या आपको याद है कि कैसे बचपन में हम में से अधिकतर लोग मोगली के जीवन से विस्मित थे? सिवनी में पेंच के जंगलों का वह बेफिक्र, नग्न, जंगली बच्चा, एक काल्पनिक पात्र जो रूडयार्ड किपलिंग की *द जंगल बुक* सीरीज द्वारा अमर हो गया।

हालाँकि हम में से बहुत से लोगों ने ऐसा जीवन जीने के सिर्फ सपने देखे, मध्य प्रदेश के पेंच के जंगलों के केंद्र से मात्र 50 मीटर दूर रह रहा एक छोटा बालक बिल्कुल ऐसा ही कर रहा है!

पेड़ की शाखाओं से झूलना, पूरे जंगल में नंगे पाँव दौड़ना, बंदरों की नक़ल करना, तितलियों का पीछा करना और रात में अपनी खिड़की से शेर की दहाड़ का आनंद लेना, साढ़े तीन साल का काईज़ेन अपने अंदर के मोगली को बाहर निकल रहा है और अपनी ज़िंदगी का भरपूर मजा ले रहा है। सब कुछ उसके माता-पिता हर्षिता और आदित्य शाकल्य के कारण जिन्होंने प्रकृति के करीब रहने और उसे अपारंपरिक ढंग से बड़ा करने के लिए उनका कॉर्पोरेट जीवन छोड़ दिया।

काईज़ेन केवल छह महीने का था जब उसके माता-पिता ने पेंच के जंगलों के बीचों-बीच बने 'टाइगर एन वुड्स' रिसोर्ट का प्रभारी बनने के लिए दो महीने में अपना इंदौर का कारोबार छोड़ दिया था।

जहाँ आदित्य दिल्ली में पैदा हुए थे, वहीं हर्षिता इंदौर में पली-बढ़ी थी। विदेश से शिक्षित युगल ने अपनी असाधारण मार्केटिंग योग्यताओं के साथ कई उद्योगों में काम किया है। हर्षिता, एक पेशेवर

आदित्य, हर्षिता, काईज़ेन अपने कुत्ते कार्लोस के साथ।

चॉकलेट निर्माता, ने 17 वर्ष की कम उम्र में अपना स्वयं का व्यवसाय शुरू किया! आदित्य, जो एक उपन्यासकार भी है, ने अनेकों ब्रांड और प्रकाशनों के साथ काम किया।

ये दोनों पहली बार तब मिले जब वे एक ही कंपनी में काम कर रहे थे और अपनी खुद की कम्पनी स्थापित करने के बारे में सोच रहे थे। एक समान विचार एवं धारणाओं को साझा करते हुए, उन्होंने इंदौर में अपना स्वयं का सामाजिक मीडिया और डिजाइनिंग स्टार्ट-अप शुरू किया। कारोबारी साझेदारी के रूप में जो शुरू हुआ, अंततः जीवन की साझेदारी में बदल गया।

एक समय इस युगल को काम का लती कहना भी कम था। 2013 में विवाहित इस जोड़े ने उनके हनीमून पर भी काम किया! हर्षिता उनकी थाईलैंड की यात्रा को याद करती है जिसने उनकी जिंदगीयां बदल दी। ''हम एक प्यारी सी छोटी वेन में क्राबी जा रहे थे। लेकिन खिड़की से बाहर सुन्दर दृश्यों को देखने के बजाए, हम नेटवर्क की चिंता करने में लगे थे ताकि हम दोबारा काम कर सकें,'' वह कहती है।

युगल के लिए वह एक सच्चाई का पल था। पहली बार उन्हें महसूस हुआ कि स्पष्ट रूप से यह वह जीवन नहीं हैं जो वे जीना चाहते है, खासतौर से अपने आने वाले बच्चों के साथ। हालाँकि छोड़ने का निर्णय करना आवेशपूर्ण और आसान था, उनके पास कोई अन्य योजना नहीं थी।

और यह अवसर उनके हाथ तब लगा जब उनके जान-पहचान के सभी लोग नव वर्ष की सुबह का स्वागत कर रहे थे। 2014 की नव वर्ष की पूर्वसंध्या पार्टी में, हर्षिता और आदित्य कुछ परिचितों से मिले जिन्होंने आदित्य की नयी किताब पर चर्चा शुरू की, और एक मित्र ने कहा कि वह ऐसी एक जगह जानता है जहाँ पर आदित्य शांति से लिख सकता है और यह कि वह एक परिवार की तलाश में है जो रिसोर्ट को संभाल सकें।

''उस समय काईज़ेन केवल छह महीने का था। हमने सोचा, क्यों ना हम इस अवसर को स्वीकार कर लें? वैसे भी हम थका देने वाली शहरी जिंदगी से दूर, एक अलग वातावरण में उसकी परवरिश करने के बारे में सोच रहे थे,'' हर्षिता कहती है।

यद्यपि वे भाग्यशाली थे कि शहरी स्कूलों में उन्हें अच्छी शिक्षा प्राप्त हुई, जिसके वे हमेशा से आभारी है, उन्हें लगता है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली दोषपूर्ण है और स्कूल व्यावसायिक हो गए है। ''मुझे दिल ही दिल में पता था कि मैं उसे इस कभी ना खत्म होने वाली चूहा दौड़ का हिस्सा नहीं बनने देना चाहती थी। हम नहीं चाहते थे कि वह किसी चीज़ की सफलता प्राप्त करने के लिए चिंतित हो केवल इसलिए कि दुनिया उससे ऐसा करने की आशा करती है या ऐसा सोचती है कि ग्रेड जीवन की सफलता को परिभाषित करते है,'' वह कहती है।

यह उनके लिए एक अवसर था कंक्रीट के जंगल से परे एक जीवन खोजने का और एक परिवार के रूप में जो भी वे चाहते थे उसे करने का। मार्च 2015 तक, उन्होंने उनके सामान के साथ घर में प्रवेश किया।

क्या इतना बड़ा परिवर्तन आसान था? नहीं। ''हमने शहरी और कॉर्पोरेट जीवन जिया था, देर रात तक पार्टी करते हुए। तो, इतना बड़ा बदलाव कठिन था। किसी पार्क में घूमने जाना अलग बात है और किसी टाइगर रिज़र्व के बीच रहना अलग,'' वह कहती है।

जहाँ एक ओर सुनसान जंगल के इतने करीब रहना आपको प्रकृति के सामंजस्य में होने का एहसास दिलाता है, वहीं यह डराता भी रहता है, हर्षिता स्वीकार करती है। ''यह डरावना था, और अभी भी है। एक बार मैंने झाड़ियों से कोबरा निकलते और काईज़ेन की तरफ अल्फा बन्दरों को गुर्राते देखा। लेकिन सच तो यह है कि हम ऐसे इलाके में रह रहे है जहाँ वन्य-जीवों का वर्चस्व है। यह उनका घर है, और हम हमेशा यहाँ अतिक्रमणकारी रहेंगे। तो यह हमारे लिए जरुरी था कि हम उनके साथ तालमेल में रहे और इस जगह को जितना संभव हो सके प्रकृति के करीब रखे,'' वह कहती है।

पहला साल कठिन था जब वे रिसोर्ट का पुनर्निर्माण करने की कोशिश कर रहे थे एवं बिजली के लिए संघर्ष कर रहे थे।

वह उन दिनों को याद करती है जब छोटे काईज़ेन को गर्मी में सोने के कारण उलट-पलट होता देख उनके दिल को तकलीफ होती थी। लेकिन आज, जब वह पीछे देखती है, तो वहाँ केवल खुशियों भरे पल है। अपने दस फुट ऊँचे मचान से जंगल में पक्षियों से लेकर हिरण, सियार, नील गाय और अन्य वन्य जीवों को देखने तक, वे केवल देखते ही नहीं, बल्कि हर रोज बदलते मौसम का अनुभव भी करते है।

सबसे नजदीकी गाँव, जिसमें 30 से 40 घर है, टाइगर रिज़र्व के मुख्य द्वार के ठीक बाहर है। काईज़ेन ग्रामीणों के मध्य अत्यंत लोकप्रिय है। हर्षिता याद करती है कि कैसे वह स्थानीय बोली में पहली बार रोते हुए उनके पास आया, ''*मम्मा, मच्छर चाप गया,*'' जिसका मतलब है मच्छर ने उसे काट लिया। ग्रामीणों के साथ काईज़ेन ''वह अधिकतर शहरी बच्चों यहाँ तक कि वयस्कों के मुकाबले भी ज्यादा स्थिति के अनुरूप एवं अनुकूल है। वह नए लोगों के साथ आसानी से बातचीत करता है। जब दूसरे देशों से मेहमान आते है, वह उनसे अंग्रेजी में बात करता है और हमारे गाँव के कर्मचारियों से भी स्थानीय बोली में उतनी ही सरलता के साथ बात करता है। वह हमारे सुनने और बोलने में अक्षम कर्मचारियों से भी सांकेतिक भाषा में बात करता है,'' वह कहती है।

हर्षिता स्थानीय लोगों के साथ प्राचीन खाना बनाने की कोशिश करती हुयी।

किचन से लेकर फलों, सब्जियों और जड़ी-बूटियों तक के बारे में जानकारी होने के नाते, वह कर्मचारियों का हाथ बँटाता है और ज़मीन से जुड़कर रह रहा है। जहाँ अधिकतर माँ-बाप अपने बच्चों को ज्यादा से ज्यादा अनावरण देने की कोशिश करते है वहीं काईज़ेन के पास दुनिया स्वयं आ रही है।

हालाँकि बच्चा अभी उसकी उम्र के बाकि बच्चों की तरह लिख नहीं सकता, फिर भी वह आत्म-निर्भर होने के लिए आवश्यक सभी बुनियादी कौशलों को सीख रहा है। उसने इस माह एक मुक्त स्कूल में जाना शुरू किया है, घर से 60 कि.मी. दूर जिसे कैटरपिलर लेब्स कहा जाता है। इस स्कूल के प्रारूप में कोई उम्र विशिष्ट कक्षाएं नहीं है। बल्कि इसमें अलग-अलग भाषाओं और गतिविधियों की प्रयोगशालाएं है और जैसे-जैसे वे उनमें से हर एक कौशल में निपुण होते जाते है, यह उनकी प्रगति में मदद करता है।
उसको स्कूल भेजने के कारणों में से एक कारण था कि वह अपनी उम्र के बच्चों की कमी महसूस करने लगा था। वह वाकई बहुत खुश हो जाता था जब

कोई मेहमान अपने बच्चों के साथ आते थे लेकिन जब वे चले जाते थे तो उसका दिल टूट जाता था। रिसोर्ट द्वारा मेहमानों को उनके स्वयं के लिए वक्त निकालकर देने के साथ ही, आदित्य, जो एक काबिल योग शिक्षक है, मेहमानों और उनके बच्चों के लिए कार्यशाला का संचालन करते है। उनके द्वारा हाल ही में शुरू किया गया बोधिसत्व योग संस्थान - छोटे बच्चों की भावनात्मक और मानसिक तंदुरुस्ती के लिए - उन्हें चिंता और अवसाद से लड़ने के लिए योग दर्शन को अपनाना सिखा रहा है।

कोईज़ेन स्थानीय खाद्य का स्वाद लेते हुए।

हालाँकि एक चॉकलेट व्यवसाय चलाने का निश्चित रूप से कोई विकल्प नहीं था, हर्षिता पूरे गाँव में घूमी और गाँव वालो से स्थानीय सामग्रियों - चावल, मौसमी सब्जियां आदि को समझा। फिर उन्होंने अपनी परियोजना 'पेंच पिकल कंपनी' शुरू की, जो स्थानीय उपज से मुरब्बा, अचार, जैम, शरबत आदि बनाती है।

बड़ा होने पर काईज़ेन यदि शहर जाना चाहेगा तो? वह मुस्कुराती है और कहती है, ''सच कहूं तो, मुझे पता है कि एक दिन शहरी जीवन उसे प्रलोभित करेगा। उसने हमें भी ललचाया था। लेकिन यह उसकी पसंद और उसका निर्णय है। जब हमने यह कदम उठाया था जिसमें कुछ भी निश्चित नहीं था तब हमने अपने माता-पिता की नहीं सुनी थी। लेकिन हमें आशा है कि हमने अपने छोटे से बच्चे की नींव अच्छी तरह डाली है।''

नदी तल के कंकड़ काईज़ेन को चोट नहीं पहुँचाते।

और अगर आप यह सोच रहे है कि काईज़ेन हमेशा के लिए गाँव और जंगल तक सीमित है, तो आप गलत है। ''आखिर हम होते कौन है उसे प्रतिबंधित करने वाले? बल्कि, हम यह सुनिश्चित करते है कि उसे हर चीज़ का अनुभव हो। मैं चाहती हूँ वह वो बने जो वह बनना चाहता है। हम उसे भारत और विदेशों स्थानों पर ले जाते है,'' वह कहती है।

अनेक सड़क यात्राओं, उड़ानों और ट्रेनों का सफ़र करते हुए, काईज़ेन पहले ही गोवा, दिल्ली, इंदौर, वाराणसी, श्रीलंका, अंडमान और अन्य जगहों की सैर कर चुका है।

Bodhiyoga.foundation@gmail.com पर आदित्य और हर्षिता से संपर्क करें।

यह लेख सर्वप्रथम दी बेटर इंडिया (www.thebetterindia.com) में प्रकाशित हुआ था।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

मुख्य कार्यक्रम

रैंडी ड्रुज़िन

टोरंटो में 2018 रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन की मेजबान समिति, शहर आपके रातों को सम्मेलन में व्यतीत किए गए दिन के समान ही यादगार बनाना चाहती है। यह उन कार्यक्रमों की एक श्रृंखला के साथ उपलब्ध होगा जो टोरंटो की सैर करने में आप सभी की सहायता करेगा।

शनिवार, 23 जून को, स्थानीय बैंड लेडी बी गुड (चित्र दिया गया है) पुराने स्कूल के जाज, आर एंड बी और आधुनिक पॉप का मिश्रण अप्रत्याशित समायोजन: कनाडा के रीप्ले एक्वेरियम, में प्रस्तुत करेगा। शाम में आपको टोरंटो की विविध संस्कृतियों की एक झलक देने के लिए अनूठे तरीके से डिजाइन किए गए मेनू को पेश किया जाएगा।

उन लोगों के लिए, जो संगीत का थोड़ा अधिक मजा लेना चाहते हैं, उनके लिए शनिवार की रात

भी ऐतिहासिक डिस्टिलरी जिले में रॉक का आयोजन किया जाएगा। दुनिया भर के खाद्य पदार्थों का आनंद उठाते हुए आप पडोस की दुकानों में विभिन्न प्रकार के सामानों को देख सकते हैं और रॉक और देशी संगीत सुनने का लुफ्त उठा सकते हैं।

सोमवार, 25 जून को मेजबान आतिथ्य रात्रि के दौरान टोरंटो के रोटेरियन के बारे में जानकारी प्राप्त करें, जब स्थानीय रोटेरियन अपने घरों में या किसी चुने हुए स्थल पर मेहमानों का स्वागत करेंगे।

मंगलवार को, 26 जून, रोटरीफैस्ट नामक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा, जिसके दौरान आतिशबाजी, स्वादिष्ट व्यंजनों और दोस्तों की महफ़िल का आनंद उत सकते हैं। दुनिया भर के पसलियुक्त मांस, हलाल चिकन, विभिन्न प्रकार के शाकाहारी व्यंजनों और अन्य स्वादिष्ट पकवानों का आनंद उठा सकते हैं।

इन सभी कार्यक्रमों के लिए टिकट सीमित हैं, इसलिए अभी अपना स्थान आरक्षित करवाएं। rotary2018.org पर अधिक जानकारी प्राप्त करें और टिकट खरीदें।

सम्मेलन के लिए
riconvention.org **पर पंजीयन कराएं।**

© *The Rotarian*

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP

Statement about ownership and other particulars about Rotary Samachar to be published in the first issue of every year after the last day of February

1. Place of Publication : Chennai - 600 008
2. Periodicity of its publication : Monthly
3. Printer's Name : Mukesh Arneja
   Nationality : Indian
   Address : Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008
4. Publisher's Name : Mukesh Arneja
   Nationality : Indian
   Address : Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008
5. Editor's Name : Rasheeda Bhagat
   Nationality : Indian
   Address : 25, Jayalakshmipuram, 1st Street, Nungambakkam, Chennai - 600 034
6. Name and address of individual who owns the newspaper and partner or shareholders holding more than one percent of the total capital : Rotary News Trust, Dugar Towers, 3rd Floor, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai - 600 008

I, Mukesh Arneja, declare that the particulars given are true to the best of my knowledge and belief.

Chennai - 600 008
1st March, 2018

sd/-
Mukesh Arneja

जब किताबें टहलने जाती हैं

संध्या राव

शेक्सपियर को स्वछन्द रहने दें, ना उधार लें, ना दें...

जब किताबें उड़ जाकी हैं।

बहुत तकलीफ होती है जब उधार ली गई किताबें वापस लौटाई नहीं जाती है। सिर्फ इस वज़ह से कि आप इसे पढ़ चुके हैं और शायद दुबारा पढ़ेंगे भी नहीं, क्योंकि अभी बहुत किताबें पढ़नी बाकी हैं - हम इनके प्रति कितना ही कृतज्ञ हों, कम है।

कोई बात नहीं कि आमतौर पर किताबें हमेशा धूल ही खाती रहतीं हैं और अकेलापन भी बहुत महसूस करती हैं, जब तक कि एक दिन, शायद तीन चार साल में एक बार, किसी चीज की तलाश में, आप शेल्फ की सफाई करते हुए,धूल साफ करते हैं, छुट पुट चीजों को हटाते हैं और किताबों को झाड़ पौंछ कर, व्यवस्थित कर वापस शेल्फ में रख देते हैं। मेरी अपनी लाइब्रेरी में ऐसा ही होता है।

लंबे समय तक मैंने सोचा कि आखिर वो किस तरह का व्यक्ति होगा जो किताब उधार तो लेगा पर उसे नहीं लौटाएगा? मेरा मतलब, जहां तक स्टील के डब्बे का सवाल है ठीक है, पेन भी ठीक है और कभी कभी सोने की बालियां भी। लेकिन किताबें? इसे माफ़ नहीं किया जा सकता।

फिर मुझे मेरी सास की सुनाई हुई एक कहानी याद आई । जब मेरे पति और उनकी बहन बहुत छोटे थे, तो एक बार वे अपनी मां से इतने नाराज़ हो गए कि उन्होंने एक दूसरे से कहा, चल, घर से भाग चलते हैं । उन्होंने एक झोले में कुछ चीजें रखीं और घर से बाहर निकल गए । उनकी आंटी घबराई हुई दौड़ कर आयी और मां से बोली : ''देखो, देखो वो क्या कर रहे हैं! वो कहाँ जा रहे हैं? उन्हें रोको!'' उनकी मां कड़क कर बोलीं, कितनी दूर जाएँगे वो? ''जब पेट में चूहे दौड़ेंगे, तो वापस आ जाएंगे।''

यकीनन, चूहों के नाचने से पहले ही, वो वापस आ गए।

उधार गई किताबों के लिए भी यही उपमा दी जा सकती है । वे कहाँ जाएँगी ? कितनी दूर तक यात्रा करेंगी ? आज या कल उन्हें वापस आना ही होगा, जब चूहे - शर्मिन्दगी महसूस करेंगे, जब याद आएगी, हिसाब करने बैठेंगे, या कुछ भी - नृत्य करना शुरू कर देंगे। किताबों के अभाव में आहत हुए मन को ऐसे सांत्वना मिली। यह और बात है कि जितना सोचा था हो सकता है कि उससे कहीं ज़्यादा किताबें अलमारियों से गायब हों। हालांकि थोड़ी देर के लिए इससे राहत मिली लेकिन बेचैनी फिर से बढ़ गई।

इसी ने मुझे कुछ करने के लिए उकसाया। जब भी मैं किसी के यहां जाती तो उनकी शेल्फ

वो किस तरह का व्यक्ति होगा जो किताब उधार तो लेगा पर उसे नहीं लौटाएगा? जहां तक स्टील के डब्बे का सवाल है ठीक है, पेन भी ठीक है।

खंगालती, जानी पहचानी किताब दिखते ही ये कहते हुए झपट पड़ती ''आहा! वो मेरी है! मैं इसे वापस ले रही हूँ!'' तो अपनी मित्र - मित्र? के चेहरे पर परेशानी - (वाकई?), चिंता (और कोई बताओ), प्रसन्नता (सबसे खराब!), प्रचण्डता (हां!), उत्सुकता (देख के बताओ!) के भाव परिलक्षित होते। जैसे उन्हें मालूम ही नहीं कि वह मेरी किताब है। जैसे उसे पता ही नहीं था कि किताब उसके पास पड़ी है। और सबसे मज़ेदार ये - ये मेरी किताब है तुम्हारी नहीं।

लेकिन गंभीरता से सोचें, लोग किताबें क्यों लेते हैं और उन्हें वापस क्यों नहीं लौटाते? Quora पर होने वाली चर्चा में झांका तो कुछ गूढ़ और दिलचस्प जवाब भी मिले। ''एक अक्लमंद तर्क था: संभव है वो उन किताबों को वापस न करें जो उन्होंने नहीं पढ़ी हैं। मेरे साथ अक्सर यही होता है जो भी पुस्तक मैंने उधार ली और पढ़ी नहीं है वह पुस्तक मेरी शेल्फ पर तब तक रहेगी जब तक कि मैं इसे पढ़ नहीं लूँ।'' और ये अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो सकता है।

इसका एक उपाय है: ''मैं अपने दोस्तों को हमेशा उपहार में किताबें देती हूं क्योंकि मुझे मेरी किताबें उधार देना पसंद नहीं है, मुझे पता है कि वे मुझे कभी वापस नहीं मिलेंगी।'' एक विचार है ये। इसके अलावा, किसी और ने ये भी कहा, जो लोग किताबें उधार लेते हैं वो सोचते हैं कि देने वाले व्यक्ति ने वह किताब पढ़ ली है और वह इसे वापस नहीं चाहता है या उसे इसकी ज़रूरत नहीं है। हां... हो सकता है। हालांकि इसके लिए ''आलस्य और जवाबदेही'' ज़्यादा ज़िम्मेदार हैं।

फिर Quora इस चर्चा की अजीबो गरीब है। आगे अक्षरशः:प्रस्तुत है:

- देने से ऋणमुक्त होता है और मैं शायद ही किसी ऐसी संस्कृति को जानता हूं जिसमें पुस्तक देने वालों की नदी बहती हो। इसे पी जाओ, और इस श्रेष्ठ कर्म के अवतरण में भाग लो।
- यदि यह बहुत अच्छी किताब है, तो यह किताब सिर्फ आपका समय या नींद ही नहीं बल्कि आपकी आत्मा का उपभोग भी कर सकती है; और आप वो चीज कैसे दे सकते हैं जिसमें आपकी आत्मा बसती हो?
- संस्कृत में एक प्राचीन कहावत है - *पुस्तकम्* (पुस्तक), *भार्या* (पत्नी), *वित्तं* (धन) - *परा हस्तम* (दूसरे हाथों में) *गतम* (गए), *गतम* (तो गए)।

मैं अपने दोस्तों को हमेशा उपहार में किताबें देती हूं क्योंकि मुझे मेरी किताबें उधार देना पसंद नहीं है, मुझे पता है कि वे मुझे कभी वापस नहीं मिलेंगी।

अनुवाद: पुस्तकें आप को क्या लगता है? यह एक बहुत ही कष्टप्रद दुविधा है, है ना? ''जैसे एक अन्य मंच से किसी ने कहा है, अगर यह सात गम्भीर अपराधों की श्रेणी में शामिल नहीं है, तो इसे निश्चित रूप से होना ही चाहिए।'' आह!

फिर भी, यूँ ही हो हल्ला करने और बहस करते रहने से किताबें चल कर नहीं आने वाली। मुझे लगा कोई तो तरीका होगा। और वो था उन्हें ऐसे ही छोड़ देना, जाने देना, त्याग देना। औचित्य यह है कि कहीं न कहीं कोई व्यक्ति शायद वो किताब पढ़ रहा हो और उसे भी उतना ही आनन्द आ रहा हो जितना मुझे आया था। यह वज़ह काफी थी दरअसल, पुस्तक के अस्तित्व में आने का पहला कारण भी यही है, है ना? पढ़ने के लिए। विचार बांटने के लिए। पृष्ठों के भीतर संजोई गई दुनिया में पाठक का प्रवेश। अनुभवों की परिकल्पना। ब्रह्मांड का विस्तार।

द गार्डियन अख़बार ने जॉर्ज वॉशिंगटन के बारे में एक दिलचस्प कहानी बताई, उन्होंने 1789 में न्यू यॉर्क सोसाइटी लाइब्रेरी से एक किताब ली थी पर उनके पास किताब वापस लौटाने का कोई रिकॉर्ड नहीं था। यह पुस्तक थी '*द लॉ ऑफ नेशन्स*' बाय एमर डे वॅटल। सन 2010 में जब लेख प्रकाशित हुआ था, तो जुर्माना लगभग 300,000 डॉलर हो चुका था! इस कहानी को लिखने की वजह थी कि जब ''माउंट वर्नन, वर्जीनिया में जॉर्ज वाशिंगटन का भूतपूर्व निवास, के स्टाफ को पता चला तो उन्होंने पुस्तकालय को उसी संस्करण की दूसरी प्रति से बदलने की पेशकश की।'' और उन्होंने बदल भी दी - 221 साल बाद, और बिना किसी जुर्माने के!

मेरी दोस्त प्रदीप्ति ने भी इसका अनुसरण किया उसने मेरी सामंत सुब्रह्मण्यम द्वारा लिखित *दी डिवाइडेड लैंड: स्टोरीज फ्रॉम द श्री लंकन वार,* ली थी और किसी ने पीठ पीछे उसकी डेस्क से वो उड़ा ली तब उसने कई बार माफी माँगी और उसे नई प्रति से बदल दिया। अब,यह आपके लिए एक सच्ची पुस्तक - प्रेमी है। वह दर्द को समझती है।वो समझ सकती है कि, हर तरह के तर्क और चिंतन के बावजूद मैं फ्रीमैन लिखित *ए डिसओबीडिएंट गर्ल* के लापता होने के बाद से से अभी तक शोक में हूँ। यह हस्ताक्षरित प्रति है। है क्या, किसी के पास?

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

आपके गवर्नरों से मिलें

जयश्री

क्लबों में सुधार, सदस्यों का अभिप्रेरण

डॉ के सुन्दर राजन

ओर्थोपिडीक सर्जन, रोटरी क्लब नागपुर वेस्ट, मंडल 3030

रोई द्वारा मंडल को निलंबित किये जाने के संबंध में बात करते हुए, डॉ सुन्दर राजन कहते है, ''मैं इस अवसर का इस्तेमाल मंडल में रोटेरियनों को फिर से चार्ज करने एवं उन्हें अधिक सक्रिय बनने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए कर रहा हूँ।'' रोटरी में सदस्यों की रूचि बनाये रखने के लिए वह इस बात को सुनिश्चित करते है कि वे किसी लोकोपकारी कार्य में लगे रहे और उन्हें लगता है कि ऐसी सहभागिता क्लब एवं मंडल को जीवंत बनाएगी।

वह कहते है, ''जब मैं 1990 में रोटरी से जुड़ा, तो मुझे अनेक पोलियो सुधारात्मक सर्जरियाँ करने का अवसर मिला। तब से मैंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। जब आप आपके चारों ओर प्रसन्न चेहरों को देखते है, तो आप बारंबार आपका सर्वस्व देने के लिए प्रेरित होते है। इसका मैं आज भी अनुभव करता हूँ।''

उन्हें विश्वास है कि उनके द्वारा हर क्षेत्र के लिए तैयार किया गया सतत रोटरी उन्मुखीकरण कार्यक्रमम दल को बेहतर बनाएगा और उन्हें अपडेट रखेगा।

राजन मंडल की प्रबंधन समिति को भी सशक्त बनाने पर ध्यान केन्द्रित कर रहे है। ''हम दूध के जले हुए है, इसलिए ऐसा दोबारा नहीं होना चाहिए।'' इसके अतिरिक्त क्लब अनेक सामुदायिक परियोजनाओं में व्यस्त है, इस बात के बावजूद भी कि DDF का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। ''उदाहरण के लिए, रोटरी क्लब नासिक रोड ने CSR की मदद से हाल ही में एक गाँव में सात शौचालयों का निर्माण किया है।'' वह आगे कहते है, कई जल प्रबंधन परियोजनाएं भी की जा रही है।

उन्होंने उनके दल को उनके योगदानों को सीधे रोटरी फाउंडेशन (भारत) को भेजने के लिए प्रोत्साहित किया है: ''सटीकता और पारदर्शिता मेरा इस वर्ष का नारा है,'' वह कहते है।

उन्होंने लगभग 350 नए सदस्यों को भर्ती किया है और दो नए क्लबों की स्थापना की है।

छह अन्य ओर्थोपिडिशियनों के साथ प्रतिवर्ष बिहार एवं झारखण्ड में उनके द्वारा की जाने वाली ओर्थपिडीक सर्जरियाँ उनका सबसे अभिलषित पल है। ''मैं पूर्णतः तब द्रवित हो गया जब एक पोलियो-पीड़ित लड़की, जिसका मैंने वर्षों पूर्व इलाज किया था, के माता पिता मेरे पैरों में गिर गए और ख़ुशी के आंसू लिए उन्होंने मुझे उसकी शादी का निमंत्रण दिया।''

राजन और उनकी पत्नी भाग्यम बड़े दानकर्ता है और वर्ष 2010 से टीआरएफ में प्रतिवर्ष 2,000 डॉलर दान करते है।

अभय गाडगिल

जौहरी, रोटरी क्लब पुणे यूनिवर्सिटी, मंडल 3131

CSR संबंध बनाना, उनकी विशिष्टता

निःशक्त लोगों, विशेष रूप से स्वलीन बच्चों, की चुनौतियों को संबोधित करना उनकी प्राथमिकता है। वह उठ्ठ निधि को प्राप्त करने पर ध्यान केन्द्रित कर रहे है। स्कूलों को ई-शिक्षण किट से सुसज्जित करने के लिए ''टाटा टेक्नोलॉजीज पहले ही पिछले पाँच वर्षों में लगभग रु 5 करोड़ दे चुका है। हमारी IOC और AMDOCS, एक आईटी कंपनी, के साथ भी साझेदारी है जो प्रति वर्ष रु 7 करोड़ देने की योजना बना रहे है,'' अभय गाडगिल कहते है।

सदस्यता पर, वह कहते है कि एक क्लब की स्थापना के लिए उनका मानदण्ड कम से कम 30 अच्छे सदस्यों का है। ''मैंने हाल ही में एक क्लब का आवेदन अस्वीकार किया जिसमें केवल 10 सदस्य थे।'' पिछले साल 30 जून को, 1,500 सदस्यों को हटाया गया क्योंकि वे गैर-क्रियाशील थे। वह कहते है, ''इससे मंडल की ख़राब छवि प्रदर्शित होती है। इसलिए मैं ईमानदारी और गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देता हूँ।''

टीआरएफ में योगदान पर बात करते हुए, गाडगिल ने बताया कि रोटरी में उनके शुरूआती सालों में वह संस्थान को देने में दिलचस्पी नहीं रखते थे। ''मैं केवल मेरे क्लब की परियोजनाओं की सहायता करने में रूचि रखता था। लेकिन विनय कुलकर्णी (तत्कालीन डीजी) ने मुझे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया। और आज, क्या आप विश्वास कर सकते है, मैं एक AKS सदस्य हूँ, वह मुस्कुराते है।

आज तक, आलंदी में नेत्रहीनों के लिए जागृति स्कूल की स्थापना करने की अपने क्लब की वैश्विक अनुदान परियोजना को गाडगिल ने संजोय रखा है। वह कहते है, ''हर बार जब मैं स्कूल जाता हूँ, मैं बच्चों में पढ़ाई को लेकर उनके जोश को देखकर प्रभावित हो जाता हूँ।''

रोटरी से जुड़ने के लिए वह उनके भाई से प्रेरित हुए जो सांगली में एक रोटेरियन है। उनकी पत्नी दीपा उनके क्लब की पूर्व अध्यक्ष है।

टी के रूबी

फार्मास्यूटिकल मार्केटिंग

रोटरी क्लब हिमालयन रेंजेस मनसादेवी, मंडल 3080

अनाथों एवं बुजुर्गों की देखभाल

उनके ''रोटेरियन मित्रों'' से प्रेरित होकर, वह वर्ष 2000 से क्लब के संस्थापक सदस्य है। निराश्रित बच्चों को संभालने एवं उनकी देखभाल करने की उनकी चालू परियोजना को रूबी उनके दिल के पास रखते है। वह कहते है, ''मैं अत्यंत द्रवित हुआ जब एक दिन एक छोटी लड़की मेरे पास आई और मुझे गले लगाकर बोली, 'स्कूल जाने में मेरी मदद के लिए आपका धन्यवाद अंकल।' यह मेरा सर्वश्रेष्ठ पल है। हम जिस अनाथालय की सहायता करते है उसमें 200 बच्चे है। हम उनका पालन-पोषण करते है और हर संभव तरीके से उनकी मदद करते है,'' वह कहते है।

वह उनके दल को ऐसी परियोजनाएं करने के लिए प्रेरित करते है जो सुविधाओं से वंचित लोगों की जिंदगियों में स्थायी प्रभाव लाएंगी और सबसे जरुरी उनकी गरिमा को पुनर्स्थापित करने में उनकी मदद करेंगी। बच्चों को शिक्षा प्रदान करने एवं युवाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने पर उनका ध्यान केन्द्रित है।

मंडल छह राज्यों - पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और चंडीगढ़ - में फैला हुआ है। रूबी कहते है, ''हमारे पास पहाड़ी, मैदानी, औद्योगिक एवं तीर्थस्थान वाले शहर है। प्रत्येक क्षेत्र की अलग जरूरत होगी। क्लबों को एक चिन्हक परियोजना करने के लिए कहने के बजाय, मैं अपने दल को उस समुदाय की स्थानीय आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ जिसकी वे सेवा करते है।''

वह बुजुर्गों की देखभाल पर अधिक महत्व देते है। ''मैं ऐसे बहुत से माता-पिताओं को जानता हूँ जिनके बच्चों ने उन्हें छोड़ दिया। वे इस तरह छोड़े जाने की अत्यंत पीड़ा से गुजरते है। हम उन्हें उनके बच्चों से जोड़ने का प्रयास करते है।''

वह ऐसे क्षेत्रों में क्लबों को स्थापित करने पर ध्यान दे रहे है जहाँ रोटरी अनुपस्थित है। पहाड़ी इलाकों में रोटेरियनों की सहभागिता के बारे में पूछने पर, उन्होंने शिमला से सात घंटे की दूरी पर स्थित रामपुर बशीर के क्लब का हाल ही में किये गए दौरे को याद किया। ''इस क्लब में मात्र 20 सदस्य है। नगर के लोग रोटरी का सम्मान करते है। उसी प्रकार मसूरी के लोग भी करते है। आप वहाँ रोटरी की भावना को महसूस कर सकते है। इसलिए मेरे विचार से एक क्लब को अच्छा करने के लिए अनिवार्य रूप से बड़ा होने की कोई आवश्यकता नहीं है।''

रूबी रोट्रैक्टरों के साथ पिछले सात सालों से काम कर रहे है और अनाथालय के बच्चों के लिए कार्यक्रमों के आयोजन में उनको सम्मिलित कर रहे है। ''उनका समर्पण आश्चर्यजनक है।''

जब उनसे उनके टीआरएफ योगदान लक्ष्यों के बारे में पूछा गया, वह हँसते है और कहते है, ''मैं एक ऐसा गवर्नर हूँ जिसे कोई लक्ष्य नहीं दिया गया है, क्योंकि मेरी नियुक्ति देरी से हुई थी।'' लेकिन उन्हें विश्वास है कि वह पिछले कीर्तिमानों से आगे निकल जायेंगे और वह तीसरे स्तर के बड़े दानकर्ता बनने की राह पर है।■

नये साल में संकल्प लेना आम बात है। 31 दिसंबर की तारीख के 1 जनवरी की करवट लेने तक आम तौर पर, हड़बड़ी में एक बेहतर ज़िन्दगी, बेहतर शरीर, ज़्यादा धन-दौलत और असीम प्रसन्नता के लिए घोषणाऐं करते हैं। सिर्फ लक्ष्य निर्धारित कर लेने से इसका स्वतः ही निष्पादन नहीं होता। नए साल के अधिकांश संकल्प यदि पहले नहीं तो, दो एक महीनों के अंत तक आते आते किनारे लग जाते हैं ।

आपके लक्ष्य आपकी जीवन शैली के अनुसार हों और आप उन्हें वास्तव में प्राप्त कर सकें, इस के लिए नीचे कुछ टिप्स दी गई हैं ।

लक्ष्य को स्मार्ट होना चाहिए:

- विशिष्ट और निश्चित
- मापने योग्य
- जिसे प्राप्त किया जा सके
- यथार्थवादी
- समयबद्ध

हालांकि उपरोक्त सभी बातें ठीक हैं, पर इसके साथ मैं एक बात और जोड़ता हूं कि लक्ष्य परिणाम पर आधारित नहीं होना चाहिए बल्कि उन पर अमल होना चाहिए। इसका मतलब क्या है?

जैसे कि मइस वर्ष मैं 5 किलो कम करना चाहता हूंफ यह लक्ष्य परिणाम पर आधारित है, भले ही ये विशिष्ट, मापनीय, प्राप्त करने योग्य, यथार्थवादी और समयबद्ध हो। 5 किलो का कम होना आपकी कोशिशों का परिणाम है। परिणाम आपके नियंत्रण में हमेशा नहीं होता।

इसकी अपेक्षाकृत आपको अपना ध्यान उस प्रयास पर केंद्रित करना चाहिए जिससे परिणाम मिलेंगे। उदाहरण के लिए आपका लक्ष्य '5 किलो कम करना' नहीं होना चाहिए, बल्कि निम्नलिखित में से एक या अधिक :

- मैं हर रोज 30 से 40 मिनट तेज़ गति से चलूंगा।
- मैं प्रतिदिन कम से कम 10,000 क़दम चलूँगा
- मैं शक्कर और डेज़र्ट खाना बंद कर दूंगा
- मैं प्रतिदिन कम से कम पांच कप सब्जियां खाऊंगा
- मैं सप्ताह में दो दिन वज़न कम करने की ट्रेनिंग में जाऊंगा
- मैं परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट्स और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों का सेवन कम कर दूंगा
- मैं शराब बंद कर दूँगा
- मैं खाने के प्रति अधिक सावधान रहूँगा

काफी हद तक उपरोक्त क्रियाएं सीधे आपके नियंत्रण में हैं। पाठ्यक्रम के परिणाम की सफलता मुख्यतः आपकी कोशिशों पर निर्भर करती है । इसलिए आपका ध्यान उसी कोशिश पर रहना चाहिए जो आपके नियंत्रण में है।

कई बार अपनी पूरी मेह्नत के बावजूद भी आपको वो परिणाम नहीं मिलते जिसके लिये आप प्रयासरत थे। ऐसा संभव है, पर 'सफलता नहीं मिलने पर' दुखी होना निरर्थक है (जैसा कि मैंने कहा था परिणाम हमेशा आपके हाथ में नहीं होता)। इसके बजाय अपने प्रयासों से, अनायास मिले सकारात्मक लाभ पर नज़र डालें (जो शुरुआत में आपने सोचे भी नहीं थे)। दीर्घकालिक सफलता के लिए, उपर्युक्त लक्ष्यों का अनुसरण करने के बाद 'आपकी दिनचर्या' में महत्वपूर्ण परिवर्तन आएंगे। ये परिवर्तन वजन कम करने की तुलना में कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। आप नियमित व्यायाम करना सीखते हैं, आप स्वस्थ आहार के बुनियादी सिद्धांतों को समझते हैं और जीवनशैली में उतारते हैं बजाये अल्पकालिक योजना के जिसका अंतिम लक्ष्य मवज़न घटाना म हो, आप किस प्रकार का भोजन, उस की मात्रा, उस के समूह को समझते हैं उदाहरण के लिए, प्रतिदिन 30 मिनट चलकर, छुट्टियों के दौरान भी, आप नए लक्ष्य के अनुकूल बनना सीखते हैं। अंतिम परिणाम पर ध्यान देने की बजाय आप रोज़ाना क्या कर सकते हैं और क्या करना चाहिए पर ध्यान केंद्रित करना अधिक लाभदायक है।

अपनी प्रगति का रिकॉर्ड रखें

एक डायरी में अपनी प्रगति का रिकॉर्ड रखने से, जिसमें आपका व्यायाम और दैनिक आहार शामिल

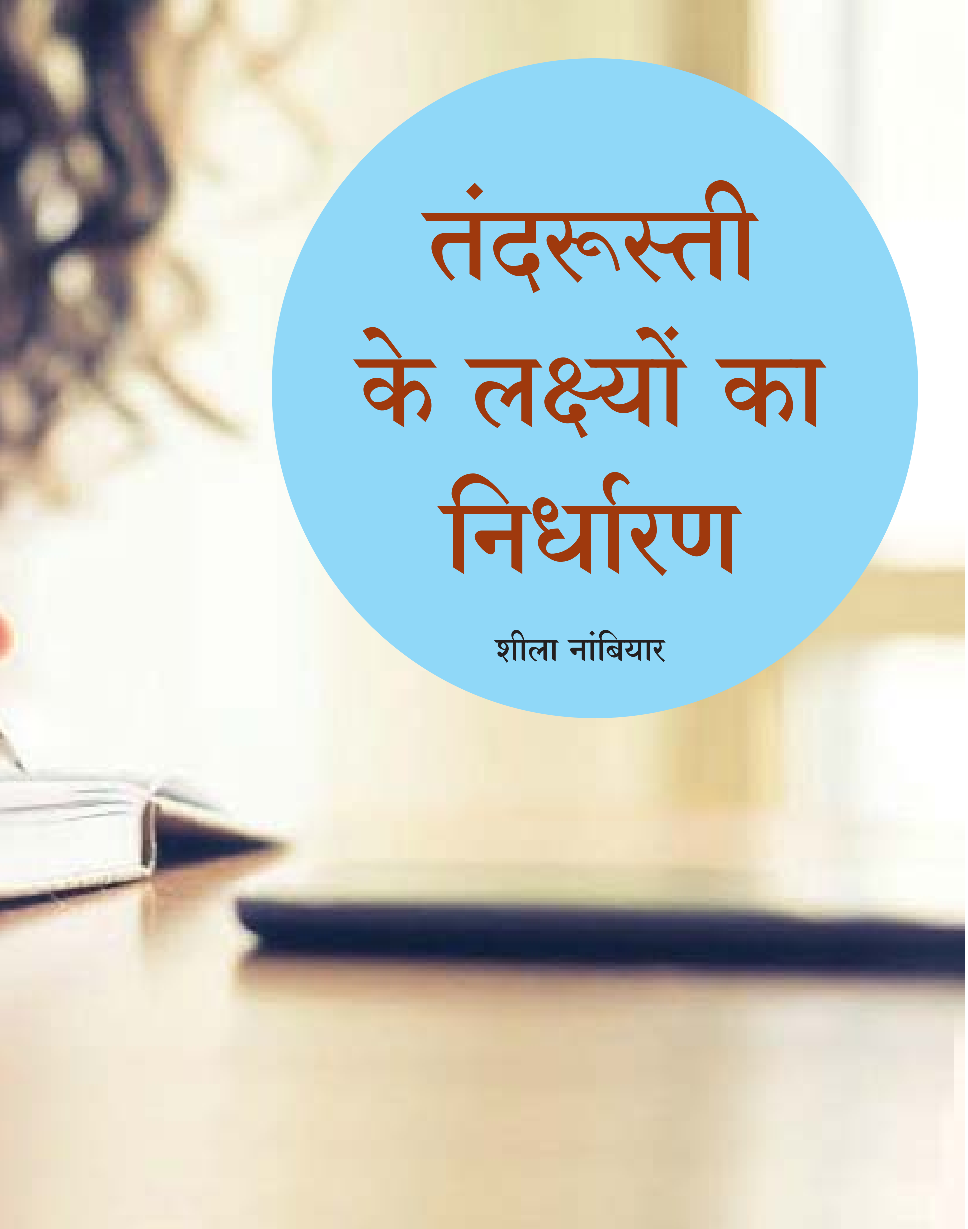

तंदरूस्ती के लक्ष्यों का निर्धारण

शीला नांबियार

हो, आप में न केवल ज़िम्मेदारी की भावना आएगी बल्कि कुछ ठोस करने को भी मिलेगा। प्रत्यक्ष रूप में मनुष्य की याददाश्त चयनात्मक होती है! जबकि डायरी आपको याद दिलाती रहती है, आपने जो सोची थी वो सभी सब्जियाँ नहीं खाई हैं, यह याद दिलाती है कि आप तीन दिन से घूमने नहीं गए। लिखने से वास्तव में आहार को समझने और भोजन के पोषक तत्वों की पहचान कर उन्हें कार्ब्स, प्रोटीन और फैट जैसे विभिन्न ग्रुप्स में बांटने में सहूलियत होती है।

अपनी डायरी में तनाव और नींद को शामिल करना याद रखें। जीवनचर्या के ये दोनों पहलू वज़न पर बहुत ज़्यादा असर डालते हैं। कितना असर, जब तक हम अपनी डायरी नहीं पढ़ते तब तक हमें तनाव या नींद की कमी के लक्षणों का पता नहीं चलता।

समय-समय पर अपनी मेहनत की समीक्षा करें

उद्देश्य समीक्षा करते रहना चाहिए, यह समझने के लिए कि वे आपकी जीवन शैली के अनुरूप हैं या नहीं, इसलिए जब आप कहते हैं कि आप सप्ताह में छह दिन रोज़ाना एक घंटा पैदल चलेंगे और सप्ताह में दो बार वेट के साथ ट्रेनिंग करेंगे, हो सकता है आपके लिए यह संभव नहीं हो आपको अपने प्रयासों को दिन में टाइम के हिसाब से बदलना पड़ सकता है। उदाहरण के लिए, इससे आपको मालूम पड़ता है, जैसे, आपको शराब पीने की तीव्र इच्छा होती है, शायद पांच से सात बजे के बीच, तो समस्या शाम की हुई। आपको पता चलता है की इसकी वज़ह बोरियत है। सुबह की कसरत को शाम की एवज में बदल सकते हैं, इसे नियमित आदत बनाने इत्यादि में मदद मिल सकती है।

तंदरूस्ती के अन्य पहलुओं के लिए भी लक्ष्य निर्धारित करें

हालांकि फिटनेस, वजन और स्वास्थ्य संबंधित लक्ष्य निर्धारित करना उचित है और सराहनीय भी, लेकिन तंदरूस्ती के अन्य पहलुओं पर ध्यान देना भी ज़रूरी है। तंदरूस्ती को नीचे दिए गए तरीके से समझें, विभाजित करें और उन सभी तरीकों को खोजें जिनसे आप अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं:

- शारीरिक तंदरुस्ती (फिटनेस, वजन, आसन, स्वास्थ्य)
- मानसिक तंदरुस्ती (आत्म जागरूकता, सदभावना, क्रोध, अवसाद)
- सामाजिक तंदरुस्ती (रिश्ते, समाज, दोस्ती, योगदान)
- आर्थिक तंदरुस्ती (वित्तीय सुरक्षा, अपने वित्तीय साधनों को समझना)
- आध्यात्मिक तंदरुस्ती (अध्यात्म की खोज, आप चाहें तो)
- पर्यावरण तंदरुस्ती (आपके पर्यावरण की देखभाल, रीसाइक्लिंग, पृथक्करण की देखभाल)
- बौद्धिक तंदरुस्ती (कार्य में, शिक्षा में)
- क्रिएटिव तंदरुस्ती (शौक, मज़े के लिए रचनात्मक आउटलेट)

जब आप शारीरिक तंदरुस्ती के अन्यत्र भी ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आपने जितना सोचा था उतना वजन नहीं घट पाने पर परेशान नहीं होते । तंदरुस्ती के सभी आयामों पर ध्यान देना आवश्यक है। इसका यह मतलब नहीं है कि आप हर आयाम के लिए ऊँचे लक्ष्य तय कर लें और खुद पर दबाव बना लें और अंत में फिर कुछ भी हासिल नहीं हो। छोटे छोटे लक्ष्य निर्धारित करें और धीरे धीरे उन्हें बढ़ाते जाएं ।

आप क्या कर सकते हैं, इस पर ध्यान केंद्रित करें न कि परिणाम पर। आपके जो भी लक्ष्य रहे हों, उन्हें ध्यान में रखते हुए अपना सर्वश्रेष्ठ दें। संभव है अपेक्षित परिणाम ना मिले,कोई फर्क नहीं पड़ता लेकिन महत्व यह रखता है की कोशिश पूरी तरह से की गई है।

लेखिका एक ऑब्स्टेट्रिशियन और गाइनोकोलॉजिस्ट, फिटनेस और लाइफस्टाइल कंसल्टेंट है, दो पुस्तकें प्रकाशित कर चुकी हैं: ***गैट साइज़ वाइज; गेन टू लूज़***

www.drsheela.nambiar.com

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

FIND A CLUB

ANYWHERE IN THE WORLD!

Get Rotary's free Club Locator app and find a meeting wherever you go!

www.rotary.org/clublocator

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians	:	12,21,527
Clubs	:	35,648
Districts	:	539
Rotaractors	:	2,49,711*
Clubs	:	10,857*
Interactors	:	5,16,718*
Clubs	:	22,466*
RCC members:		2,26,711*
RCC	:	9,857*

* As on February 2, 2018

Membership Summary

As on February 2, 2018

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	112	4,608	220	60	225	172
5	2982	67	2,995	98	61	111	43
5	3000	126	5,210	443	290	653	195
4	3011	75	3,305	632	57	107	25
4	3012	86	3,366	632	68	127	55
5	3020	94	4,220	202	117	461	351
4	3030	92	4,976	621	75	309	164
4	3040	92	2,025	214	53	119	136
4	3053	73	2,777	430	15	37	93
4	3054	130	6,351	1,010	93	305	473
4	3060	98	4,160	436	61	122	131
4	3070	103	3,002	280	68	156	54
4	3080	75	3,269	213	72	216	108
4	3090	80	2,153	93	32	36	122
4	3100*	73	1,690	69	11	73	146
6	3110	113	3,974	298	51	49	104
6	3120	78	3,325	357	37	58	50
4	3131	131	5,430	1,075	106	276	82
4	3132	105	4,087	419	65	200	138
4	3141	90	5,369	1,136	119	252	84
4	3142	83	3,096	458	68	188	69
5	3150	98	3,596	355	93	229	109
5	3160	69	2,416	120	26	48	81
5	3170	128	5,567	398	58	303	161
5	3181	71	3,095	231	32	179	104
5	3182	80	3,289	243	34	272	91
5	3190	129	5,049	587	146	352	51
5	3201	139	5,207	315	100	129	47
5	3202	128	4,851	239	102	434	46
5	3211	137	4,408	264	12	89	123
5	3212	96	3,906	257	111	272	125
5	3231	67	2,829	112	54	196	237
5	3232	101	4,067	548	139	304	80
6	3240	86	2,969	338	61	146	151
6	3250	98	3,787	678	47	205	177
6	3261	67	2,430	218	16	102	42
6	3262	95	3,275	375	44	68	75
6	3291	147	3,812	713	81	131	587
India Total		**3,712**	**1,43,941**	**15,327**	**2,735**	**7,539**	**5,082**
5	3220	67	1,888	242	82	199	77
6	3271	81	1,443	253	49	16	13
6	3272	154	3,096	439	41	36	36
6	3281	205	5,748	801	228	84	186
6	3282	139	3,980	390	133	45	38
6	3292	114	4,415	666	122	114	110
S Asia Total		**4,472**	**1,64,511**	**18,118**	**3,390**	**8,033**	**5,542**

**Non-districted.*

Source: RI South Asia Office

21वीं सदी के युवा क्या चाहते हैं...

रो ई महासचिव जॉन ह्यूको ने स्विट्ज़रलैंड के दावोस में हाल ही में आयोजित हुए वर्ल्ड इकनोमिक फोरम में 21वीं सदी के युवाओं, जो दुनिया की आधी जनसंख्या के बराबर है, की बढ़ती हुई चिंताओं को संबोधित किया। उनसे हुई बातचीत के अंश...

दुनिया की 50 प्रतिशत आबादी की उम्र 30 वर्ष से कम है। यह इतिहास में सबसे अधिक युवा जनसंख्या है, और *वर्ल्ड इकनोमिक फोरम* का नवीनतम ग्लोबल शेपर्स सर्वे (जिसमें 186 देशों के 30 वर्ष से कम उम्र के 30,000 से अधिक व्यक्ति शामिल हुए) हमें बताता है कि आज के युवा नेतृत्वकर्ता हमारी दुनिया और उसमें उनकी जगह के बारे में क्या सोचते है।

तो, 2018 में किन आवश्यक अंतर्दृष्टियों पर हमें कार्यवाही करनी चाहिए?

सबसे पहले, 21वीं सदी के युवा जलवायु परिवर्तन और संघर्षों का हमारे द्वारा सामना किये जाने वाले सबसे जटिल मुद्दों के रूप में देखते है।

दूसरा, वे ''एक स्टार्ट-अप पारितंत्र और उद्यमिता'' को देश में युवा सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण कारक मानते है।

इन प्राथमिकताओं के अतिरिक्त, युवा सोचते है कि उनकी बात नहीं सुनी जा रही है, क्योंकि सर्वेक्षण में 55.9 प्रतिशत युवाओं ने इस कथन को नकारा है कि: ''मेरे देश में, महत्वपूर्ण फैसले लेने से पूर्व युवाओं के मत पर विचार किया जाता है।''

हमारे भविष्य को आकार देने वाले निर्णयों में हमारे युवा नेतृत्वकर्ताओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के साथ ही कैसे हम उन जरूरी मुद्दों में से कुछ को संबोधित कर सकते है?

जलवायु परिवर्तन पर, यह स्पष्ट है कि संवहनीय विकास लक्ष्यों 13 - ''जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभावों से जंग'' - को राष्ट्रीय नीति नियोजन स्तर पर शीघ्रता से लागू करना एक बुनियादी पूर्वाविश्यकता है। हालाँकि, जलवायु परिवर्तन से लड़ने के लिए समाज के सभी स्तरों पर क्या निश्चित कदम उठाने होंगे एक विस्तृत जवाब वाला प्रश्न है।

कुछ कहेंगे कि जलवायु परिवर्तन के तकनीकी जवाब पहले से ही हमारे पास है, लेकिन, जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल के प्रमुख डॉक्टर लीओन क्लार्क के शब्दों में कहे तो: ''हमें वास्तव में कोई अंदाजा नहीं है कि इन्हें बड़े पैमाने पर लगाने के लिए किस विशेषज्ञता की आवश्यकता होगी।''

रो ई महासचिव जॉन ह्यूको।

प्रोजेक्ट ड्राडाउन जैसी पहल पहले से ही मौजूद सबसे शक्तिशाली समाधानों पर एक उपयोगी गणना प्रदान करती है, 2 और ग्रीनहाउस गैस में अनुमानित कमी के अनुसार क्रमबद्ध करते हुए। लेकिन इस लेख के खातिर, हमारा ध्यान युवा सशक्तिकरण एवं संघर्षों के साथ उसके संबंध पर है, जिसे सर्वे क्षण में दूसरे ''सबसे गंभीर वैश्विक मुद्दे'' के रूप में पहचाना गया है।

चलिए उद्यमिता के प्रश्न से शुरुआत करें।

अधिकांश युवा तकनीक एवं नवप्रवर्तन के प्रभाव को लेकर आशावान है: 78.6 प्रतिशत सोचते है कि ''तकनीक नौकरियों को खत्म करने के विपरीत नौकरियां पैदा कर रही है (21.4 प्रतिशत)।''

फिर भी, क्या तकनीक दुनिया भर में 15-से-24-वर्षों के 71 मिलियन बेरोजगार लोग होने की खतरनाक वास्तविकता को अकेले संबोधित कर सकती है? अंतर्राष्ट्रीय श्रम संघ के अनुसार, यह 13 प्रतिशत की ऐतिहासिक अधिकता के करीब है।

मौजूदा युवा बेरोजगारी चुनौती देशों को आर्थिक प्रगति के हर स्तर पर प्रभावित करती है। लैटिन अमेरीका ऊँची एवं बढ़ती हुई युवा बेरोजगारी दरों का सामना कर रहा है (2017 में 17 प्रतिशत से भी अधिक) और पूरे यूरोपीय संघ की दर अभी एक समान स्तर पर है, जिसमें इटली, स्पेन और ग्रीस में आंकड़े 35%, 38.7%, और 43.3% तक ऊँचे है।

जैसा कि मैंने पिछले वर्ष की लैटिन अमेरीका पर वर्ल्ड इकनोमिक फोरम में ध्यान दिया था, उद्यमिता के सामर्थ्य को निकालना सरल नहीं है। दफ्तरशाही को कम करने, संरचनागत अवरोधों को हटाने या सामाजिक अवरोधों को मंद करने के लिए कार्यवाही के दौरान, हमें नवप्रवर्तन के लिए एक-आकार-सबके-अनुसार वाली पद्धति के झांसे में नहीं आना चाहिए। वास्तव में, उसका अपनी खातिर नवप्रवर्तन की कोशिश युवा बेरोजगारी की चुनौती का हल नहीं है।

उद्यमिता को उभारने की अनेक परियोजनाएं इसलिए विफल हो गयी क्योंकि उन्होंने नवप्रवर्तन के आदर्श, सिलिकॉन वैली, को दोहराने का प्रयत्न किया। स्टेनफोर्ड बिज़नेस स्कूल के लेक्चरर फेडेरिको एंटोनी के शब्दों में कहे तो ''कोई सरकारी कार्यक्रम,

कोई आतंरिक बाज़ार एक नई सिलिकॉन वैली नहीं बना सकता।'' यहाँ तक कि जो लोग वैली के सफल स्टार्ट-अप - जो यूएस के पूरे वेंचर कैपिटल निवेश का एक-तिहाई से अधिक को आकर्षित करते है - में लगातार पैसा लगाते है, वे भी इसकी अनुपम समृद्धि के सटीक कारणों को नहीं बता पाते है।

पीटर थिएल, एक व्यवसायी जिन्होंने पेपाल और फेसबुक जैसी दुनिया की कुछ अग्रणी कंपनियों की सह-स्थापना की या उनमें निवेश किया, को दुनिया के सबसे बड़े नवाचार केंद्र की प्रतिलिपि बनाने के प्रयासों पर संदेह है: ''यह तक स्पष्ट नहीं है कि सिलिकॉन वैली क्यों कार्य करती है। यह अनूठी है, यह एक बार है, एक जगह है... फिर मैं हमेशा सोचता हूँ कि एक बार आप किसी चीज़ की प्रतिलिपि बनाना तय करते है तो आप पहले ही स्वयं को निचली स्थिति में रख देते है।''

सरकार के उदार अनुदानों एवं कर लाभों, नए तकनीकी हब बनाने के महत्वाकांक्षी प्रयास, जैसे कि लन्दन की टेक सिटी, भी उम्मीदों पर खरा उतरने में असफल हुए है। इसे परिदृश्य में लाने हेतु, ''*दी स्पेक्टेटर* के अनुसार: फेसबुक, जिसकी स्थापना वर्ष 2004 में की गई थी, की कीमत लगभग सभी 40 यूरोपीय यूनिकॉर्न एक बिलियन डॉलर या उससे अधिक मूल्य वाले स्टार्ट-अप के दोगुने के बराबर है।''

यदि हमारा लक्ष्य युवा बेरोजगारी और सामाजिक संघर्षों को कम करने का है, तो स्थानीय लोगों की जरुरतों के अनुसार उपयुक्त समाधानों के साथ किसी विशेष क्षेत्र के सामर्थ्य पर काम करना एक बेहतर रणनीति होगी।

उदाहरण के लिए, अफ़ग़ानिस्तान के काबुल में, एक वर्ल्ड इकॉनमिक फोरम ग्लोबल शेपर परियोजना, वहाँ जारी सुरक्षा समस्याओं का लाभ उठाने वाले उग्रवादी समूहों के खतरे में पड़ने वाले बेरोजगार युवाओं को लाभान्वित करने के लिए संवहनीय पहलों को लागू करने के प्रयास करती है।

शुद्ध नवप्रवर्तन पर जोर कम है, बल्कि उन लोगों की सहायता करने पर ज़ोर अधिक है जिनके पास कौशल तो है लेकिन खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए वित्तीय स्रोत नहीं है। निधीकरण तंत्र को दो भागों में विभाजित किया गया है और इन्हें प्रत्येक स्टार्ट-अप की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। माल के रूप में अनुदान अग्रिम खर्चों का निधीकरण करेंगे, वहीं ब्याज रहित ऋण पुनरावर्ती खर्चों को तब तक वहन करेंगे जब तक प्रत्येक स्टार्ट-अप आत्म-निर्भर नहीं हो जाते।

दूर-दराज के इलाकों के ऐसे युवा लोगों की पहचान करके जिनमें व्यवसाय कौशल है और जिन्हें आगे बढ़ने के लिए एक सहारे की जरुरत है, यह पहल उन्हें ऐसा मौका प्रदान कर सकती है जिससे आतंकवादी समूहों के प्रति आकर्षण कम हो सकता है। अधिकांश मामलों में यह आकर्षण सिर्फ आर्थिक लाभ के लिए होता है ना कि विचारधारा के कारण।

इसके अतिरिक्त, इस तरह की परियोजनाएं ना केवल स्थानीय सन्दर्भ में युवा बेरोजगारी की चुनौती को बल्कि ग्लोबल शेपर्स द्वारा पहचाना गया एक अन्य गंभीर मुद्दा - शरणार्थी संकट - को भी संबोधित करेंगी।

2018 में, दुनिया का आवास, सुरक्षा और रोजगार की तलाश कर रहे रिकॉर्ड 65 मिलियन से

भी अधिक विस्थापित लोगों की सच्चाई से जूझना जारी रहेगा। लगभग आधे वैश्विक शरणार्थी 18 वर्ष से कम उम्र के है, तो उनकी सहायता करने के हमारे कार्य सीधे तौर पर युवा सशक्तिकरण और संघर्ष रोकथाम में हमारी प्रगति को प्रभावित करेंगे।

चरमपंथी-विरोधी संगठन क्विलियम की *पाथवेस ऑफ़ यूथ फ्लीइंग एक्सट्रीमिस्म* पर प्रथम विस्तृत रिपोर्ट के अनुसार, ''विशेष चिंता का विषय उग्रवादी संगठनों का अवसरवाद है,'' जो उनके मूल देश एवं 'सुरक्षित थर्ड कंट्री' में राज्य सेवाओं में खालीपन को आशाहीन शरणार्थियों से भर रहे है।

इस तथ्य पर एक प्रतिक्रिया जिसका मैं अक्सर उल्लेख करता हूँ एन कजेर रिचर्ट, बर्लिन में रहने वाली एक डेनिश भूतपूर्व रोटरी शान्ति फेलो, का काम है। फरवरी 2016 में स्थापित हुए उनके ReDi स्कूल ऑफ़ डिजिटल इंटीग्रेशन ने दो वर्गों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हस्तक्षेप किया। पहला वर्ग लाभदायक रोजगार की तलाश करते हुए जर्मनी में प्रवेश करता शरणार्थियों का, और दूसरा उन कंपनियों का जो जर्मनी में खाली 43,000 आई टी की नौकरियों को भरना चाहते थे। उद्यमिता कौशलों में प्रशिक्षण प्रदान करने के अतिरिक्त, उनके द्वारा सह-स्थापित कोडिंग स्कूल ने पहले ही तीन स्टार्ट-अप के उत्थान में सहायता की है।

यदि हमारा लक्ष्य युवा बेरोजगारी और सामाजिक संघर्षों को कम करने का है, तो स्थानीय लोगों की जरुरतों के अनुसार उपयुक्त समाधानों के साथ किसी विशेष क्षेत्र के सामर्थ्य पर काम करना एक बेहतर रणनीति होगी।

ReDi जैसी पारस्परिक लाभदायक आर्थिक एकीकरण पहलें भविष्य के लिए एक प्रतिरूप का काम करती है, क्योंकि 2020 तक यूरोप में 756,000 खुली आई टी नौकरियों की उम्मीद है। ऐसी परियोजनाएं युवा लोगों के मनोभाव को भी प्रतिबिम्बित करती है; 21वीं सदी के अधिकांश युवा (55.4 प्रतिशत) का मानना है कि मेजबान देशों को ''शरणार्थियों को राष्ट्रीय श्रमबल में शामिल करने के प्रयास करने चाहिए।''

21वीं सदी के युवाओं को 2018 में जो वे चाहते है उन्हें देने के हमारे प्रयासों को आने वाले कल के नेतृत्वकर्ताओं द्वारा व्यक्त दो प्रश्नों के साथ मापा जाना चाहिए। पहला, स्थानीय जरूरतों के अनुरूप निकाले गए संयुक्त समाधानों के साथ क्या यह सकारात्मक सामाजिक एवं पर्यावरण प्रभाव डालता है, और क्या यह कट्टरता के खिलाफ युवाओं में प्रतिरोध को बनाने के पर्याप्त अवसर उत्पन्न करता है?

दूसरा, क्या यह समान उद्यमिता एवं नवप्रवर्तन जाल के अंतर्गत आता है जिसने चौथी औद्योगिक क्रांति के सकारात्मक प्रभावों को फैलाने के पूर्व प्रयासों को पटरी से उतारा है?

हमारे पास पहले से ही हमारी उँगलियों पर अनेक संवहनीय समाधान है - यह हर एक संगठन की चुनौती होना चाहिए कि वह उस पीढ़ी को सशक्त बनाये जो परिवर्तन लाना चाहती है और शीघ्रता से ऐसा करना चाहती है।

स्रोत : Rotary.org

बच्चों के लिए कार्निवल का समय

किरण जेहरा

जब 11 वर्षीय अरुण शंकर ने अपने परिवार के सदस्यों के बारे में बात की, आठ साल की गायत्री देवी ने अपनी रंगीन लकडी के गुडय़िा के बारे में बताया कि उसके पिता बोलने की समस्या से ग्रस्त होने के बावजूद उसके लिए तंजावुर से लेकर आएं थे। रोटरी क्लब मद्रास टी नगर, मंडल 3232,के रोटेरियन को धन्यवाद दीजिए, जो कि वंचित और विशेष बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए रोटा प्रतिभा प्रतियोगिता नामक एक दिवसीय आनंदोत्सव आयोजित करते रहे हैं। अपने रजत जयंती वर्ष में इस परियोजना ने 57 स्कूलों के 2000 से अधिक बच्चों की मेजबानी की।

क्लब के अध्यक्ष पेरिकरुप्पन की पत्नी, मीनाक्षी पेरिकरुप्पन कहती हैं, ''उन्हें अपनी प्रतिभा को सशक्त बनाने के लिए भावनात्मक समर्थन और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है,'' और एनडी रोटा टैलेंट इन बच्चों को एक बेहतर मंच प्रदान करता है। रोटा टैलेंट शो में बच्चें अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते है। ''कुछ बच्चें अपने भाषण में कुछ पंक्तियां या नृत्य में लय भूल जाते है। लेकिन वे रूकते नहीं है। कुछ प्रदर्शनों को देखकर हमारे आँखों में आँसू गए,'' वह आगे कहती है।

इस कार्यक्रम का उद्घाटन डीजी आर श्रीनिवासन और राज्य निःशक्तजन आयुक्त, वी अरुण रॉय ने किया। प्रत्येक प्रतियोगिता को श्रेणियों में विभाजित किया गया था (मानसिक रूप से चुनौतीपूर्ण, श्रवण-बधिर और नियमित) और प्रतिभागी को प्रदर्शन के लिए एक समय सीमा दी गई थी। इनर व्हील क्लब द्वारा एक साथ सभी श्रेणियों में पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई। विजेताओं को ट्राफियां और नकद पुरस्कार दिए गए, प्रत्येक विद्यालय के दो बच्चों को सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा पुरस्कार मिला उपहार और ट्राफियां भी वितरित की गई।

दिन के सभी भोजन के अलावा, सम्मानार्थ भेंट पॉपकॉर्न, कॉटन कैंडी और कुछ अन्य स्नैक्स बच्चों को दिए गए थे क्योंकि ऐसा करने से वे एक अस्थायी टैटू, फेस पेंटिंग या मेहेन्दी में शामिल हुए थे। बच्चों को मेले से परे ''यह अनुभव के मामले में एक बहुत संतोषजनक परियोजना हैं। इन

डीजी आर श्रीनिवासन ने क्लब सदस्यों की उपस्थिति में रोटा प्रतिभा प्रतियोगिता का उद्घाटन किया।

बच्चों को कभी भी वह अवसर प्राप्त नहीं होता है जिसके वे योग्य हैं। उनके अंदर बहुत कुछ छिपी है और वे दुनिया बहुत कुछ दिखाना चाहते हैं, ''पेरिकरुप्पन कहते हैं। सभी बच्चों को एक हॉबी किट युक्त किताबें, चमकदार कलम और कैमलिन क्रैंस और कहानी पुस्तकों दी गई, जिसका प्रायोजन प्रथम बुक्स ने किया था। सभी देखभाल करने वाले और स्कूल के प्रतिनिधि को भी उपहार दिया गया था।

एक कार्टून चरित्र परेड, एक जंपिंग कैसल और लाइव भोजन काउंटर सहित कुछ खेल और म जेदार सवारी ने कार्यक्रम को ''बहुत ही मनोरंजक और अच्छी तरह से व्यवस्थित बनाने में योगदान दिया'', बाला मंदिर ट्रस्ट की शिक्षिका शांति जी ने कहा। स्टालों खंड में विशेष बच्चों के लिए खिलौने थे और एक मोटर चालित व्हीलचेयर स्टाल अनेक पूछताछ करने वालों को आकर्षित कर रही थी। मीनाक्षी कहती हैं, ''हम चाहते थे कि हम अपने लक्ष्य के अनुसार सभी चीजों की व्यवस्था करें।'' वि-शेष जो 18 वर्ष से अधिक उम्र के विशेष जरू रतों वाले विद्यार्थियों के लिए एक नौकरी मेले के आयोजन कर उन्हें रोजगार प्राप्त करने में मदद करता हैं, का भी आयोजन किया गया था।

''हमें रोटेरियन और सभी स्वयंसेवकों को धन्यवाद देते हैं। परंतु सबसे अधिक उन बच्चों को जिन्होंने हमारे दिन को बेहद खास बना दिया है,'' पेरिकरुप्पन ने आगे कहा। ■

रोटरी क्लब मनोरा पट्टूक्कोटाई - मंडल 2981

क्लब के सचिव द्वारा 20 सहवासियों के लिए प्रायोजित चावल, किराने का सामान और प्रसाधन के सामान देकर अन्नायी सराथा अनाथालय में गणतंत्र दिवस मनाया गया। क्लब द्वारा एक सरकारी कन्या शाला को रु 60,000 की लागत वाला एक एलसीडी प्रोजेक्ट भी भेंट किया गया।

रोटरी क्लब कावेरीपट्टीनम - मंडल 2982

बस स्टैंड के समीप और पलाकोड़े रोड जंक्शन पर शोकसंतप्त परिवारों द्वारा निधन सूचना प्रस्तुत करने के लिए दो शोक तख्तियां स्थापित की गई। क्लब के अध्यक्ष वेंकटरमन कहते है कि ये स्थायी तख्तियां सार्वजनिक दीवारों एवं सार्वजनिक स्थानों को शोक पोस्टरों से स्वच्छ रखेंगी।

रोटरी क्लब नासिक - मंडल 3030

नासिक के पास स्थित घोटी क्षेत्र में और उसके आसपास रहने वाले 1,100 विद्यार्थियों को स्कूल किट दान की गई। किट में दो जोड़ी यूनिफार्म, मौजे और जूते, कॉपी, पानी की बोतल, स्कूल बैग, जिओमेट्री बॉक्स और पेंसिल बॉक्स शामिल थे।

रोटरी क्लब वाइज़ेग एलीट - मंडल 3020

अपोलो अस्पताल के सहयोग से, विशाखापट्नम के समीप स्थित एक गाँव में एक चिकित्सीय शिविर का आयोजन किया गया। बीपी और शुगर परीक्षण जैसी सामान्य जाँचों के अलावा, ENT, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी और ऑर्थपेडीक क्षेत्र में मेडिकल जाँच की गई। मरीजों को दवाइयां भी प्रदान की गई।

विधियाँ

रोटरी क्लब जयपुर कोहिनूर - मंडल 3054

जरूरतमंद परिवारों को मासिक राशन बांटा गया और परियोजना का प्रायोजन रोटेरियन सत्यकामजी द्वारा किया गया था। क्लब के अध्यक्ष ओ पी खादियाजी, अन्य सदस्यों के साथ इस अवसर पर मौजूद थे। परियोजना पिछले तीन सालों से की जा रही है।

रोटरी क्लब वापी रिवरसाइड - मंडल 3060

18 शहरों से 27 क्लबों की भागीदारी के साथ, मंडल द्वारा सबसे बड़े बहु-स्थलीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित करने में गिनीज रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया गया। गिनीज के दिशा-निर्देशों के अनुसार चयनित 72 स्थलों पर 6,000 से अधिक टीमों का 160 क्विज़ मास्टरों द्वारा निरीक्षण किया गया, और मानदंडों के अनुसार, गैर-रोटरी पृष्ठभूमि से 245 प्रबंधक और 70 साक्षी प्रक्रिया की पुष्टि करने हेतु मौजूद थे।

रोटरी क्लब अमृतसर नार्थ - मंडल 3070

एक झुग्गी बस्ती में एक बहुत बड़ा चिकित्सीय-सह-रक्तदान शिविर आयोजित किया गया जिसमें 200 लोगों की थाइरोइड, शुगर और बोन डेंसिटी से संबंधित विभिन्न बिमारियों के लिए जाँच की गई। 50 से अधिक लोगों ने रक्त दान किया। दवाइयां भी प्रदान की गई।

रोटरी क्लब चंडीगढ़ मिडटाउन - मंडल 3080

मतौर गाँव के एक सरकारी स्कूल में दो शौचालय खण्ड बनाए गए, लड़के और लड़कियों के लिए एक-एक, और बच्चों को स्वच्छता आदतों एवं शौचालय को साफ कैसे रखें इस पर प्रशिक्षण दिया गया। परियोजना की कुल लागत रु 3.5 लाख थी और यह 2,000 विद्यार्थियों को लाभान्वित करेगी।

रोटरी क्लब बाराबांकी - मंडल 3120

बाराबांकी गाँव के आसपास के बाढ़ पीड़ितों को अच्छी तरह से पैक किये गए खाने के पैकेट वितरित किये गए। रोटेरियनों के एक दल ने बाढ़ प्रभावितों को भी खाद्य-पदार्थ बांटे।

मंडल गति

रोटरी क्लब पुणे कल्याणी नगर - मंडल 3131

लगभग 800 जरुरतमंदों एवं सुविधाओं से वंचित लोगों को कम्बल प्रदान किये गए ताकि वे रात के समय स्वयं को गर्म रख सकें। रोटेरियनों ने सांता क्लॉस के रूप में रेलवे स्टेशन और झुग्गियों जैसी चयनित जगहों पर ऊनी सामग्रियां वितरित की।

रोटरी क्लब गुंटूर विकास - मंडल 3150

क्लब के चार्टर दिवस उत्सव के दौरान जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन प्रदान की गई। पीडीजी रवि वाडलामानी मुख्य अतिथि थे और ऑस्ट्रेलिया से रोटेरियन ब्रूस एलन सम्मानित अतिथि थे।

रोटरी क्लब कोल्लेगल - मंडल 3181

हित्तलादोद्दी, एक दूरस्थ क्षेत्र, के एक सरकारी प्राथमिक स्कूल में डीजी सुरेश चेंगप्पा द्वारा नवीनीकृत शौचालयों का उद्घाटन किया गया। बच्चों के लिए स्कूल का वातावरण आकर्षक बनाने के लिए उन्होंने कॉपी और डिक्शनरी जैसी अध्ययन सामग्री, फर्नीचर एवं खेल उपकरण बांटें। निःशक्तजनों को व्हील चेयर प्रदान की गई।

रोटरी क्लब बैंगलोर विजयनगर - मंडल 3190

पीन्या के हेग्गानाहल्ली सरकारी उच्चतर माध्यमिक एवं प्राथमिक विद्यालय में एक पेय जल प्रणाली स्थापित की गई। डीजी आशा प्रसन्ना कुमार ने वैश्विक अनुदान की सहायता से क्लब द्वारा प्रायोजित फर्नीचर, डिक्शनरियाँ और शैक्षिक पुस्तकें दान की। वैश्विक अनुदान के अंतर्गत मूडलपलाया के पंचशीलनगर बीबीएमपी स्कूल को फर्नीचर और किताबें दान की गई।

रोटरी क्लब तिरुपुर नीट सिटी - मंडल 3202

तिरुपुर के साईं कृपा स्कूल में निःशक्तजनों को चिकित्सीय बीमा पॉलिसी प्रदान की गई। परियोजना की कुल लागत रु 7,500 थी।

विधियाँ

रोटरी क्लब रानीपेट - मंडल 3231

10 लाख रूपए की लागत से सरकारी छात्र उच्च माध्यमिक स्कूल में एक नया शौचालय खण्ड स्थापित किया गया। थिरुमलाई धर्मार्थ संस्था द्वारा इस स्वच्छता सुविधा को प्रायोजित किया गया और रोटेरियनों एवं प्रायाजकों की उपस्थिति में स्थानीय विधायक द्वारा इसका उद्घाटन किया गया।

रोटरी क्लब बोकारो - मंडल 3250

झारखंड के विभिन्न स्कूलों के कक्षा 9 और 12 के विद्यार्थियों के लिए एक तीन-दिवसीय RYLA शिविर आयोजित किया गया। कार्यक्रम से लगभग 100 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

रोटरी क्लब जबलपुर साउथ - मंडल 3261

क्लब ने आदित्य बिरला सेंटर फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव्स एंड रूरल डेवलपमेंट की अध्यक्ष राजश्री बिरला का उनके द्वारा किये गए परोपकारी कार्यों के लिए, एवं रोटरी के पोलियो अभियान को समर्थन देने के लिए उनका अभिनन्दन किया।

रोटरी क्लब कलकत्ता साउथ सिटी - मंडल 3291

भवानीपुर के खालसा इंग्लिश हाई स्कूल में इसके इंटरैक्ट क्लब के सहयोग से पौधारोपण किया गया। साबुज स्पोर्टिंग क्लब, बेहाला, के सहयोग से दुर्गा पूजा के पहले 200 से अधिक बच्चों एवं विधवाओं को नए कपड़े प्रदान किये गए।

रोटरी क्लब बुतवाल - मंडल 3292

बाढ़ पीड़ितों के लिए सहायता राशी एकत्रित करने के लिए ट्रैफिक चौक पर सड़क पर गायन कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह सहायता राशी मादी नगरपालिका के पास नारायणगढ़ गाँव के लगभग 40 बाढ़ प्रभावित परिवारों को लाभान्वित करेगी। क्लब के सदस्यों ने बाढ़ से प्रभावित ग्रामीणों को राहत सामग्री वितरित की।

वी मुत्तुकुमारण द्वारा संकलित
एल गुनाशेकरण द्वारा रुपांकन

LBW

उत्साही क्लर्क और अड़ियल बाबू

टी सी ए श्रीनिवास राघवन

हाल ही में, व्हाट्सएप पर एक मैसेज बड़ी चर्चा में रहा, उस पत्र की सभी प्रतियों के साथ, जिसमें एक सरकारी अधिकारी ने, अपने अधीनस्थ को, वो माचिस वापस लौटाने के लिए लिखा था, जो उस कर्मचारी ने उधार ली थी। ऐसा लगता है कि माचिस नहीं होने की वजह से, मच्छर भगाने वाली कॉइल को नहीं जलाया जा सका और जिसकी वजह से हर व्यक्ति परेशान रहा था। बाद में इस पत्र के लेखक ने बताया कि वह केवल शासकीय पत्र लेखन कला का अभ्यास कर रहे थे। यह ज्ञात नहीं सका है कि लेने वाले ने माचिस वापस लौटाई या नहीं ।

इस प्रकरण ने मुझे बी के नेहरू, खउड, जवाहरलाल नेहरू के चचेरे भाई, अमेरिका में भारतीय राजदूत, असम के राज्यपाल द्वारा सुनाए गए एक अन्य प्रकरण की याद ताज़ा कर दी। बी के नेहरू, जब वे एक कनिष्ठ अधिकारी थे, उन्होंने एक सरकारी तार भेजा था, जिसके अंत में, अपने पिता के स्वास्थ्य की जानकारी लेने के लिए, उन्होंने एक लाइन भी लिख दी थी।

एक उत्साही क्लर्क ने उन्हें अंतिम पंक्ति का भुगतान करने के लिए लिखा क्योंकि यह निजी थी। हालांकि यह राशि बहुत छोटी थी पर नेहरू ने इसे देने से इनकार कर दिया, क्लर्क ने वापस जवाब दिया, नेहरू ने फिर प्रतिक्रिया दी और कुछ ही वर्षों में यह फाइल छह इंच से ज़्यादा मोटी हो गई। भगवान जाने इस बेतुके पत्राचार पर कितने घंटे और करदाताओं के कितने पैसे बर्बाद किये गये थे।

उस समय की एक कहानी (सम्भवत: असत्य) और है, एक अधिकारी के बारे में, जिसे यह सुनिश्चित

मुझे डीडीए से एक नोटिस मिला, जिसमें मुझे 'कारण' बताने के लिए कहा गया कि क्यों न बेडरूम और बाथरूम के बीच का नया दरवाजा ढहा दिया जाए।

करने के लिए कहा गया था कि मंदिर में प्रवेश करने से पहले, लोग अपने जूते निकाल लें । एक दिन एक आदमी नंगे पैर, बिना जूते पहने आया लेकिन अधिकारी ने उसे मंदिर में प्रवेश करने से रोक दिया और कहा, कि नियमों के अनुसार जूतों को 'निकाले जाने' की आवश्यकता होती है, उस से कोई फर्क नहीं पड़ता कि व्यक्ति ने जूते पहने हुए हैं या नहीं।

मेरे साथ भी, एक बार अजीब वाक़या हुआ। करीब चालीस साल पहले, जब मैंने अपनी ज़िंदगी की शुरुआत, बेहद कम तनख्वाह पर, पत्रकार के रूप में की, तो मेरे पिताजी ने मेरे रहने के लिए एक डीडीए फ्लैट खरीद दिया था। उसमें हमने पाया कि एक बेडरूम से कोई दरवाजा बाथरूम में नहीं खुलता, जबकि वो बिलकुल नज़दीक था। मैंने उन दोनों के बीच की दीवार के हिस्से को थोड़ा तोड़ा और एक दरवाज़ा लगा दिया।

फिर, जब मैं और मेरी पत्नी उसमें रहने गए और फर्नीचर को दीवारों के साथ सटाने की कोशिश की तो हमने पाया की दीवार टेढ़ी व तिरछी है। इसलिए, पहले तो मैंने फर्नीचर को मापा, यह देखने के लिए कि रास्ते में कोई टूट फूट होने से फर्नीचर को किसी तरह का नुकसान तो नहीं हुआ, लेकिन वे ठीक थे। फिर मैंने दीवारों की जाँच की और पाया कि उनमें से तो कोई भी दीवार 90 डिग्री पर नहीं थी। वे सभी कोण से बाहर थी।

इस सन्दर्भ में मैंने डीडीए को इसकी शिकायत करते हुए एक पत्र लिखा। कुछ हफ्ते बाद, डीडीए से एक जीप में चार व्यक्ति आए, उन्होंने दीवारों को मापा और कहा कि कुछ भी गलत नहीं था, सभी दीवारें ठीक थीं। इस स्थिति में कुछ भी नहीं किया जा सकता है। लेकिन कहानी यहां ख़त्म नहीं होती। कुछ महीने बाद मुझे डीडीए से एक नोटिस मिला, जिसमें मुझे 'कारण' बताने के लिए कहा गया कि क्यों न बेडरूम और बाथरूम के बीच का नया दरवाजा 'ढहा दिया जाए'।

मैंने उन्हें वापस लिखा और पूछा, मुझे बताएं तो सही कि दीवार के छेद को कैसे ध्वस्त करते हैं।

1980 के दशक में, जब विदेश मंत्रालय में एक लिपिक को दस्तावेजों पर 'टॉप सीक्रेट' की मोहर लगाने का काम दिया गया, तो दस्तावेजों के साथ साथ उसने प्रेस विज्ञप्तियों पर भी 'टॉप सीक्रेट' की मोहर लगा दी थी, नतीज़ा ये हुआ कि एक हफ्ते तक मंत्रालय से कोई प्रेस विज्ञप्ति जारी नहीं हुई।

उसके बाद, फिर कोई जवाब नहीं आया । लेकिन कई सालों के बाद मेरी किसी अन्य व्यक्ति से मुलाकात हुई, जिसने बताया कि डीडीए ने उसे अपने घर के बाहर विकसित बगीचे को, ध्वस्त करने की धमकी का नोटिस भेजा था!

हालांकि मेरी पसंदीदा कहानी, 1980 के दशक की है, जब विदेश मंत्रालय में एक लिपिक को दस्तावेजों पर 'टॉप सीक्रेट' की मोहर लगाने का काम दिया गया, तो दस्तावेजों के साथ साथ उसने प्रेस विज्ञप्तियों पर भी 'टॉप सीक्रेट' की मोहर लगा दी थी, नतीज़ा ये हुआ कि एक हफ्ते तक मंत्रालय से कोई प्रेस विज्ञप्ति जारी नहीं हुई। सब कुछ विधिवत फाइल किया जा रहा था।

फरीदाबाद में सरकार द्वारा संचालित एक शव दाह स्थल पर स्पष्ट रूप से नोटिस लगा दिया गया कि आधार संख्या के बिना संस्कार की अनुमति नहीं दी जाएगी। बाद में, महापौर ने स्पष्ट किया कि ऐसा कोई नियम था ही नहीं। लेकिन कुछ महीने पहले, केंद्र सरकार ने एक परिपत्र जारी किया था कि मृत्यु प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए आधार संख्या आवश्यक है। लेकिन यदि रिश्तेदार को मृतक का आधार कार्ड नहीं मिलता है, तो उसे अपने आधार नंबर के साथ एक घोषणा पत्र देना होगा कि उसे मृतक की आधार संख्या याद नहीं है! बाद में सरकार ने स्पष्ट किया कि यह अनिवार्य नहीं था। खैर, अभी भी कोई नहीं जानता कि सही स्थिति क्या है। ■

संक्षेप में

हैंडबैग्स को उड़ाते हुए ड्रोन

मिलान फैशन वीक में, डोल्चे एंड गब्बाना के लक्ज़री हैंडबैग्स का प्रचार करने के लिए ड्रोन का इस्तेमाल किया गया, कैटवाक पर उन्हें उड़ाकर और केंड्रिक लमार के संगीत पर उन्हें कमरे भर में मंडराते हुए।

अरमानी की स्कूल यूनिफार्म

टोक्यो भले ही फैशन के प्रति उसके नागरिकों के झुकाव के लिए जाना जाता हो, लेकिन एक सार्वजनिक स्कूल द्वारा बच्चों के लिए जॉर्जियो अरमानी की यूनिफार्म निर्धारित करना फैशन के नाम पर अति है और देश भर में इसकी आलोचना हो रही है। ताईमे एलीमेंट्री स्कूल ने नई यूनिफार्म को लागू करने की योजना की घोषणा की है। इस यूनिफार्म में एक लंबी आस्तीन वाला शर्ट, नेवी-ब्लू जैकेट, मिलते हुए रंग का स्कर्ट या ट्राउसर और एक टोपी शामिल है। पूरे सेट की कीमत 80,000 येन है।

पुटिन के लिए कोई स्मार्टफ़ोन नहीं

कुर्चातोव न्यूक्लीअर रिसर्च इंस्टिट्यूट के प्रमुख मिखाइल कोवाल्चुक के एक कमेंट, जिसमें उन्होंने कहा था कि सबके पास स्मार्टफ़ोन है, का जवाब देते हुए रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने खुलासा किया कि उनके पास कोई स्मार्टफ़ोन नहीं है। पुतिन पहले इस बात को मान चुके है कि ऑनलाइन मौजूद सामग्रियों के डर से उन्हें सोशल मीडिया पर जुड़ने में कोई रूचि नहीं है, और 2005 तक तो, उनके पास मोबाइल फ़ोन भी नहीं था! वह उनके प्रधानमंत्री दिमित्री मेडवेडेव के विपरीत है, जो अक्सर एक आईफ़ोन के साथ देखे जाते है और तो और वह उनके आधिकारिक इंस्टाग्राम पेज पर अपनी तस्वीरें भी अपलोड करते है।

डेरडेविल्स में एक नेपाली क्रिकेटर

संदीप लामिच्छाने नेपाल के पहले IPL खिलाड़ी बन गए है। इस 17 वर्षीय लेग ब्रेक गेंदबाज को IPL नीलामी में डेल्ही डेरडेविल्स द्वारा रु 20 लाख में खरीदा गया। इस खिलाड़ी को पहली बार ऑस्ट्रेलियाई स्किपर माइकल क्लार्क द्वारा हांगकांग में खेले जा रहे T20 मैच में देखा गया था, जहाँ क्लार्क टीम के गुरु थे। नेपाल 1996 में ICC का सह सदस्य बना और वर्ष 2013 से अंतर्राष्ट्रीय मैचों में हिस्सा ले रहा है।

एक भारतीयकृत बीटिंग रिट्रीट

चार दिवसीय गणतंत्र दिवस समारोह के समापन को चिन्हांकित करते हुए, 29 जनवरी को दिल्ली के विजय चौक पर भारतीयकृत धुनों ने बीटिंग रिट्रीट समारोह को चिन्हित किया। रक्षा मंत्रालय ने पूर्व में यह घोषणा की थी कि इस वर्ष भारतीय धुनें बीटिंग रिट्रीट की शोभा बढ़ाएंगी। पूर्व सैनिकों ने आश्चर्य एवं निराशा प्रकट की क्योंकि उन्हें लगा कि इस अवसर से जुड़ी गंभीरता के साथ समझौता हुआ है और बदलाव के नाम पर यह एक सांस्कृतिक प्रदर्शन भर रह गया है।

जयश्री द्वारा संकलित, एस कृष्णप्रथीश द्वारा रूपरेखा

Regn. No. TN/CCN/359/2018-2020 Licensed to post without prepayment No.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2018-2020
Registered with Registrar of News Papers for India TNHIN/2001/5271 Rotary Samachar Published on 1st of every month
Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹35